चमत्कार
ज्योतिष

श्रीः

# चमत्कारज्योतिष

( तात्कालिकप्रश्नदर्शकग्रन्थ )

## हिन्दीटीकासहित

★

लखीमपुर ( खीरी ) निवासी ज्योतिर्वित् पण्डित
नारायणप्रसाद मिश्र लिखित.

---

मुद्रक व प्रकाशक–
**गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,**
मालिक "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम्–प्रेस,
कल्याण – बम्बई.

---

संवत् २०४३, सन् १९८६

---

श्रीः

# प्रस्तावना ।

★

सिद्धान्तसंहिताहोरारूपस्कन्धत्रयात्मकम् ।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ।। १ ।।

बहुत दिनोंसे हमारा विचार था कि, ज्योतिषका कोई ऐसा ग्रन्थ लिखा जाय कि जिसमें "ज्योतिषशास्त्रसम्बन्धी चमत्कार दर्शाये जावें" इसीसे हमने इस ग्रन्थ में अनेक तात्कालिक प्रश्नोंद्वारा अनेक चमत्कारिक प्रश्न लिखे हैं और जहांतक हो सका ग्रहभाव और लग्नपरसे सब प्रश्न लिखे हैं. तथा मूकप्रश्न कहनेकी बहुत उत्तम रीति लिखी है. एवं नष्टजन्म कुण्डली बनानेकी रीतिभी लिखी है. इस ग्रन्थ में ज्योतिषशास्त्रके अनेकानेक उत्तमोत्तम ग्रन्थोंके आधारसे मूकप्रश्न आदि अनेक चमत्कारिक प्रश्न भाषाटीकासहित लिखे हैं.

प्रत्येक ज्योतिषी पंडितको 'चमत्कारज्योतिष' ग्रन्थ अवश्य अपने पास रखना और विद्यार्थियोंको अवश्य पढा देना चाहिये.

यदि इसमें मनुष्यधर्मानुसार कुछ भूलचूक होगई हो उसको सुधारकर पंडितजन हमको सूचित करें, तो हम पुनरावृत्तिमें उस भूलको सुधार लेंगे यह हमारी प्रार्थना है. शुभमित्यलम् ।

सत्कृपाभाजन–

**पं. नारायणप्रसाद सीताराम,**

**"पुस्तकालयाध्यक्ष" लखीमपुर खीरी.**

श्री:

# चमत्कारज्योतिष–विषयानुक्रमणिका

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता

श्री:

# चमत्कार-ज्योतिष

## तन्त्र

### ( तात्कालिक प्रश्न )

★

#### अथ मङ्गलाचरणम्

प्रणिपत्य रविं देवं नारायणप्रसन्नधीः ।।
वक्ष्ये तात्कालिकं प्रश्नं चमत्कृतिकरं परम् ।। १ ।।

रविदेव (सूर्यनारायण) को प्रणाम करके प्रसन्न बुद्धिवाला मैं नारायण प्रसाद मिश्र, विशेष चमत्कार करनेवाला तात्कालिक प्रश्न वर्णन करूंगा ।। १ ।।

#### अथ ग्रन्थारम्भः

यस्मिन्काले दिवसनिशयोःपृच्छको यच्च पृच्छेत्
तस्माल्लग्नं गणितकुशलैश्छायया तोययंत्रैः ।।
स्पष्टं कार्य्यं जननसमये प्रश्नकाले विवाहे
लग्नात्खेटादशुभशुभदं प्रोच्यते तत्फलं हि ।। २ ।।

जिस समय दिन अथवा रात्रिमें प्रश्नकर्ता अर्थात् पूंछनेवाला जो प्रश्न करे अर्थात् पूंछे, उस समय गणितमें प्रवीण पंडितोंको छायासे और जलयंत्र द्वारा समय जानकर लग्न स्पष्ट कर लेना चाहिये । जन्म समयमें, प्रश्नकालमें और विवाहमें लग्नसे और ग्रहोंसे अशुभ और शुभ देनेवाले उस फलको कहना चाहिये ।। २ ।।

देशभेदं ग्रहगणितं जातकमवलोक्य निरवशेषमपि ।
यःकथयति शुभाशुभं तस्य न मिथ्या[1] भवेद्वाणी ।। ३ ।।

देश भेद, ग्रह गणित, जातक और अन्य अवशेष भी बातोंको देखकर जो पंडित शुभ-अशुभ करता है उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती है ।। ३ ।।

---

१ जो पुरुष सत्यवादी होता है, उसके हृदयमें सत्यका प्रकाश होता है, इस कारण उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती । प्रश्न समय वक्ताके अन्तःकरणमें जो उत्तर भासमान हो, उस उत्तरको प्रकाश कर दे यह सत्य होगा । इससीसे—

सभाप्रश्नं न वक्तव्यं कुटिलानां तथा निशि ।
नाऽपराह्णेऽपि सुप्तानां त्वरितान्न वदेत्कदा ॥ ४ ॥

सभामें प्रश्न नहीं कहना चाहिये और कपटी अथवा खोटे मनुष्योंके प्रति, तथा रात्रि समयमें और अपराह्णकाल अर्थात् दिनके पिछले भागमें भी शयन करनेवालोंके प्रति एवं तुरंत उत्तर चाहनेवालोंके प्रति प्रश्न नहीं कहना चाहिये ॥ ४ ॥

फलपुष्पयुतो यो हि दैवज्ञं परिपृच्छति ।
तस्यैव कथयेत्प्रश्नं सत्यं भवति नान्यथा ॥ ५ ॥

जो प्रश्नकर्ता फल फूल लेकर दैवज्ञके समीप जाकर प्रश्न करता है, उसीके प्रति प्रश्न कहे तो सत्य होता है, अन्यथा नहीं । अर्थात् यथाशक्ति कुछ लेकर प्रश्न करनेपर प्रश्नोत्तर ठीक होता है, इसमें असत्य नहीं है ॥ ५ ॥

## अथ प्रश्नकथने योग्यानयोग्यानाह

क्षुद्रपाखण्डधूर्तेषु श्रद्धाहीनोपहासके ।
ज्ञानं न तथ्यतामेति यदि शंभुः स्वयं वदेत् ॥ ६ ॥

अब प्रश्नकथनमें योग्य अयोग्योंको कहते हैं—नीच, पाखंडी और धूर्त, श्रद्धाहीन, हँसी करनेवाला इनके प्रति प्रश्नज्ञान यथार्थ नहीं होता है, यदि शंभुजी स्वयं कहें ॥ ६ ॥

भक्तार्तदीनवदने दैवज्ञो न दिशेद्यदि ।
विफलं भवति ज्ञानं तस्मात्तेभ्यः सदा वदेत् ॥ ७ ॥

भक्त, पीडित, दीनमुख इनके प्रति दैवज्ञ यदि प्रश्न न कहे तो ज्ञान विफल हो जाता है इस कारण इनके प्रति सदा प्रश्न कहे ॥ ७ ॥

सम्पूज्य खचरान् साङ्गान् दैवज्ञं स्वक्रियापरम् ।
श्रद्धायुक्तः पूर्णपाणिः पृच्छेदव्याकुलः पुमान् ॥ ८ ॥

अंगोंसहित ग्रहोंका पूजन करके अपनी क्रियामें कुशल दैवज्ञसे श्रद्धासहित हाथमें यथाशक्ति द्रव्यादि लेकर सावधान होकर पुरुष प्रश्न करे ॥ ८ ॥

स्वस्थचित्तः सकृत्पृच्छेदार्तः पूर्वाह्ण एव तत् ।
सत्यं स्यादपराह्णे तु मध्यरात्रौ तु निष्फलम् ॥ ९ ॥

---

—पंडितको सत्यवादी और मितभाषी होना चाहिये. यह बात हमारे अनुभव में आ चुकी है, जिसकी इच्छा हो परीक्षा कर लेवे ।

पीडित पुरुष पूर्वाह्णसमयमेंभी सावधानमन होकर एकवार प्रश्न करे तो प्रश्न सत्य होता है. अपराह्णकालमें और आधीरातके समय प्रश्न निष्फल होता है ॥ ९ ॥

### प्रष्टुर्दिङ्नियमः

प्राची प्रतीची माहेशी कौबेरी दिक् शुभावहा ।
अप्राची राक्षसी दुष्टा शून्याग्नेयी च मारुती ॥ १० ॥

प्रश्न करनेमें दिशाका नियम कहते हैं—पूर्व, पश्चिम, ईशान, उत्तर इन दिशाओंमें प्रश्न शुभ जानना और नैर्ऋत्य, दक्षिण दिशा प्रश्नमें अशुभ जानना । तथा अग्निकोण और वायव्यदिशा शून्य जानना ॥ १० ॥

### अथ प्रश्नकर्तृनियमः

धृत्वा करे पुष्पफलादिकं च शांतं सुबोधं गणकं च कृत्वा ।
तं पूजयित्वा ग्रहराशिचक्रं प्रष्टा स्वकार्यं विनिवेदयेद्वै ॥ ११॥

प्रश्नकर्ता पुरुष हाथमें फूल आदिक लेकर सुबोध गणक (ज्योतिषी) को शान्त करके और उसके द्वारा ग्रह राशिचक्रका पूजन कराके अपना कार्य निवेदन करे ॥ ११ ॥

### अथ प्रश्ने शुभदर्शनम्

दृङ्मनसोः प्रीतिकरं प्रश्नेषु दर्शनं यदि श्रवणम् ।
माङ्गल्यं द्रव्याणां भवति शुभं विनिर्दिशेत्तत्र ॥ १२ ॥

दृष्टि और मनको प्रसन्न करनेवाले अर्थात् मनोहर वस्तुओंका दर्शन अथवा श्रवण प्रश्नसमयमें हों और मंगल पदार्थोंका देखना-सुनना शुभदायक कहा है ॥ १२ ॥

हयगजवृषहंसादेः पृच्छाकाले यदा रुतं भवति ।
दर्शनमथ वै तेषां शुभदं विनिर्दिशेत्तत्र ॥ १३ ॥

प्रश्नसमयमें घोडा, हाथी, बैल, हंसआदिका शब्द जब होता है अथवा इनका दर्शन प्रश्मसमयमें होता है तो शुभ फल कहा है, ऐसा जानना ॥ १३ ॥

### अथांगस्पर्शात्फलम्

अङ्गुष्ठकर्णवदनस्तनहस्तकेश—
कटचंसपादतलगुह्य शिरांसि गण्डम् ।

ओष्ठं च संस्पृशति वक्ति शुभानि यद्वा
प्रष्टा तदा कलयति ध्रुवमिष्टसिद्धिम् ॥ १४ ॥

अंगूठा, कान, मुख, स्तन, हाथ, केश, कटि, चरणतलुआ, गुदा, शिर, कपोल, होठ इन अंगोंको स्पर्श करता हुआ जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करता है तो निश्चय करके मनोकामना सिद्ध होती है ॥ १४ ॥

स्पृशेच्छिरोवक्त्रविलोचनश्रुतिं प्राप्नोतिधान्यास्बरहेमपूर्वकम् ।
ग्रीवाहनुस्कन्धयुगं यदा नरो दुःखात्तदा तस्य विलब्धिमादिशेत् ॥१५॥

यदि प्रश्नकर्ता शिर, मुख, नेत्र, कान इनको स्पर्श करता हुआ प्रश्न करता है तो धान्य, वस्त्र, सुवर्ण आदि लाभ होता है और जो ग्रीवा (गर्दन), ठोंडी, दोनों कंधे इनको स्पर्श करता हुआ जो मनुष्य प्रश्न करता है, तो उसको कष्टसे लाभ होता है ॥ १५ ॥

नाभिं सकुक्षिं स्पृशतोऽर्थसिद्धिं गुल्फांघ्रिजानु स्पृशतोऽतिदुःखम् ।
जंघां कटिं लिंगमिह स्पृशेद्यो लभेत कार्यं सुलभं सुयोगात् ॥ १६ ॥

नाभि (तोंदी), कुक्ष (कोख) स्पर्श करता हुआ प्रश्न कर्ता अर्थ सिद्धिको प्राप्त होता है, और गुल्फ (घुटना) चरण, जंघा, कटि, लिंग इनको स्पर्श करता हुआ जो प्रश्न करता है- उसका कार्य सुयोगसे सुलभ होता है ॥ १६ ॥

कचस्पृशेऽतिप्रहांतं फलादिस्पर्शे शुभं वै तृणवह्निशेषम् ।
न सिद्धिमान् कर्दमकाष्ठवस्त्रस्पृक् खेटपीडां लभते तथाधिम् ॥१७॥

केशस्पर्श करता हुआ प्रश्नकर्ता प्रश्न करता है तो अति दुःख प्राप्त होता है, फल आदि स्पर्श करना अच्छा होता है । तृण (तिनका) अग्निशेष (अधजली काष्ठ) स्पर्श करते हुए प्रश्न करनेसे कार्य सिद्धि नहीं होती है तथा कर्दम (कीच) काष्ठ, वस्त्र इनको स्पर्श करनेसे ग्रह पीडा तथा आधि (चिन्ता) होती है ॥ १७ ॥

शृङ्गारकामान्नकभाण्डयोश्च सिद्धिप्रदःशून्यगृहे श्मशाने ।
काष्ठेऽतिशुष्केऽधमदेशके वा चेत्प्रश्नकर्ता न हि तस्य सिद्धिः ॥१८॥

शृंगार किये हुए अथवा शृंगारके स्थानमें और भोजन पदार्थ भरे हुए पात्र जहाँ रक्खे हों ऐसे स्थानमें प्रश्न करनेवाला सिद्धिको प्राप्त होता है । और शून्य (सूने) घरमें, श्मशानमें तथा बहुत सूखे काष्ठपर बैठकर, अधम देश अर्थात् बुरी जगह प्रश्न करनेवालेकी कार्य सिद्धि नहीं होती है ॥ १८ ॥

देवालये पुण्यनदीतटे च दिव्यस्थले वक्ति तदाशुभं स्यात् ।
दिक्षुस्थितश्चेत्सुखसिद्धिलाभो विदिक्षुनस्याच्छुभमत्रलाभः ॥ १९ ॥

देवस्थानमें, पवित्र नदीके तट, मनोहर स्थानमें प्रश्न करनेवाला शुभ फल-को प्राप्त होता है. दिशा (पूर्व आदि) में स्थित होकर प्रश्न करे तो सुख सिद्धि लाभ हो, और विदिशा (अग्निकोण आदि) में स्थित होकर प्रश्न करनेसे अच्छा लाभ नहीं होता है ॥ १९ ॥

सुवर्णमुक्ताफलपुष्पधूपैः फलैः समभ्यर्च्य सदा भचक्रम् ।
ततो नराणां प्रवदेत्समग्रं शुभाशुभाख्यं हि फलं मुनीन्द्रैः ॥२०॥

[१]सोना, मोती, फूल, धूप फल इनसे सदैव ग्रहचक्रका पूजन करके मनुष्योंके शुभाशुभ फलको भलीभांति वर्णन करे, ऐसा मुनिजनोंने कहा है ॥ २० ॥

यज्जातके निगदितं भुवि मानवानां तत्प्राश्निकेऽपि सकलं कथयंति तज्ज्ञाः
प्रश्नोऽपि जन्मसदृशो भवति प्रभेदः
प्रश्नस्य चाऽत्र जननस्य न किञ्चिदस्ति ॥ २१ ॥

पृथ्वीमंडलमें मनुष्योंके जातकसमयमें जो शुभाशुभ फल कहा है, उस सम्पूर्ण फलको ज्योतिषशास्त्रके जाननेवाले ज्योतिषी लोग प्रश्नसमयमें भी कहते हैं। सबही आचार्योंके मतमें प्रश्न भी जन्मसमान होता है इस शास्त्रमें प्रश्न और जन्मका कुछ भी भेद नहीं है ॥ २१ ॥

सूर्यादि ग्रह और मेषआदि राशियोंकी संज्ञा जातकग्रन्थोंमें भली-भाँति वर्णन की गई हैं, कि जिस संज्ञाके द्वारा प्रश्नफलका ज्ञान पूर्ण रीतिसे हो सकता है। यहां ग्रह और राशियोंकी कुछ संज्ञा लिखते हैं। जैसे–

### अथ ग्रहाणां नामानि

रविश्चन्द्रो महीसूनुर्बुधश्चाङ्गिरसः सुतः ।
शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुश्चेति नव ग्रहाः ॥ २२ ॥

रवि (सूर्य), चन्द्र, मंगल, वुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु ये नवग्रह हैं ॥ २२ ॥

---

१ आजकल प्रायः मनुष्य प्रश्न करनेको ज्योतिषीके प्रति छूछे हाथ आया करते हैं और घंटों बकाते हैं; इसीसे पंडित भी विनाविचारे अंट संट उत्तर दे देता है और इसीसे परिश्रम भी नहीं करता ।

## अथ ग्रहाणां ज्ञातिः

**द्विजौ सुरेज्यासुरराजपूज्यौ मूर्धाभिषिक्तौ रविभूमिपुत्रौ।**
**वैश्यः सुधांशुर्हिमरश्मिपुत्रः शूद्रान्त्यजौ राहुशनैश्चरौ स्तः॥२३॥**

बृहस्पति, शुक्र ब्राह्मण, सूर्य-मंगल क्षत्रिय, चंद्र, वैश्य और बुध, शूद्र तथा राहु, शनि अन्त्यज जाति हैं ॥ २३ ॥

## अथ ग्रहाणां द्विपदादिसंज्ञाः

**द्विपादपद्मौ गुरुभार्गवौ स्तः चतुष्पदौ भास्करभूमिपुत्रौ।**
**स्तः पक्षिणौ सूर्यसुतेन्दुपुत्रौ सरीसृपौ चन्द्रविधुंतुदौ च॥२४॥**

गुरु-शुक्रकी द्विपद संज्ञा है, रवि-मंगलकी चतुष्पद संज्ञा है शनि-बुधकी पक्षी संज्ञा है, चंद्र और राहुकी अपद संज्ञा है ॥ २४ ॥

## अथ ग्रहाणां नपुंसकादिसंज्ञाः

**नपुंसकौ मन्दहिमांशुपुत्रौ स्त्रीखेचरौ भार्गवशीतभानू।**
**शेषा ग्रहाः स्युः पुरुषाभिधानाः चरस्थिरद्व्यंगमिहौजराशौ॥२५॥**

शनि बुधकी नपुंसक संज्ञा है, और शुक्र चंद्रकी स्त्री संज्ञा है. शेषग्रह (सूर्य मंगल गुरु) पुरुषसंज्ञक कहे हैं, मेष आदि १२ राशियां चरस्थिरद्विःस्वभावसंज्ञक होती हैं. जैसे—मेष, कर्क, तुला, मकर चरसंज्ञक, वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ स्थिर संज्ञक और मिथुन, कन्या, धन, मीन द्विःस्वभाव संज्ञक जानना ॥ २५ ॥

## अथ ग्रहाणां दृष्टिः

**स्यात्पंचमर्क्षं नवमं तृतीयं लाभं ग्रहः पश्यति मित्रदृष्ट्या।**
**कार्यस्य सिद्ध्यै खलु पृच्छकानां शुभं सुहृद्व्योमचरो विशेषात्॥२६॥**

जिस राशिपर जो ग्रह स्थित हो उस राशिसे पांचवीं राशि और नवीं, तिसरी और ग्यारहवीं राशिको मित्र दृष्टिसे देखता है, निश्चय करके पृच्छकोंको शुभ ग्रह विशेष करके मित्रग्रहशुभफलद्वारा कार्य सिद्धिके अर्थ जानना ॥ २६ ॥

**निजात्कलत्रं दशमं चतुर्थं स्वस्थानभं पश्यति शत्रुदृष्ट्या।**
**पापो रिपुर्व्योमचरो विशेषात् कार्यार्थनाशाय स पृच्छकानाम्॥२७॥**

अपने स्थानसे पहले, सातवें, दशवें, चौथे स्थानवाली राशिको शत्रु दृष्टिसे देखता है वहां पृच्छकोंको पापग्रह और शत्रुग्रह विशेष करके मनोकामनाके नाशके अर्थ जानना ॥ २७ ॥

जामित्रभे दृष्टिफलं समग्रं स्वपादहीनं चतुरस्रयोश्च ।
त्रिकोणयोर्दृष्टिफलार्द्धमाहुर्दुश्चिक्यसंज्ञे दशमे च पादम् ।।२८।।

अपनी राशिसे सातवीं राशिमें सब ग्रह सम्पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं । चौथी आठवीं राशिमें चौथाई कम अर्थात् तीन चरणोंसे देखते हैं । और त्रिकोण अर्थात् नववीं पांचवीं राशिमें आधी दृष्टिसे देखते हैं, तथा तीसरी दशवीं राशिमें चौथाई दृष्टिसे देखते हैं ।। २८ ।।

अथ ग्रहाणां सौम्यपापसंज्ञाः

विधुंतुदक्ष्मासुतपद्मबन्धु- क्षीणेन्दुभास्वत्तनयाश्च पापाः ।
सदा शुभाः शेषखगा निरुक्ताः पापैर्युतः सोमसुतोऽपि पापः।।२९।।

राहु, मंगल, सूर्य, क्षीणचन्द्रमा, शनि ये पापग्रह हैं । और शेष पूर्ण चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र ये शुभग्रह हैं । पापग्रहोंसे युक्त बुध भी पापग्रहसंज्ञक होता है ।। २९ ।।

मासे तु शुक्ले प्रतिपत्प्रवृत्तेः
सदा शशी मध्यबलो दशाहम् ।
श्रेष्ठो द्वितीयेऽल्पबलस्तृतीये
सौम्यैस्तु दृष्टो बलवान् सदैव ।। ३० ।।

महीनामें शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे दश दिन अर्थात् दशमी पर्यन्त चन्द्रमा सदा महाबली होता है और फिर दश दिन अर्थात् कृष्णपक्ष पंचमी पर्यन्त पूर्णबली होता है, फिर तिसरी आवृत्तिमें अर्थात् कृष्ण अमावास्यापर्यन्त अल्पबली जानना. शुभग्रहोंकी दृष्टिवाला चंद्रमा सदैव बलवान् होता है ।। ३० ।।

अथ ग्रहाणां वर्णाः

रक्तौ भवेतां ग्रहराजभौमौ श्वेतौ सदा शीतगुभार्गवौ स्तः ।
हरिद्बुधः पीतरुचिः सुरेज्यः कृष्णप्रभः सूर्यसुतस्तमश्च ।। ३१ ।।

सूर्य मंगल रक्तवर्ण हैं, चन्द्र शुक्र सदा श्वेतवर्ण हैं, बुध हरे रंगका हैं, बृहस्पति पीले रंगवाला ग्रह है, और शनि राहु कृष्णवर्ण हैं ।। ३१ ।।

अथ ग्रहाणां जलचरादिसंज्ञास्तथा ग्रहाणां दिङ्मुखम्

हिमांशुशुक्रौ किल तोययातौ ज्ञवाक्पती ग्रामचरौ च शेषाः ।
वनेचराःपूर्वमुखौ सितार्कौ तमःकुजौ चंद्रशनीज्ञजीवौ ।। ३२ ।।

चन्द्र, शुक्र जलचर हैं, बुध गुरु ग्रामचर संज्ञक हैं, शेष सूर्य मंगल शनि वनचर हैं. शुक्र सूर्य पूर्वमुखवाले हैं, राहु मंगल दक्षिणमुखवाले हैं, चन्द्र शनि पश्चिम मुखवाले हैं, बुध गुरु उत्तर मुखवाले ग्रह हैं ।। ३२ ।।

## अथ ग्रहाणामवलोकनम्

तिर्यग्दृशौ भार्गवचन्द्रपुत्रौ समेक्षणौ चन्द्रसुरेशपूज्यौ ।
व्योमेक्षणौ भास्करमेदिनीजावधोदृशौ राहुशनी क्रमेण ।। ३३ ।।

शुक्र बुध तिरछी दृष्टिवाले हैं, चन्द्र गुरु समान दृष्टिवाले हैं अर्थात् सन्मुख देखनेवाले हैं, सूर्य मंगल आकाशकी ओर देखनेवाले हैं, राहु शनि नीचे की ओर देखनेवाले हैं ।। ३३ ।।

## अथ ग्रहाणां कालबलम्

मध्याह्नसत्वौ रविभूमिपुत्रौ तथाऽपराह्ले शशलक्ष्मशुक्रौ
सन्ध्याबलौ भानुजसैंहिकेयौ प्रभातके जीवबुधौ क्रमेण ।। ३४ ।।

सूर्य मंगल मध्याह्नबली हैं, तथा चन्द्र शुक्र अपराह्नबली हैं, शनि राहु सन्ध्यासमय बली हैं, गुरु, बुध प्रातःकालमें बली हैं ।। ३४ ।।

सूर्यावनीजौ चतुरस्रमूर्ती स्थूलो विधुः खण्डतमः सितश्च ।
तौ वर्तुलौ सौम्यसुरेशपूज्यौ दीर्घौ सदाभास्करिसैंहिकेयौ ।।३५।।

सूर्य मंगल चौकोन मूर्तिवाले हैं, चन्द्र स्थूल है, शुक्र खंडित है, बुध गुरु गोल हैं, शनि राहु सदा दीर्घाकार हैं ।। ३५ ।।

## अथ ग्रहणां दिङ्निर्णयः

सूर्यः सितः क्ष्मातनयस्तमार्की प्राभाकरश्चन्द्रसुतो मतीशः ।
दिशामधीशाः क्रमतो भवन्ति नष्टादिदिग्ज्ञानविधौ सदैव।।३६।।

सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, चन्द्र, बुध, गुरु ये क्रमसे पूर्व आदि दिशाओंके स्वामी हैं. जैसे—सूर्य पूर्वका, शुक्र अग्निकोणका, मंगल दक्षिण दिशाका स्वामी• इत्यादि ।। ३६ ।।

क्रूराक्रांतः क्रूरयुक् क्रूरदृष्टः त्वस्तं यातश्चाभिभूतः सशत्रुः ।
एवं खेटस्तैर्विनष्टाभिधानः प्रोक्तो धीरैर्गर्भचिन्तादिकेषु।।३७।।

पापग्रहसे आक्रान्त, पापग्रहसे युक्त, पापग्रहसे दृष्ट, अस्तंगत, शत्रुके साथ ऐसा ग्रह विनष्टफलवाला पंडित जनोंने गर्भचिन्ता आदिमें कहा है ।। ३७ ।।

### अथ ग्रहाणां ह्रस्वादिसंज्ञाः

प्रद्योतनेन्दुभृगुभूमिसुताश्च ह्रस्वाः
मध्यो बुधोऽसितगुरू च तमः सुदीर्घः ।
खेटाद्बदेद्बलयुतादथ तस्कराणां
जात्यादिकं च सहसा हृतनष्टकाले ।। ३८ ।।

सूर्य, चन्द्र, शुक्र मंगल ये ग्रह ह्रस्व हैं । बुध, शनि, गुरु मध्य अर्थात् सम हैं, और राहु दीर्घ है । ग्रहसे बल करके चोरोंकी जाति आदि और आकार, सहसा हरण हुई वस्तुकी खोजके निमित्त नष्ट कालमें विचार करे ।। ३८ ।।

### अथ ग्रहाणां पित्तादिप्रकृतिः

पित्तं प्रभाकरक्ष्माजौ श्लेष्मा भार्गवशीतगू ।
ज्ञगुरू समधातू च पवनौ राहुमन्दगौ ।। ३९ ।।

सूर्य मंगल पित्त धातुको प्रगट करते हैं, शुक्र चन्द्र कफको प्रगट करते हैं, बुध गुरु समधातुको प्रगट करते हैं, राहु शनि ये दोनों वातप्रकृतिको प्रगट करते हैं ।। ३९ ।।

### अथ ग्रहाणां रसज्ञानम्

कुजार्कौ कटुकौ जीवो मधुरस्तुवरो बुधः ।
क्षाराम्लौ चन्द्रभृगुजौ तीक्ष्णौ सर्पार्कनन्दनौ ।। ४० ।।

मंगल, सूर्य कडुए स्वभावके हैं, बृहस्पति मधुर स्भाववाला है, बुध कषाय-प्रकृति हरंके स्वादवाला है, चन्द्र क्षार प्रकृतिवाला और शुक्र अम्लप्रकृतिवाला राहु शनि दोनों तीक्ष्ण प्रकृतिवाले हैं । जैसे, लग्नमें मंगल सूर्य हों वा पूर्ण दृष्टिवाले हों तो उसकी कडुए रसमें प्रीति हो, ऐसा फल बुद्धि अनुसार सर्वत्र कहना चाहिये. भोजन संबन्धी प्रश्नमें ग्रहोंके बलानुसार प्रश्नफल कहे ।। ४० ।।

### अथ ग्रहाणां बालाद्यवस्थाः

युवा कुजः शिशुः सौम्यः शशिशुक्रौच मध्यमौ ।
मन्दमार्तण्डदेवेज्यफणिनः स्थविरा ग्रहाः ।। ४१ ।।

मंगल तरुण अवस्थावाला है, बुध बालक है, चन्द्र, शुक्र मध्य अवस्थावाले हैं, शनि सूर्य गुरु राहु ये ग्रह वृद्ध अवस्थावाले हैं ।। ४१ ।।

यहां चोरकी अवस्था जाननेके निमित्त यह संज्ञा कही है. जैसे–किसीने प्रश्न किया कि–'वस्तु चुरानेवालेकी कितनी अवस्था है ?' तो प्रश्नलग्नसे चौथे स्थानमें जो मेष वा वृश्चिक राशि हो अथवा मंगलकी दृष्टि हो वा मंगल युक्त हो तो चोरकी तरुण अवस्था कहना, इसी प्रकार बुधसे बारह वर्षतकका बालक कहना इत्यादि ।।

### तथाऽन्यप्रकारः

**बालो रसांशैरसमे प्रदिष्ट–**
**स्ततः कुमारो हि युवाऽथ वृद्धः ।**
**मृतः क्रमादुत्क्रमतः समर्क्षे**
**बालाद्यवस्था कथिता ग्रहाणाम् ।। ४२ ।।**

विषमराशि (मे. मि. सि. तु. ध. कुं.) में छै छै अंशोंकरके क्रमसे बाल, कुमार, युवा, वृद्धा, मृता ये पांच अवस्था ग्रहोंकी जानना. अर्थात् विषमराशिके छै अंशतक बाल, फिर १२ अंशतक कुमार, १८ तक युवा, २४ तक वृद्धा, ३० तक मृता और समराशिमें विपरीतक्रमसे अवस्था जानना. अर्थात् छै अंशतक मृता, १२ अंशतक वृद्धा, फिर १८ तक युवा, फिर २४ तक कुमार, फिर ३० तक बाल अवस्था कहना ।। ४२ ।।

**फलं तुं किंचिद्वितनोति बाल–**
**श्चार्द्धं कुमारो यतते च पुंसाम् ।**
**युवा समग्रं खचरोऽथ वृद्धः**
**फलं च दुष्टं मरणं मृताख्यः ।। ४३ ।।**

बालअवस्थावाला ग्रह कुछ फल करता है, कुमार, आधा फल करता है, युवा पूर्ण फल करता है, वृद्ध दुष्ट फल करता है, मृत मरणप्राय फल करता है ।। ४३ ।।

**भौममन्दार्कभोगीन्द्राः [illegible] दुःखदा नृणाम् ।**
**ज्ञगुरुश्वेतकिरणशुक्राः सुखकराः सदा ।। ४४ ।।**

मंगल, शनि, सूर्य, भोगीन्द्र (राहु) ये अपने स्वभावसेही मनुष्योंको दुःख देनेवाले हैं. बुध, गुरु, चन्द्र शुक्र ये अपने स्वभावसे सदा मनुष्योंको सुखकर हैं । ४४ ।।

### अथ ग्रहधातवः

शुक्रे चन्द्रे भवेद्रौप्यं बुधे स्वर्णमुदाहृतम् ।
गुरौ रत्नयुतं हेम सूर्ये मौक्तिकमुच्यते ॥ ४५ ॥
भौमे त्रपु शनौ लोहं राहावस्थीनि कीर्तयेत् ।
धातोर्विनिश्चये ज्ञाते विशेषोऽस्मादुदाहृतः ॥ ४६ ॥

तथा–

मुक्ता रवौ स्याद्रजतं सितेन्दू रत्नौघमीज्येकनकं च सौम्ये ।
भवेत्त्रपुक्ष्मातनयेऽर्कपुत्रे लोहे तमस्यस्थिगणः प्रदिष्टः ॥ ४७ ॥

शुक्र–चन्द्रसे चांदी, बुधसे सुवर्ण, बृहस्पतिसे रत्नसहित सोना, सूर्यसे मोती, मंगलसे रांगा, सीसा, शनिसे लोहा, राहुसे हड्डी, हाथी-दांत आदि. लग्नमें जो ग्रह हो वा देखता हो तो धातु कहना ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ तथा सूर्य बली होनेसे मोती, शुक्र चन्द्रसे चांदी, गुरुसे रत्नसमूह, बुधसे सुवर्ण. मंगलसे रांग और शीशा, शनिसे लोहा राहुसे हड्डियां हाथीदांतआदि कहना. ये धातुके निश्चय करनेमें विशेष विचार करना ॥ ४७ ॥

### अथ ग्रहाणां निवासस्थानम्

शुक्रे चन्द्रे जलाधारो देवतावसतिर्गुरौ ।
रवौ चतुष्पदस्थान इष्टकानिचयो बुधे ॥ ४८ ॥
दग्धस्थानं कुजे प्रोक्तं शनौ राहौ च बाह्यभूः ।
अमीभिर्हिबुकस्थाने नष्टभूमिं विलोकयेत् ॥ ४९ ॥

शुक्र चन्द्रसे कूप तडाग आदि जलाधार जानना, गुरुसे देवस्थान जानना, रविसे चतुष्पादस्थान गोशाला घोडशाला आदि स्थान जानना, बुधसे ईंटोंसे चुना हुआ स्थान जानना, मंगलसे दग्धस्थान कहना, शनि राहुसे बाहरकी भूमि वन पर्वत आदि स्थान कहना, इस प्रकार चौथे स्थानसे नष्टवस्तुका स्थान जानना. जैसे चौथे शुक्र चन्द्र हो अथवा चौथे स्थानको पूर्णदृष्टिसे देखते हों तो जलमें नष्ट वस्तु कहना, अथवा लग्नस्वामी चौथे स्थानमें हो वा देखता हो अथवा अन्यबली ग्रहयुक्त दृष्ट हो तो उस ग्रहके अनुसार वासस्थान कहना ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

अथ ग्रहाणां देवताः

देवा ग्रहाणां जलवह्निविष्णु-
प्रजापतिस्कन्दमहेन्द्रदेव्यः ।
चन्द्रार्कचान्द्रयर्कजभौमजीव-
शुक्राश्रयर्क्षेषु यजेत शश्वत् ॥ ५० ॥

चन्द्रमाका देवता जल, सूर्यका अग्नि, बुधका विष्णु, शनिका प्रजापति (ब्रह्मा), मंगलका स्कन्द (स्वामिकार्तिकेय), गुरुका महेन्द्र, शुक्रका देवी और आश्रयराशियोंमें निरन्तर बतलावे ॥ ५० ॥

प्रश्नलग्ने तु बलवान् यो ग्रहः समवस्थितः ।
तद्देवतायाः पर्यायनामतश्चौरनामकम् ॥ ५१ ॥

प्रश्नलग्नमें जो बलवान् ग्रह स्थित हो उस ग्रहके देवताके पर्यायवाची नामसे चोरका नाम बतलावे ॥ ५१ ॥

अथ ग्रहाणां सत्त्वादिगुणाः

तामसिकौ कुजसौरौ राजसिकौ भार्गवः शशिसुतश्च ।
जीवशशिभास्कराःसात्त्विका ग्रहप्रकृतयो नृणाम् ॥ ५२ ॥

मंगल, शनि तमोगुणी हैं. शुक्र और बुध रजोगुणी हैं. गुरु, चन्द्र, सूर्य तमोगुणी हैं, ग्रहानुसार मनुष्योंकी प्रकृति कहे ॥ ५२ ॥

सत्त्वं रजस्तमो वा त्रिंशांशे यस्य भास्करस्तादृक् ॥ ५३ ॥

जिसके त्रिंशांशमें सूर्य हो उसके अनुसार सत, रज वा तमोगुण वर्णन करे ॥ ५३ ॥

यः सात्त्विकस्तस्य दया स्थिरत्वं
सत्यार्जवं ब्राह्मणदेवभक्तिः ।
रजोऽधिकः काव्यकलावृतस्त्री-
संसक्तचित्तः पुरुषोऽतिशूरः ॥ ५४ ॥

जो सतोगुणी होता है उसके मनमें दयाका निवास रहता है, सत्यका संचार, कोमलता, सरलता, ब्राह्मण और देवताओंमें भक्ति होती है, रजोगुणी पुरुष काव्य-कलामें निपुण, स्त्रीमें आसक्तचित्त और अतिशूर होता है ॥ ५४ ॥

तमोऽधिको वंचयिता परेषां
मूर्खोऽलसः क्रोधपरोऽतिनिद्रः ॥ ५५ ॥

अधिक तमोगुणी पुरुष दूसरोंको ठगनेवाला मूर्ख, आलसी, महाक्रोधी, बहुत सोनेवाला होता है ॥ ५५ ॥

अथ ग्रहाणां वस्त्राणि

स्थूलतंतुकृतं सूर्ये नवं चन्द्रेऽग्निना हृतम् ।
भौमे बुधेऽबुना क्लिन्नं न जीर्णं न नवं गुरौ ॥ ५६ ॥
दृढे शुक्रे शनौ जीर्णं प्रयोजनमथोच्यते ।
सूतिकायाश्च चौरादेर्वस्त्रज्ञाने स्मृतं बुधैः ॥ ५७ ॥

सूर्य बलवान् होनेसे मोटा कपड़ा, चन्द्रमासे नवीन, मंगलसे अग्निदग्ध, बुधसे जलकरके भीगा, बृहस्पतिसे न पुराना न नया, शुक्रसे दृढ, शनिसे जीर्ण, प्रसूतास्त्री और चोर आदिके वस्त्र जाननेमें पंडितोंकरके विचार कहा है ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

अथ ग्रहाणाम् ऋतवः

शनिशुक्राङ्गारकेषु रविचन्द्रबुधेषु च ।
जीवे क्रमेण विज्ञेयाः शिशिराद्याःषडर्तवः ॥ ५८ ॥

शनिसे शिशिर, शुक्रसे वसन्त, मंगलसे ग्रीष्म, रविसे वर्षा, चन्द्रसे शरद् बुधसे भी शरद्, गुरुसे हेमंत ये शिशिर आदि छै ऋतुओंके जाननेका क्रम कहा है ॥ ५८ ॥

प्रयोजनं नष्टसंज्ञे जातके च तथा पुनः ।
हृतनष्टादिचिंतायामृतुकाल प्रदर्शकम् ॥ ५९ ॥
लग्ने ग्रहवशाद्वाङ्गे बहुषु बलवद्गृहात् ।
द्वयोरभावे द्रेष्काणपतेर्योगादृतुः स्मृतः ॥ ६० ॥

किसी वस्तुके खोजानेपर तथा बालक उत्पन्न होनेपर खोई वस्तु आर नष्ट वस्तुकी चिंतामें ऋतुकालको देखे यही प्रयोजन है ॥ ५९ ॥ लग्नमें ग्रहके वशसे अथवा लग्नमें बलवान् ग्रहके योगसे बहुत ग्रह हों तो जो ग्रह बली हो उसके द्वारा तथा लग्नमें कोई ग्रह न हों वा बहुतग्रहोंमें समान बल होनेसे द्रेष्काणस्वामी करके ऋतु कहना ॥ ६० ॥

### अथ ग्रहाणां कालबलम्

अयनश्च मुहूर्तश्च दिवसश्च ऋतुस्तथा ।
मासः पक्षश्च वर्षश्च कालः सूर्यादिषु स्मृतः ॥ ६१ ॥
लग्नांशकपतितुल्यः कालो लग्नो दिनांशसमतुल्यः ।
वक्तव्यो रिपुविजये गर्भाधानेऽथ कार्यसंयोगे ॥ ६२ ॥

सूर्यसे अयन, चन्द्रसे मुहूर्त, मंगलसे दिन, तथा बुधसे ऋतु, गुरुसे महीना, शुक्रसे पक्ष, शनिसे वर्षप्रमाण कहा है ॥६१॥ लग्ननवांशोंके स्वामीके समान समय अथवा लग्नमें जो नवांशसंख्या हो उसके तुल्य कहना, शत्रुके जीतनेमें, गर्भाधानमें अथवा कार्यके संयोगमें अयनआदि काल सूर्यआदि ग्रहानुसार कहे ॥ ६२ ॥

### अथ ग्रहमैत्री

मित्राणि सूर्यस्य कुजेन्दुजीवाः सपत्नकौ शुक्रशनी समो ज्ञः ।
चन्द्रस्य मित्रे रविसोमपुत्रौ नारिः समा मन्दकुजेज्यशुक्राः ॥६३॥

सूर्यके मंगल चंद्र गुरु मित्र हैं, शुक्र शनि शत्रु हैं. बुध सम है, और चन्द्रका सूर्य बुध मित्र. शत्रु कोई नहीं और शनि मंगल गुरु शुक्र सम हैं ॥ ६३ ॥

कुजस्य मित्राणि रवीन्दुजीवाः
समौ सितार्कौ विधुजो रिपुश्च ।
मित्रेऽर्कशुक्रौ कुजजीवमन्दाः
समाः सपत्नौ जलजो बुधस्य ॥ ६४ ॥

मंगलसे सूर्य चन्द्र गुरु मित्र, और शुक्र शनि सम तथा बुध शत्रु जानना, बुधका सूर्य शुक्र मित्र; और मंगल गुरु शनि सम तथा चन्द्रमा शत्रु जानना ॥ ६४ ॥

सूर्येन्दुभौमाः सुहृदः समोऽर्किः
शत्रू गुरोः स्तः कविचन्द्रपुत्रौ ।
मित्रेऽर्किसौम्यौ च समौ कुजेज्यौ
शुक्रस्य शत्रू रविशीतरश्मी ॥ ६५ ॥
मित्रे शनेः स्तः कविचन्द्रपुत्रौ
गुरुः समोर्कारहिमांशु शत्र ।

राहोस्तु मित्राणि कविज्ञमन्दाः
सूर्येन्दुभौमा रिपवः समोऽन्यः ।। ६६ ।।
केतोः समौ जीवबुधौ विपक्षौ
शुक्रार्कजातौ सुहृदोऽन्यखेटाः ।
उक्तानि मित्राणि समास्तथैव
तथैव वेद्यानितरान्सपत्नान् ।। ६७ ।।

गुरुके सूर्य चन्द्र मंगल मित्र और शनि सम, तथा शुक्र वुध सम हैं. शुक्रके शनि वुध मित्र, मंगल गुरु सम, सूर्य चन्द्र शत्रु हैं ।। ६५ ।। शनिके शुक्र वुध मित्र और गुरु सम, तथा सूर्य मंगल चन्द्र शत्रु हैं. राहुके शुक्र वुध शनि मित्र और सूर्य चन्द्र मंगल शत्रु तथा गुरु सम हैं ।। ६६ ।। केतुके गुरु वुध सम, शुक्र शनि शत्रु और सूर्य चन्द्र मंगल मित्र हैं ।। ये मित्र, सम तथा शत्रु वर्णन किये हैं सो जानना ।। ६७ ।।

## अथ राशीनां दिग्

चापाजसिंहा वृषनक्रकन्या नृयुक्तुलोपांत्यकराशयश्च ।
मीनालिकर्काः क्रमतो दिशाना मैन्द्र्यादिकानामचलो विभागे।।६८।।

धन मेष सिंह पूर्व दिशामें और वृष मकर कन्या दक्षिण दिशामें मिथुन तुला कुंभ पश्चिम दिशामें मीन वृश्चिक कर्क उत्तर दिशामें वास करनेवाली राशि हैं ।। ६८ ।।

## अथ राशीनां वर्णाः

रक्तश्च श्वेतश्च हरित्समाभः
श्वेतारुणः पाण्डुविचित्रवर्णः ।
सितः पिशङ्गः कपिलश्च कर्बु–
र्बभ्रूर्मलाढ्या रुचयश्च मेषात् ।। ६९ ।।

मेष रक्तवर्ण, वृष श्वेत, मिथुन हरित् वर्ण, कर्क श्वेतरक्त, सिंह पांडुवर्ण, कन्या विचित्रवर्ग, तुला श्वेतवर्ण, वृश्चिक पीतवर्ण, धनु कपिलवर्ण, मकर कवरे रंग, कुंभ न्यौलेके समान रंग, मीन कुछ मैले रंग जानना ।। ६९ ।।

मेषे रक्तं वृषे श्वेतं मिथुने नीलवर्णकम् ।
कर्कटे श्वेतरक्तं च सिंहे धूम्रं च पांडुरम् ।। ७० ।।

न्या विचित्रवर्णा च तुले श्वेतं प्रकीर्तितम् ।
वृश्चिके पीतवर्णं च पिशंगो धनुषस्तथा ॥ ७१ ॥
मकरे कर्बुरं पर्णं बभ्रुवर्णं घटस्तथा ।
मीने मलिनवर्णं च राशिवर्णमुदाहृतम् ॥ ७२ ॥

मेष लालरंग, वृष श्वेतरंग, मिथुन नीलवर्ण, कर्क सफेद, लालरंग, सिंह धुवांके समान धुमैलारंग और पांडुवर्ण ॥ ७० ॥ कन्या विचित्रवर्ण अर्थात् अनेक रंग, तुला सफेदरंग, वृश्चिक पीलेरंग, धनु पीलेरंग ॥ ७१ ॥ मकर कबरे रंग कुंभ न्यौलेकासा रंग, मीन मलिन वर्ण यह राशियोंका वर्ण कहा है ॥ ७२ ॥

अथ राशीनां ह्रस्वादिसंज्ञाः

मेषद्वयं कुंभयुगं च ह्रस्वं
दीर्घं तु चापद्वययुग्मयुग्मम् ।
सिंहादितो वेदमितानि भानि
समानि चोक्तानि सदैव धीरैः ॥ ७३ ॥

मेष वृष कुंभ मीन ह्रस्व हैं धनु मकर मिथुन कर्क दीर्घ हैं सिंह कन्या तुला वृश्चिक सम हैं, ऐसा पंडितोंने वर्णन किया है ॥ ७३ ॥

अथ राशीनामंगविभागाः

मेषः शिरोऽथ वदनं वृषभो विधातु–
र्वक्षो भवेन्नृमिथुनं हृदयं कुलीरः
सिंहस्तथोदरमथो युवतिः कटिश्च
बस्तिस्तुलाभृदथ मेहनमष्टमं स्यात् ॥ ७४ ॥
धन्वी चास्योरुयुगलं मकरो जानुद्वयं भवति ।
जंघाद्वितयं कुंभः पादौ मत्स्यद्वयं चेति ॥ ७५ ॥

मेष शिर, वृष मुख, मिथुन वक्षःस्थल, कर्क हृदय, सिंह उदर, कन्या कटि, तुला बस्ति, वृश्चिक मेहन, धनु दोनों उरू, मकर दोनों जानु, कुंभ दोनों जंघा, मीन दोनों चरण जानना ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ काल पुरुषके अंगमें ये राशि विभाग हैं. प्रसव समयमें ग्रहोंके योगसे पुष्ट और अपुष्ट कहना ॥

### अथ राशीनां प्लवत्वदिङ्नियमाः

मेषवृश्चिकयोर्याम्ये प्लवत्वं वृषतूलयोः।
आग्नेय्यां चोत्तरे कन्यायुग्मयो प्लवनं स्मृतम् ॥ ७६ ॥
कर्कराशेश्च वायव्यां प्लवत्वं सिंहमेन्द्रदिक्।
पश्चिमे नक्रघटयोरीशान्यां धनुर्मीनयोः ॥ ७७ ॥
प्रयोजनं च हृतनष्टादिकार्यविचिन्तने।
तद्दिशि गमनं ज्ञेयं चौरादेरिति निश्चयः ॥ ७८ ॥

मेष वृश्चिककी दक्षिण दिशा प्लवत्व संज्ञक जानना, वृष तुलाकी प्लवत्व दिशा आग्नेय जानना, कन्या मिथुनकी प्लवत्व दिशा उत्तर है ॥ ७६ ॥ कर्क राशिकी वायव्य दिशा, सिंहकी पूर्व दिशा प्लवत्व संज्ञक है, मकर कुंभकी पश्चिम दिशा, धनु मीनकी ईशान दिशा ॥ ७७ ॥ इस प्लवत्व दिशाका प्रयोजन खोई हुई वस्तु आदिके विचारमें और चोर आदिके जाननेमें निश्चय करना, कि "नष्ट वस्तु किस दिशामें है, और चोर अथवा चोरीकी वस्तु किस दिशामें प्राप्त है" ॥ ७८ ॥

### अथाभीष्टकालानयनम्

तत्रादौ मध्यप्रभा

खाग्नियुक्तपलभादिनोनिता
रात्रिमानघटिकादिभिर्हता।
भाजिता दिवसमाननाडिभि-
र्जायते निखिलदेशकप्रभा ॥ ७९ ॥

स्वस्वदेशीयपलभामध्ये त्रिंशत् संयोज्य दिनमानघटिकाहीनं कृत्वा रात्रिमानघटिकाभिर्गुणयित्वा पुनः दिनमानघटिकाभिर्भागे हृते संपूर्ण देशीयमध्यप्रभा भवति ॥ ७९ ॥

छाया तु मध्यप्रभया विहीना
सप्ताहता षट्शर ५६ संयुता च।
तथाहरेत्षट्शरनिघ्नमान-
दलंगतैष्या घटिका दिनस्य ॥ ८० ॥

छायाद्वादशांगुलकृतशंकोः छायांगुलसंख्यामध्ये मध्यप्रभांकं विहाय शेषं सप्तगुणं कृत्वा तन्मध्ये षट्पंचाशन्मेलयित्वा तया पूर्वानीतसंख्यया षट्पंचाशद्-गुणयित्वा दिनमानदलस्य भागो देयः। शेषं पूर्वदले गतघटिका विज्ञेया ॥ ८० ॥

अपने देशके पलभामें तीस जोडकर दिनमान घटी घटाय रात्रिमान घटीसे गुणकर फिर दिनमान घटीसे भाग देनेसे सब देशीय मध्यप्रभा होती है अर्थात् अपने अपने देशकी मध्यप्रभा जाननेका यही क्रम है। बारह अंगुलके शंकुकी छायामें मध्यप्रभांक घटाय शेषको सात गुणाकर उनमें छप्पन मिलाय छप्पनसे पूर्वानीत संख्याको गुणाकर दिनार्द्धसे भाग देवे; शेष दिनके पूर्वदलमें गत घटी जानिये।

### अथ प्रत्येकसंक्रांतिषु मध्यप्रभामाह

षट् ६ बाणा ५ ब्धि ४ गुण ३ द्वि २ चन्द्र १–<br>
गगनैः० कं १ द्वि २ त्रि ३ चाब्धी ४ षु ५ भिः।<br>
संख्यातानकरादितोदिनमणेः स्युर्मध्यपादाः क्रमात् ॥ ८१ ॥

शंकुप्रभामध्यभया विहीना<br>
सप्ता ७ हता सागरनाग ८४ युक्ता।<br>
तथाहरेदभ्रदिशा १०० विनिघ्न–<br>
मानार्द्धमध्ये घटिका गतैष्या ॥ ८२ ॥

पूर्वोक्त दोनों श्लोकोंका अर्थ स्पष्ट है। पहले श्लोकमें मकरआदि संक्रांतियोंके मध्यप्रभाके अंक हैं. दूसरे श्लोकमें दिनकी गत शेषघटी जाननेका क्रम है ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

पादप्रभा नगयुतारहिता च मेषात् षट्स्वेंदुना<br>
त्रि ३ युग ४ बाण ५ शरा ५ ब्धि ४ रामैः ३।<br>
स्याद्भाजको दिनदलस्य नगा ७ हतस्य<br>
पूर्वे गताः स्युरपरे दिनशेषनाड्यः ॥ ८३ ॥

अपनी पादछायाकी संख्यामें सात मिलाय मेषसे कन्याकी संक्रांतिपर्यन्त पूर्वसंख्यामें एक कम करना, उसके आगे तुलासे मीनपर्यन्त संक्रान्ति हो तो उसका क्षेपक पूर्वसंख्यामें कम करना. जैसे तुलाकी संक्रांति हो तो ३ वृश्चिक हो तो ४ धनु हो तो ५ मकर हो तो ५ कुंभ हो तो ४ मीन हो तो ३ इस प्रमाणसे कम करके

फिर दिनार्धको सात गुणाकर पूर्व अंकोंसे भाग लेवे जो भागांक आवेव ह पूर्वाह्ण प्रश्न हो तो दिन चढा और पराह्णमें प्रश्न हो तो उतनी घडी दिन रहा है ऐसा कहना उदाहरण—वैशाख कृष्ण ५ रविवारको मध्याह्णसे पहले प्रश्न है, पादछाया १० उसमें ७ मिलाये तो १७ हुये संक्रांति मीन है तो ३ कम किये, रहे १४ दिनार्ध घटी १५ को सातसे गुणा हुए, १०५ में भाग लिया तो लब्ध ७, शेष ७ तो ७ घटी, ७ पल दिन आया ॥ ८३ ॥

अथ सामान्यतः अंगुल्योपरि इष्टकालः

तर्जनीमेरुमादाय सप्तांगुलवसुन्धरा ।
आद्या तिस्रघटी प्रोक्ता शेषाद् द्वे द्वे प्रकीर्तिता ॥ ८४ ॥

दोनों हाथकी आठ अंगुलीकी हथेली बराबर करके तर्जनीके दो पर्व खडे करना, उसकी छाया पहली अंगुलीपर पडे और पूर्वाह्ण होवे तो बारह घडी दिन आया है; अपराह्ण हो तो बारह घडी दिन रह गया है, ऐसा क्रमसे आगे दो दो घडीके अन्तरसे सात अंगुलीपर्यंत जानना ॥ ८४ ॥

अथ तुरीययंत्रोपरि इष्टकालः

भूगोलयन्त्रस्य तुरीयभागे सूर्यस्य बिम्बोपरि लम्बचिह्ने ।
भागा निरेकां गुणसंगुणाश्च दिनार्धभक्ता घटिका भवन्ति॥८५॥
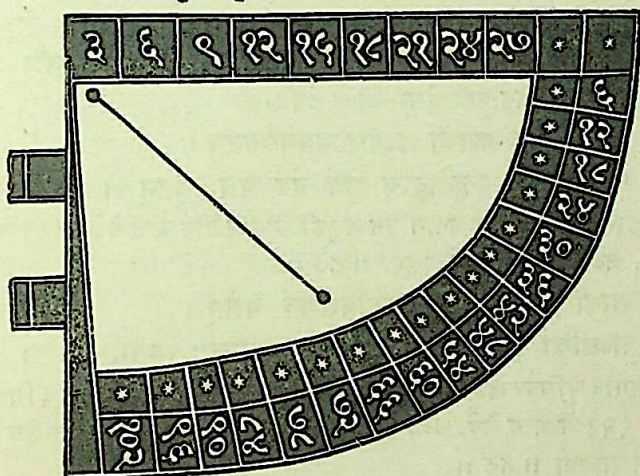
भूगोलयंत्रके तुरीयभागमें सूर्यबिंबके लंबचिह्न जिसके ऊपर हो उस अंकमें एक घटाय तिगुनाकर दिनार्धसे भाग ले. भाग लेनेसे लब्धांक शेष दिन घटी पल जानना. उदाहरण—सूर्यबिंबोपरि चागता भागांका: ६६ निरेका ६५ त्रिगुणा जाता १९५ दिनार्द्धं १४। १७ भाज्य ११७०० भाजकौ ८५७ भाजनाल्लब्धं, १३। १९ शेषदिनमित्यर्थः ॥ ८५ ॥

भागं वारिधिवारिराशिशशिषु १४४ प्राहुर्मृगाद्ये बुधाः।
षट्के बाणकृपीटयोनिविधु १३५ ष्वस्यात्कर्कटाद्ये पुनः ॥
पादैः सप्त ७ भिरन्वितैः प्रथमकं मुक्त्वा निदाद्ये दले।
हित्वैकां घटिकां परे सततं दत्त्वेष्टकालं वदेत् ॥ ८६ ॥

१४४ पर मकर आदि सूर्यकी छै राशि होनेसे और १३५पर कर्कआदि छै सूर्यराशि होनेसे प्रथम पांवको छोडकर सात संख्यासहित नापी हुई पादछायासे भाग लेवे, ऐसा बुधजन कहते हैं, यदि दिनका पूर्वार्द्ध हो तो लब्धमेंसे १ घडी छोडकर और दिनका परार्ध हो लब्ध घडियोंमें एक घडी मिलाय निरन्तर इष्टकाल कहे, सारार्थ यह कि—जो सूर्य उत्तरायण हो तो १४४ के ध्रुवापर और दक्षिणायन हो तो १३५ के ध्रुवापर अपनी नापी हुई पादछायाके पांवोंमें सात ७ मिलाया भाग देवे, यहां पादछायामें पहले पांवको छोड दे जो स्थित होनेके स्थानमें रक्खा था, यदि दिनका पूर्वार्द्ध हो तो लब्ध घडियोंमेंसे घटावे, और परार्ध हो तो १ जोड देवे वह इष्टकाल घडी जानना, दिनके पूर्वार्धसमय इतने घडी दिन चढा, और परार्धे समय इतने घडी दिन रहा ऐसा कहे ॥ ८६ ॥

त्र्यंगुलं शंकु कर्तव्यं छायारामसमन्वितम्।
चतुःषष्ट्या हरेद्भागं शेषं दंडं पलं स्मृतम् ॥ ८७ ॥

तीन अंगुलका शंकु बनाय उस शंकुकी छायामें तीन जोड देवे और चौसठमें भाग दे, लब्ध शेषघटी पल कहना ॥ ८७ ॥

छाया पादरसोपेता एकविंशशतं भजेत्।
लब्धांका घटिका ज्ञेया शेषांका च पलाः स्मृताः ८८ ।

समान भूमिपर खडे होकर अपनी छायाको पायोंसे नापे और उसमें ६ मिलावे, अनन्तर १२१ में भाग लेवे, लब्ध घटी शेष पल दिनके पूर्वपर भागसे गत शेष दिन घटी पल जानना ॥ ८८ ॥

## अथ रात्रौ इष्टकालानयनम्

रविभादस्तभं व्येकं मध्यमं सप्तहीनकम् ।
उद्यद्भं तिथिहीनं वा नखघ्नं नवभाजितम् ।। ८९ ।।

सूर्यनक्षत्रसे अस्तनक्षत्रतक गिनकर एक कम करे वा मध्यनक्षत्रतक गिनकर सात कम करे, तथा उदयनक्षत्रतक पन्द्रह कम करे, बीससे गुणाकर नवका भाग देवे । उदाहरण :—श्रावणकृष्ण १ को सूर्य नक्षत्र आश्लेषा मध्यनक्षत्र मूलतक गिननेसे ११ में सात कम करनेसे रहे अंक ४ वीससे गुणे तो ८० हुये; नवका भाग देनेसे लब्ध ८, शेष ८ को ६० से गुणाकर ९ से भाग लिया तो लब्ध ५३ तो ८ घडी ५३ पल हुए ।। ८९ ।।

### तथाच

सूर्यभान्मौलिभं गण्यं सप्तहीनं तु शेषकम् ।
द्विगुणं च द्विहीनं च गता रात्रिः स्फुटा भवेत् ।। ९० ।।

सूर्यके नक्षत्रसे अपने मस्तकपर नक्षत्रपर्यन्त गिने, फिर उसमें सात घटाव शेषको द्विगुणा कर दो घटा देवे तो शेष-गतरात्रि स्पष्ट हो जाती है ।। ९० ।।

जबतक नक्षत्रोंका स्वरूप नहीं जाने तवतक रात्रिसमय नक्षत्र नहीं जाना जा सकता । सूर्य, चन्द्र और शुक्रको सबही जानते हैं, बृहस्पतितारा पीला होता है और शुक्रसे कुछही छोटा होता है, बुधतारा हरा होता है, शनितारा नीला और चमकीला होता है, मंगल तारा लाल अंगारसदृश होता है । जिस राशिपर जो ग्रह हो उस राशिसम्बन्धी ग्रह ताराके समीप जानकर पहचाने. पंचांग (तिथिपत्र) में देखकर नीचे लिखे अनुसार नक्षत्रज्ञान होना ज्योतिषी पंडितको परमावश्यक है । अश्विनीनक्षत्र घोडाके मुखसमान तीन तारावाला होता है, भरणी नक्षत्र योनिसदृश तीन तारावाला होता है, कृत्तिका क्षुरेके समान ६ नक्षत्रवाला होता है जिसको मीतका पहुंचा कहते हैं, रोहिणी नक्षत्र शकटसमान ५ तारावाला होता है मृगशिरा हरिणके मुखसमान तीन तारे होते हैं जिसको हरिणी (हन्नी) कहते हैं, आर्द्रा नक्षत्र मणिसदृश १ तारा होता है जिसको लोधवा कहते हैं, पुनर्वसु घरके समान ४ तारावाला होता है, पुष्य बाणसमान ३ तारावाला जानना । श्लेषानक्षत्र चक्रसमान ५ तारा वाला है, मघा शालाके समान ५ तारावाला है, पूर्वाफाल्गुनी शय्यासदृश २ तारा वाला है, उत्तराफाल्गुनो पर्यंकसदृश २ तारावाला है, चित्रा

मोतीसमान १ तारावाला है, स्वाती मुंगाके तुल्य १ तारावाला है, विशाखातोरण (वंदनवार) के सदृश ४ तारावाला है, अनुराधा भातके ढेरके समान २ तारावाला है, ज्येष्ठा कुंडलसमान ३ तारावाला है, मूलनक्षत्र सिंहकी पुच्छके समान ११ तारावाला है, पूर्वाषाढा हाथीदांतके तुल्य २ तारवाला है, उत्तराषाढा मंचके समान २ तारावाला है, अभिजित् त्रिकोण ३ तारावाला है, श्रवण तीन चरणसमान ३ तारावाला है धनिष्ठा मृदंगतुल्य ४ तारावाला है, शतभिषा गोलाकार १०० तारावाला है, पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र मंचवत् २ तारावाला है, उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र युगलरूप २ तारावाला है, रेवती नक्षत्र मृदंगसमान ३२ तारे हैं, इस प्रकार नक्षत्रोंके रूपके ज्ञानसे रात्रिज्ञान स्पष्ट होता है.

## अथ आकाशघटी
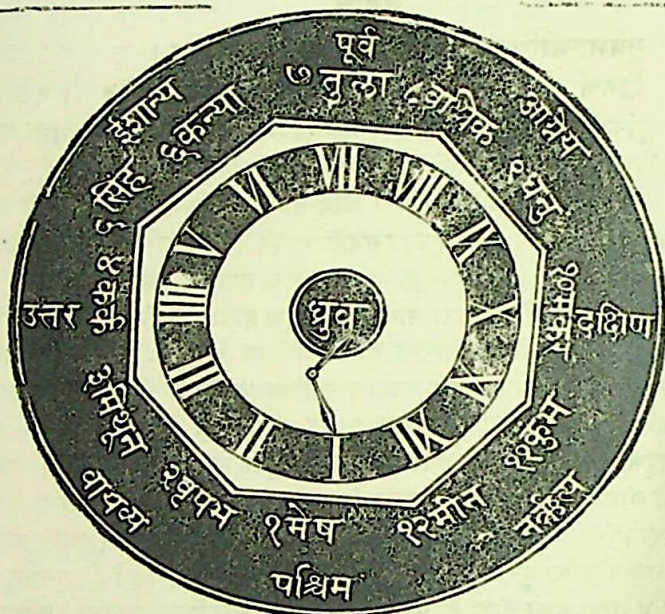
आकाशमें बनीहुई यह खेचरी घटी राशियोंके अनुसार ६० घडीकी है; उत्तर दिशामें ध्रुवसे देखे. ध्रुवके निकट तीन तारा हैं उनको ध्रुवांक कहते हैं, वह

ध्रुवांक जो पश्चिम दिशामें ठीक ठीक हो तो मेषलग्न जानना, वायव्यकोणके पूर्व-भागमें हो तो वृषलग्न जानना, परभागमें होनेसे मिथुनलग्न और उत्तरदिशामें हो तो कर्कलग्न, एवं ईशानकोणके पूर्वभागमें हो तो सिंहलग्न, परभागमें हो तो कन्यालग्न, पूर्वदिशामें हो तो तुलालग्न, आग्निकोणके पूर्व भागमें हो तो वृश्चिक लग्न, परभागमें हो तो धनलग्न, दक्षिण दिशामें हो तो मकर लग्न, नैर्ऋत कोणके पूर्व भागमें हो तो कुंभलग्न, परभागमें हो तो मीन लग्न जानना। फिर ध्रुवांक पश्चिम में हो तो मेषलग्न होती है. इस प्रकार इस आकाश घटीके यथार्थ ज्ञानसे निस्सन्देह लग्न जानी जाती है. जितनी जितनी अपनी राशि छोडे उतनाही लग्नका भुक्त भोग्य जानना. आकाश घटीके अतिरिक्त धूपघडी, वालुका घडी आदि घडियां हैं। जिनसे इष्टकालका यथार्थ ज्ञान होनेसे ठीक ठीक फल मिलता है. सिद्धांतग्रन्थकी रीतिसे दिनमान रात्रिमान और सूर्योदयास्त जाननेमें जो घंटा मिनिट हों,उनमें यदि वर्तमान घटी यंत्रसे अन्तर आवे, तो आश्चर्य नहीं करना, क्योंकि, हमारी घटीसे वर्तमान घटीमें कुछ अन्तर अवश्य है। सूर्य चन्द्रके आश्रयसे लग्नज्ञान विशेष रीतिसे होता है. नक्षत्र ज्ञान अंधेरी रातमें विशेष रीतिसे हो सकता है. हमारेदेश-वासी आधुनिक ज्योतिषी लोग भूगोल और खगोलविषयक बातोंको जाननेमें महा-आलसी हो रहे हैं, इसीसे आजकल यथार्थ फल घटित नहीं होता है. उचित है कि, आलस्यको त्यागकर परिश्रमपूर्वक वर्तमान ग्रन्थोंके अनुसार यथार्थ फल जानने के निमित्त परिश्रम करें और अविश्वासी लोगोंके चित्तमें विश्वास दिलावें कि-'जिससे फलित ग्रन्थोंकी उन्नति हो.' 'आलस्योपहता विद्या।' आलस्य करनेसे विद्या के यथार्थ ज्ञानमें बाधा पडती है। हमने गणित और फलितके सम्बन्धमें एक छोटा सा व्याख्यान अपनी लिखी हुई 'जन्मपत्री प्रदीप' नामक पुस्तकमें लिखा है जिसको पढकर फलित में विश्वास आजाता है सो ठीक ही है।

### अथ दिनरात्रिप्रमाणानयनम्

अयनादिकवासररामहता गगनानलबाणशशांकयुताः।
परिभाजितशून्यरसैर्घटिका मकरादिदिनं कर्कादिनिशा॥९१॥

अयनादिक दिनसंख्याको तीनसे गुणे, उसमें १५३० मिलावे और ६० से भाग देवे तो लब्ध घटी, शेष पल प्रमाण मकर आदिसे गिनने पर दिनमान जानना, कर्क आदि दिन गिननेपर रात्रि मान जानना॥ ९१॥

---

१—नक्षत्र पहचाननेवाले पंडितसे नक्षत्र ज्ञान होता है॥

उदाहरण :—चैत्र शुक्ल १ के दिन दिनमान जानना है तो मकरके अयनसे दिन संख्या ८२ को तीनसे गुणा तो २४६ हुए, इनमें १५३० मिलाए तो १७७६ हुए; इनमें ६० का भाग दिया तो लब्ध २८, शेष ३६, यह २८ घ० ३६ पल दिनमान हुआ. दिनार्ध १४। ४८ पर दिनके १२ घंटा वजा जानना, तो २ घडी ३० पलका १ घंटा होता है और २४ मिनटकी एक घडी, ढाई पलकी १ मिनट जानना. इस क्रमसे ६ बजकर ५ मिनटपर सूर्य उदय और पांच बजकर ५५ मिनटपर सूर्य अस्त जानना. ठीक दोपहरको और ठीक आधीरातको बारह बजते हैं ॥

## अथ चन्द्रोदयास्तज्ञानम्

तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहित सितपक्षविमिश्रम् ।
बाणशशांक१५विभाजितलब्धं प्रतिवासरचन्द्रोदयचास्तम् ॥९२॥

वर्तमान तिथिको रात्रिप्रमाणसे गुणे, कृष्णपक्ष हो तो दो घटावे, शुक्लपक्ष हो तो २ मिलावे और १५ से भाग देवे; जो अंक लब्ध हो उतनी घडीपर कृष्णपक्षमें रात्रिसमय चन्द्रमाका उदय और शुक्लपक्षमें चन्द्रमाका अस्त जानिये ॥ ९२ ॥

उदाहरण:—कृष्णपक्षकी ६ को "कितनी घडी रात्रि व्यतीत हुए चन्द्रमाका उदय होगा" यह जानना है तो ६ को रात्रिप्रमाण घटो ३१ से गुणा तो १८६ इनमें २ घटानेसे १८४ रहे, इसमें १५ का भाग दिया तो लब्ध १२ घडी ४ पल रात्रि गये चन्द्रमाका उदय जानिये। शुक्लपक्षमें २ मिलाया तो १८८ में १५ का भाग दिया तो लब्ध १२ घडी ८ पल रात्रि गये चन्द्रमाका अस्त होगा ऐसा जानना।

इस चमत्कारज्योतिषके चतुर्थ (सिद्धान्त) भागमें सिद्धान्तबातोंको विशेष रीतिसे हम सरल भाषामें उदाहरण सहित लिखेंगे।

## अथ स्थूलरीत्या लग्नज्ञानम्।

उदयाद्या गता नाडचस्तासामर्द्धेन संख्यया।
सूर्यर्क्षाच्च भवेदृक्षं तेन लग्नस्य निर्णयः॥ ९३ ॥

उदयसे जो गत घटी हों उनकी आधी संख्या करके सूर्य नक्षत्रसे गिनकर उस नक्षत्रकी जो राशि हो वही लग्न जानना ॥ ९३ ॥ उदाहरणम्-प्रश्नकाले इष्टघटयः २२ तस्यार्द्धं ११ सूर्यस्वात्यर्क्षचतुर्थ चरणे स्वात्यर्क्षादिकादशं पूर्वाभाद्रपदमभूत् । पूर्वाभाद्रपदाचतुर्थचरणे मीनराशिस्तेन मीनलग्नमिति ज्ञेयम् !

अथ दुर्दिने बहुप्रश्ने वा प्रकारांतरेण लग्नानयनम्

रमंशुबुगुशाश्चंद्रो वर्गेशाः प्रश्नवर्णतः ।
लग्नं तत्र कुजादीनामोजे चौजं समे समम् ।। ९४ ।।
तल्लग्नाद्ग्रहयोगैश्च वक्ष्यमाणैः फलं दिशेत् ।
पृच्छकोच्चारिताङ्केभ्यो लग्नांशस्तत्र कल्पयेत् ।। ९५ ।।

रमंशुबुगुशा इति । अकारादिषोडशस्वराणां वर्गस्य रविः स्वामी । एवं कवर्गस्य कुजः चवर्गस्य शुक्रः । टवर्गस्य बुधः । तवर्गस्य गुरुः । पवर्गस्य शनिः । याद्यष्टाक्षरस्य चन्द्रः । एतत्स्वामिवशेन लग्नं विज्ञेयम् । तत्र विषमाक्षराद्विषमलग्नम् । समाक्षरात्समलग्नम् । तद्यथा–अकारादिषोडशप्रश्नाक्षराणां सिंहलग्नम् कगङानां मेषलग्नम् । खघयोर्वृश्चिकलग्नम् । चजञानां तुलालग्नम् । छझयोर्वृषलग्नम् । टडणानां मिथुनलग्नम् । ठढयोः कन्यालग्नम् । तदनानां धनुर्लग्नम् । थधयोर्मीनलग्नम् । पबमानां कुंभलग्नम् । फभयोर्मकरलग्नम् । याद्यष्टानां कर्कलग्नम् । अत्र पृच्छकस्य मुखनिर्गताद्यक्षरवशेन पूर्वोक्तं लग्नं विज्ञेयम् । कदाचित्प्रश्नलग्नेषु प्रश्नाक्षराणामप्यज्ञाने सांप्रदायिनामियं रीतिः–सूर्योदयान्मध्याह्नपर्यन्तं कस्यचित्पुरुषस्य नाम पृच्छकेन ग्राह्यम् । मध्याह्नादस्तपर्यन्तं कस्यचित्फलस्य नाम ग्राह्यम् ।।

"अवर्गे सिंहलग्नं च कवर्गेमेषवृश्चिकौ ।
चवर्गे यूकवृषभौ टवर्गे युग्मकन्यके ।। १ ।।
तवर्गे धनमीनौ च पवर्गे कुंभनक्रकौ ।
यशवर्गे कर्कटस्य लग्नं शब्दाक्षरैर्वदेत् ।। २ ।।"

तदक्षरवशाल्लग्नं विज्ञाय वक्ष्यमाणयोगैः शुभाशुभं वदेत् । प्रश्नाक्षरसंख्यया लग्नांशा विज्ञेयाः ।। ९४ ।। ९५ ।।

अकार आदि सोलह स्वर अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः इनमें यदि प्रश्नका प्रथम अक्षर हो तो इनका स्वामी सूर्य सो सिंहरासिका स्वामी है अतः सिंहलग्न जानना । क ख ग घ ङ का स्वामी मंगल सो मेष-वृश्चिकका स्वामी तहां विषम अक्षर क ग ङ प्रश्नका आदि अक्षर हो तो विषम मेषलग्न जानना । समाक्षर ख घ हो तो वृश्चिक लग्न जानना । इसी प्रकार व्याख्यामें कही हुई रीतिसे लग्न जानना. कदाचित् प्रश्नलग्न प्रश्नाक्षर न जाना जा सका हो तो यह रीति है कि–

सूर्योदयसे दोपहर-तक प्रश्न हो तो पृच्छकसे किसी पुरुषका नाम ग्रहण कर उसके प्रथमाक्षरद्वारा प्रश्नलग्न जाने, दोपहर उपरांत सूर्यास्तपर्यन्त किसी फलका नाम ग्रहण करे उसके द्वारा लग्न निश्चय कर शुभाशुभ फल कहे. प्रश्नाक्षरोंकी संख्याके अनुसार लग्नके अंश जानिये ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

अथ भावप्रकाशात्प्रश्नावलोकनपदार्थानाह

**रूपलक्षणवर्णानां क्लेशदोषसुखायुषाम् ।**
**वयःप्रमाणजातीनां तनुस्थानान्निरीक्षयेत् ॥ ९६ ॥**

कृष्ण गौर आदि रूप, तिल मशक आदिक लक्षण और ब्राह्मणआदिक वर्ण. क्लेश तथा छल छिद्रादिदोष, स्त्रीपुत्र धन आदि सुख और आयु, बाल कुमार आदि वय (अवस्था) अवस्थाका प्रमाण, ब्राह्मण आदिकजाति ये तनुस्थान से अर्थात पहले घरसे देखे अर्थात् इतनी बातोंका विचार प्रश्नलग्नसे करना चाहिये ॥ ९६ ।

**मणिमुक्ताफलं स्वर्णं रत्नधातुकदम्बकम् ।**
**क्रयाणकार्घसर्वाणि धनस्थानान्निरीक्षयेत् ॥ ९७ ॥**

चन्द्रकान्त आदि मणि, मोती, सुवर्ण और वैडूर्य आदि मणि तथा धातु, कदम्ब लोहआदि सातों धातुओंका समूह क्रयाणक- अर्थात् खरीदना बेचना धान्य आदिकोंका महंगा और सस्तापन ये सब धनस्थान अर्थात् दूसरे घरसे विचारे ॥ ९७॥

**भगिनीभ्रातृभृत्यानां दासकर्मकृतामपि ।**
**कुर्वीत वीक्षणं विद्वान्सम्यग्दुश्चिक्यवेश्मनि ॥ ९८ ॥**

बहिन, भाई, नोकर, टहलुआ, दूत इनका विचार तीसरे स्थानसे विद्वान जन भलीभांति करे ॥ ९८ ॥

**वाटिकाखलकक्षेत्रमहौषधिनिधीनिह ।**
**विवरादिप्रवेशं च पश्येत्पातालतो बुधः ॥ ९९ ॥**

वाटिका (फुलवाडी), खलक (धान्य कूटने और गौर गाहनेका स्थान). क्षेत्र (खेत), महौषधि और निधि (द्रव्यकी खान), विवर (छिद्र) आदि में प्रवेश, होना और सुख ये विचार बुधजन चौथे स्थानसे देखे ॥ ९९ ॥

**गर्भापत्यविनेयानां मंत्रसाधनयोरपि ।**
**विद्याबुद्धिप्रबन्धानां सुतस्थानाद्विनिश्चयः ॥ १०० ॥**

गर्भ, सन्तान, शिष्यआदि, मंत्र साधनविद्या, बुद्धिप्रबन्ध अर्थात् नवीन कविता इत्यादिकोंका पांचवें स्थानसे विचार करना ॥ १०० ॥

**सौरभीरिपुसंग्रामेगवोष्ट्रक्रूरकर्मणाम् ।**
**मातुलातंकशंकानां रिपुस्थानाद्विनिर्णयः ॥ १०१ ॥**

सौरभी (महिषी), शत्रुओंके साथ संग्राम, गौ, बैल, ऊंट, क्रूरकर्म, मामा भय, शंका आदिक इनका निश्चय छठे स्थानसे करे ॥ १०१ ॥

**वाणिज्यं व्यवहारं च विवादं च समं परैः ।**
**गमागमकलत्राणि पश्येत्प्राज्ञः कलत्रतः ॥ १०२ ॥**

वाणिज्य (व्यापार)–खरीदना-वेंचना, व्यवहार (द्रव्यको व्याजपर देना), विवाद (दूसरोंसे झगडा करना) गमागम (जाना आना), कलत्र (स्त्रीसुख), आदिका विचार सातवें भावसे देखे ॥ १०२ ॥

**नद्युत्तारेऽथ वैषम्ये दुर्गे शात्रवसंकटे ।**
**नष्टे दंष्ट्रे रणे व्याधौ छिद्रे छिद्रं निरीक्षयेत् ॥ १०३ ॥**

नदीका उतरना, मार्गकी विषमता, दुर्ग (किला) का तोडना तथा लेना, शत्रुके संकटमें आना अर्थात् वैरीके द्वारा बंध जाना तथा शत्रु संकटसे छूटना, वस्तुका नष्ट होना तथा वस्तुका चोरी जाना, सर्पसे डसना और संग्राम करना अर्थात् युद्ध करना, शरीरमें रोग उत्पन्न होना शाकिनी और भूतादि दोष प्रगट होना इनका विचार आठवें घरसे करना ॥ १०३ ॥

**वापीकूपतडागादिप्रपादेवगृहाणि च ।**
**दीक्षां यात्रां मठं धर्मं धर्मान्निश्चित्य कीर्तयेत् ॥ १०४ ॥**

वावली, कुवाँ, तालाव आदि जलाशय, प्रपा (प्याऊ) देवमन्दिर, दीक्षा, यात्रा, मठ (धर्मशाला आदि), धर्म-सम्बन्धी कर्म इनका विचार नवम स्थानसे करे ॥ १०४ ॥

**राज्ये मुद्रां पुरं पण्यं स्थानं पितृप्रयोजनम् ।**
**वृष्ट्यादिव्योमवृत्तान्तं व्योमस्थानाद्विनिश्चयः ॥ १०५ ॥**

राज्य (पट्टाभिषेकादिक), मुद्रा (राज्यव्यापाररूप), पुर (नगर), पण्य-कार्य (दूकानदारी) और स्थान (निवास आदिक), पितृप्रयोजन (पितृ सम्बन्धी

होमतर्पणादिक), वर्षा आदिक आकाश वृत्तान्त दशम स्थानसे इन सबका विचार करना ॥ १०५ ॥

गजाश्वयानवस्त्राणि सस्यकांचनकन्यकाः ।
विद्वान् विद्यार्थयोर्लाभं लक्षयेल्लाभलग्नतः ॥ १०६ ॥

हाथी, घोडा, पालकी आदि वाहन, वस्त्र, धान्य, सुवर्ण, कन्या, विद्या और धनका लाभ इनको विद्वान् जन लाभ भाव (ग्यारहवें स्थान) से विचारे॥ १०६ ॥

त्यागभोगविवाहेषु दानेष्टकृषिकर्मणि ।
व्ययस्थानेषु सर्वेषु विद्धि विद्वन्! व्ययं व्ययात् ॥ १०७ ॥

त्याग (सुपात्र को देना). भोग (कुटुंबादिकोंके निमित्त धनका खर्च करना,) विवाहमें धर्म सम्बन्धी दान, इच्छानुसार धनका खर्च करना, खेती करना और खर्च, हे पंडित! इन सबका विचार बारहवें घरसे करना ॥ १०७ ॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाभो लग्नं तु कुसुमप्रभम् ।
फलेन सदृशोंऽशश्च भावः स्वादुसमः स्मृतः ॥ १०८ ॥

प्रश्न कालमें चन्द्रमाका बल प्रश्नरूप वृक्षके बीजके समान है और प्रश्नलग्न फूलके तुल्य है और प्रश्न लग्नका नवांशक फलके सदृश है, तथा प्रश्नलग्नका भाव स्वादुवत् कहा है, भाव यह है कि लग्नका जैसा सौम्य असौम्य चर स्थिर अस्तोदयादिक भाव है उसी अनुसार फलका स्वादु जानना ॥ १०८ ॥

अथ स्थानग्रहवशात्सर्वप्रश्नावलोकनम्

सौम्यग्रहैर्नवमपंचमकंटकस्थैः
पापैस्तथाष्टमचतुष्टयवर्जितैश्च ।
सर्वार्थकार्यसुखसिद्धिरभीष्टलाभो
व्यस्तं भवेत्सकलमेव विपर्ययेण ॥ १०९ ॥

नवें पाँचवें और केन्द्रस्थान (१।४।७।१०) में शुभग्रह स्थित हों तथा पापग्रह आठवें और चौथे स्थानमें न हों तो सब मनोकामना सुख सिद्धि अभीष्ट लाभ होता है. इससे विपरीत होवे अर्थात् नवें पांचवें और केंद्रमें शुभ ग्रह न हों और चौथे आठवें पाप ग्रह हों तो विपरीत फल अर्थात् अशुभ फल होता है ॥ १०९ ॥

यस्मिन् भावे भावनाथेन युक्तो
लग्नस्वामी तस्य तस्यार्थवृद्धिः ।

कुर्यान्नित्यं मृत्युनाथेन युक्तो
यस्मिन् यस्मिन् तस्य हानिः सदैव ॥ ११० ॥

जो भाव अपने स्वामीसे युक्त हो और लग्नस्वामी भी साथमें हो तो उस भावसम्बन्धी अर्थकी नित्य वृद्धि कहना और अष्टमभावस्वामीसे जो भावयुक्त हो उस भावकी सदैव हानि होती है ऐसा कहना ॥ ११० ॥

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः।
पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा ॥१११॥

जो जो भाव स्वामीसे दृष्ट वा युक्त हो अथवा शुभग्रहसे दृष्टयुक्त हो तो उस उस भावकी वृद्धि होती है और जो भाव पापग्रहसे दृष्टयुक्त हो तो उस भावकी हानि होती है। प्रश्नसमयमें और जन्मसमयमें इस प्रकार विचार करना ॥ १११ ॥

अथ चरस्थिरद्विःस्वभावलग्नोपरि प्रश्नावलोकनम् ।

लग्ने चरे न हृतलाभ ऋणास्पदार्थ-
नाशो गदक्षयगमागमबन्धमोक्षाः ।
प्रष्टुर्भवन्ति परचक्रमुपैति शीघ्रं
कल्याणवृद्धिकलहोपशमा भवन्ति ॥ ११२ ॥

प्रश्नसमयमें यदि चरलग्न हो और नष्टप्रश्न हो तो नष्टवस्तु प्राप्त न होवे ऋणप्रश्न हो तो ऋण नहीं प्राप्त होवे, स्थानप्रश्न हो तो स्थान नाश होवे, धनप्रश्न हो तो धन लाभ नहीं होवे, रोगप्रश्न हो तो रोग क्षय होवे, गमनागमन प्रश्न होवे तो जाना आना जल्दी होवे, बन्दीमोचन प्रश्न हो तो बन्दीमोक्ष होवे, जयाजयप्रश्न हो तो शत्रुसेनाका शीघ्र आगमन होगा और पराजय होवेगी, कल्याणप्रश्न हो तो, कल्याणकृत्यकी वृद्धि होवेगी कलह (झगडे) का प्रश्न हो तो कलह शान्ति होवेगी, मृत्युप्रश्न हो तो मृत्यु होवे अथवा मृत्यु हुई कहना ॥ ११२ ॥

लग्ने स्थिरे न मृतनष्टमथास्पदार्थ-
लाभो गमागमगदक्षयबन्धमोक्षा ।
न स्युर्न चैव परचक्रमनर्थनाशः
कल्याणवृद्धिकलहोपशमा भवन्ति ॥ ११३ ॥

प्रश्नसमयमें स्थिर लग्न हो और मृत्युप्रश्न हो तो मृत्यु नहीं होवे, नष्टप्रश्न

हो तो नष्टलाभ न हो, स्थानप्रश्न हो तो स्थानलाभ न हो, लाभप्रश्न हो तो लाभ न हो, गमन प्रश्न हो तो गमन न हो, आगमनप्रश्न हो तो आगमन न हो, रोगक्षय प्रश्न हो तो रोगक्षय न हो, बन्धमोक्षप्रश्न हो तो बन्धमोक्ष न हो, शत्रुसेनागमप्रश्न हो तो शत्रुसेना नहीं आवे, अनर्थनाश प्रश्न हो तो अनर्थ न हो, कल्याणवृद्धि प्रश्न हो तो कल्याणकी वृद्धि न हो, कलहशांति प्रश्न हो तो कलह शांति न हो ॥ ११३ ॥

द्वयंगोदये हृतधनाप्तिरभीष्टवस्तु-
प्राप्तिश्चिरेण गमनागमबन्धमोक्षाः ।
प्रष्टुर्भवन्ति परचक्रमुपेत्य शीघ्रं
रोगी च जीवति कलिः शमते तु भूयः ॥ ११४ ॥

प्रश्नसमय यदि द्विःस्वभाव लग्न हो और नष्टप्रश्न हो तो नष्ट वस्तुकी प्राप्ति होवे, धनलाभ प्रश्न हो तो धनकी प्राप्ति होवे, परन्तु विलंबसे नष्टवस्तु और धनलाभ होवे, गमनागमन प्रश्न हो तो गमनागमन हो, बन्ध मोक्ष प्रश्न हो तो बन्ध मोक्ष विलंबसे होवे, शत्रु प्रश्न हो तो शत्रु सेना विलंबसे आवेगी, रोगी प्रश्न हो तो कुछ विलंबसे रोगी रोगसे मुक्त होके जीवेगा, कलह प्रश्न हो तो शनैः शनैः कलह शान्ति हो जावेगी ॥ ११४ ॥

स्थिरोदये चन्द्रमसि स्थिरस्थिते
द्वयंगे हिमांशौ द्वितनूदयेऽपि च ।
चरोदये शीतकरे चरे तथा
फलं विशेषात्प्रथमोदितं भवेत् ॥ ११५ ॥

उपरोक्त तीन श्लोकोंमें जो प्रश्न फल वर्णन किया है वह कब यथार्थ होगा ? सो कहते हैं कि, स्थिरलग्न और स्थिर राशिका चन्द्रमा, द्विःस्वभाव और द्विःस्वभाव राशिका चन्द्रमा तथा चरलग्न और चर राशिका चन्द्रमा हो तो यथार्थ फल होता है; अन्यथा सत्यासत्य होगा अर्थात् कुछ सत्य होगा, कुछ नहीं होवेगा ॥ ११५ ॥

अथ केवललग्नचन्द्रसूर्यैः सर्वप्रश्नानाह

स्थिरे विलग्ने चरभेऽर्कचन्द्रौ
स्थानस्य भङ्गःस्वजनस्य वैरम् ।
स्थिरेऽर्कलग्ने द्विभगे हिमांशु-
र्हानिर्भवेद्वा यशसो धनस्य ॥ ११६ ॥

स्थिरलग्न हो और चरराशिमें सूर्य चन्द्र स्थित हो तो स्थानका भंग हो, स्वजनोंसे वैर हो. स्थिरराशिमें लग्न सूर्य हो. द्विस्वभावराशिस्थ चन्द्र हो तो यश अथवा धनकी हानि होवे ॥ ११६ ॥

स्थिरलग्ने द्विःस्वभावे शशिसूर्यौ यदा भवेत् ।
जयप्रश्नमवाप्नोति सिद्धिसौख्यं सदा भवेत् ॥ ११७ ॥

स्थिर लग्न हो, द्विःस्वभावराशिस्थित चन्द्र–सूर्य हों और कोई प्रश्न करे तो जय प्राप्त होती है. सिद्धि सुख सदैव होवे है ॥ ११७ ॥

स्थिरलग्ने चरे सूर्ये स्थिरचन्द्रो विधीयते ।
मित्रबन्धुविरोधं च न स्त्रीसौख्यं न चात्मनः ॥ ११८ ॥

प्रश्न समय स्थिरलग्न हो, चरराशिस्थित सूर्य हो और चन्द्रमा स्थिरराशिस्थ हो तो मित्र वन्धुजनोंसे विरोध हो, न स्त्रीको सुख हो न अपनेको सुख हो ॥ ११८ ॥

स्थिरलग्ने द्विभे सूर्ये चरे चन्द्रःप्रवर्तते ।
क्लेशं शरीरचिन्ता च धनहानिः प्रजायते ॥ ११९ ॥

प्रश्न समयमें लग्न स्थिर हो, द्विःस्वभाव राशिपर सूर्य हो और चर राशिका चन्द्रमा हो तो क्लेश हो और शरीरमें चिन्ता हो, धनकी हानि होवे ॥ ११९ ॥

स्थिरलग्ने चरेऽर्के च द्विःस्वभावे निशाकरः ।
सर्वसौख्यं महासिद्धिलाभं चैव धनागमम् ॥ १२० ॥

प्रश्नकालमें लग्न स्थिर हो, चर राशिका सूर्य हो और द्विःस्वभाव राशिका चन्द्रमा हो तो सर्व सुख, महासिद्धि लाभ और धनका आगम होवे ॥ १२० ॥

स्थिरलग्ने स्थिरे चन्द्रे द्विःस्वभावे दिवाकरः ।
राज्यप्राप्तिर्धनप्राप्तिः सर्वसौख्यं जयं यशः ॥ १२१ ॥

प्रश्नकालमें लग्न स्थिर हो, स्थिरराशिका चन्द्रमा और द्विःस्वभाव राशिका सूर्य हो तो राज्य प्राप्ति हो धन लाभ हो, सर्वसुख तथा जय और यश इनका लाभ हो ॥ १२१ ॥

स्थिरलग्ने स्थिरे सूर्ये चरे चन्द्रः प्रवर्तते ।
राजपूजा च लाभस्य सर्वधर्ममहोत्कटम् ॥ १२२ ॥

प्रश्नसमय स्थिरलग्न, स्थिरराशिस्थ सूर्य और चरराशिका चन्द्रमा हो तो राजपूजा और लाभ तथा सर्व धर्मका महाउदय होवे ॥ १२२ ॥

लग्नेन्दुसूर्याः स्थिरराशिसंस्था
धर्मस्य कार्ये द्रविणस्य लाभः ।
चरे रविर्द्व्यंगगलग्नचन्द्रौ
लाभोऽस्ति सूनोरथवा विलासः ॥ १२३ ॥

प्रश्नसमयमें लग्न, चद्रमा और सूर्य स्थिरराशिपर हों तो धर्मके कार्यमें धनका लाभ हो और चरराशिका सूर्य और द्विःस्वभावराशिगत लग्नचन्द्रमा हो तो पुत्रका लाभ हो अथवा आनन्द प्राप्त हो ॥ १२३ ॥

व्द्यङ्गेऽङ्गचन्द्रौ स्थिरभे खरांशु-
रुपद्रवस्तस्य सुतैश्च मर्त्यैः ।
चरेऽर्कचन्द्रौ द्विभगे विलग्ने
लाभो मनःसौख्यकरं सुखं च ॥ १२४ ॥

प्रश्नसमयमें द्विःस्वभावराशिगत लग्न-चन्द्रमा हो, स्थिर राशिमें सूर्य हो तो पुत्र और मनुष्योंकरके उपद्रव हो तथा चरराशिस्थ सूर्य चन्द्रमा हो द्विःस्वभाव राशिलग्न हो तो लाभ हो, मनको सुख करे और सुख हो ॥ १२४ ॥

स्थिरे हिमांशुर्द्विभगेऽङ्गसूर्यौ
नष्टस्य लाभः खलु खेदमोक्षः ।
द्व्यगेऽङ्गगे स्थेर्यहिमांशुसूर्यौ
लाभो भुवो वा स्वजनेन हर्षः ॥ १२५ ॥

प्रश्नसमयमें स्थिरराशिका चन्द्रमा हो. द्विःस्वभाव राशिमें लग्न और सूर्य हो तो नष्टवस्तुका लाभ हो और दुःख दूर हो जावे, तथा द्विःस्वभावराशिस्थित लग्न हो और स्थिरराशिस्थ चन्द्र सूर्य हो तो भूमिलाभ वा स्वजनोंकरके आनन्दलाभ हो ॥ १२५ ॥

द्विःस्वभावे यदा लग्ने चरेऽर्कः स्थिरचन्द्रमाः ।
महालाभं महासौख्यं यशः सौभाग्यमेव च ॥ १२६ ॥

द्विःस्वभावराशिकी लग्न हो, चरराशिका सूर्य और स्थिरराशिगत चन्द्रमा हो तो वडा लाभ, वडा सुख और यश तथा सौभाग्य प्राप्त होवे ॥ १२६ ॥

द्विःस्वभावे च लग्ने वै स्थिरेऽर्कश्चरभे शशी ।
पान्थस्यागमनं शीघ्रं सर्वसौख्यं न संशयः ॥ १२७ ॥

प्रश्नकालमें द्वि:स्वभाव लग्न हो, स्थिरराशिस्थ सूर्य और चरराशिगत चन्द्रमा हो तो पांथका शीघ्र आगमन हो और निस्सन्देह सर्व सुख हो ॥ १२७ ॥

**द्वयंगे रवौ तनुद्वयंगे चरे चैव तु चन्द्रमाः ।**
**राज्यलाभः शुभं कर्म सर्वमेव भविष्यति ॥ १२८ ॥**

प्रश्नसमय द्वि:स्वभावराशिका सूर्य हो, द्वि:स्वभावलग्न हो, चरराशिका चन्द्रमा हो तो राज्यलाभ, शुभकर्म सवही सिद्धिको प्राप्त होवेगा ॥ १२८ ॥

**द्विजातिसंस्था विधुलग्नसूर्याः**
**सुखस्य दुःखस्य समानता स्यात् ।**
**लग्ने चरे सूर्यविजू स्थिरे चेत्**
**कार्यस्य नाशः कलहो महीपात् ॥ १२९ ॥**

द्वि:स्वभावराशिके चन्द्र, लग्न व सूर्य हों तो सुखदु:खकी समानता प्रश्न कालमें कहना । यदि प्रश्न समय लग्न चर हो, सूर्यचंद्र स्थिरराशिमें हों तो कार्यका नाश, राजासे कलह होवे ॥ १२९ ॥

**चरेऽर्कलग्ने स्थिरभस्य चन्द्रः**
**कार्यस्य सिद्धिर्भयकारणाच्च ।**
**चरेऽङ्गचन्द्रौ स्थिरभे खरांशु-**
**र्लाभो धनं धान्यविवर्धनं च ॥ १३० ॥**

प्रश्नसमय चरराशिके सूर्य लग्न हो, स्थिराशिस्थ चंद्रमा हो तो भयके कारणसे कार्यसिद्धि होवे और चरलग्न हो चरराशिका चन्द्रमा हो, स्थिरराशिगत सूर्य हो तो धनका लाभ हो और धान्यकी वृद्धि होवे ॥ १३० ॥

**चरलग्ने चरे चन्द्रे द्विः स्वभावे दिवाकरः ।**
**बन्धनं च महाक्लेशं महादुःखं महाभयम् ॥ १३१ ॥**

प्रश्नकालमें चरलग्न हो, चरराशिमें चन्द्रमा हो, द्वि:स्वभाव राशिका सूर्य हो तो बन्धन महाक्लेश और महादु:ख तथा महाभय होवै ॥ १३१ ॥

**चरलग्ने स्थिरे चन्द्रे भानुर्द्वयंगे यदा भवेत् ।**
**बन्धनं द्रव्यनाशं च चित्तउद्वेगकारकम् ॥ १३२ ॥**

प्रश्नकालमें चरलग्न हो स्थिरराशिस्थ चन्द्र हो और द्वि:स्वभावराशिस्थित सूर्य हो तो बन्धन और धननाश तथा मनमें उद्वेग होवे ॥ १३२ ॥

चरलग्ने स्थिरे सूर्ये द्विः स्वभावे च चन्द्रमाः ।
मध्यमं च विजानीयाच्चिरेण फलमादिशेत् ॥ १३३ ॥

प्रश्नसमयमें चरलग्न हो, स्थिरराशिस्थ सूर्य हो, द्विःस्वभाव राशिका चन्द्रमा हो तो मध्यमफल जानिये, दीर्घकालमें कार्यसिद्धि होवे ॥ १३३ ॥

लग्ने चरे द्व्यंगगते हिमांशौ
चरेऽर्कसंस्थे विविधा च पीडा ।
लग्ने चरे द्व्यंगगचन्द्रसूर्यौ
महान् हि लाभो विविधं च सौख्यम् ॥ १३४ ॥

प्रश्नकालमें चरलग्न हो, द्विःस्वभावराशिका चन्द्रमा हो और चरराशिका सूर्य हो तो विविधप्रकारकी पीडा हो और लग्न चर हो और द्विःस्वभाव राशिमें चन्द्रसूर्य हों तो वडाही लाभ हो और अनेक प्रकारका सुख प्राप्त होवे ॥ १३४ ॥

लग्नेन्दुसूर्याश्चरराशिसंस्थाः
क्षेमं च सौख्यं च यशः प्रवृद्धिः ।
सामान्यतः प्रश्नफलं निरुक्तं
विशेषमग्रे परिभावयामः ॥ १३५ ॥

लग्न, चन्द्र और सूर्य चरराशिमें स्थित हों तो क्षेमसुख और यशकी वृद्धि हो. सामान्य रीतिसे यह प्रश्नफल वर्णन किया, विशेष रीतिसे आगे वर्णन करेंगे ॥ १३५ ॥

अथैकस्मिन् समये बहुजनैः पृष्टे प्रश्ननिर्णयः ।

लग्नादाद्यात्तुरीयात्तु द्वितीया सप्तमात्परा ।
चतुर्थी दशमाच्चिन्ता पंचम्यादि ततो भवेत् ॥ १३६ ॥
ततोऽपि पंचमात्पश्चाद्रंध्राल्लाभाद्यथाक्रमम् ।
ततस्त्रिषट्नवान्त्याच्च पृच्छैवं द्वादश स्मृताः ॥ १३७ ॥
धनादिभावं लग्नं स्यात्तस्मादपि धनादितः ।
शतं वेदाब्धिसहितं प्रश्नानामिह जायते ॥ १३८ ॥
भद्रार्धयामकुलिकव्यतीपाते सवैधृतौ ।
क्रांतिसाम्ये संक्रमणे ग्रहणे चेन्न सिद्धये ॥ १३९ ॥

एकही समयमें वहुत जनोंद्वारा प्रश्न होनेसे प्रश्नका निर्णय कहते हैं–एकही लग्नसे सवके प्रश्नका, उत्तर देनेमें १४४ भेद होते हैं सो लिखते हैं कि–पहला प्रश्न प्रश्नलग्नसे, दूसरा प्रश्न चौथे घरसे, तीसरा प्रश्न सातवें घरसे, चौथा प्रश्न दशवें घरसे, पांचवां प्रश्न पांचवें घरसे कहे ।। १३६ ।। अनन्तर छठा प्रश्न आठवें घरसे, सातवां प्रश्न ग्यारहवें घरसे, आठवां प्रश्न दूसरे घरसे, नवां प्रश्न तीसरे घरसे, दशवां प्रश्न छठे घरसे, ग्यारहवां प्रश्न नवें घरसे और वारहवां प्रश्न बारहवें घरसे देखना. इस प्रकार ये वारह प्रश्न कहे ।। १३७ ।। तेरहवाँ प्रश्न देखना हो तो धन भावको प्रश्नलग्न ठहराय पूर्वोक्त क्रमसे चौवीसवें प्रश्नतक प्रश्न कहे. अनन्तर पचीसवां प्रश्न कहनेमें तीसरे भावको प्रश्नलग्न ठहराय पूर्वोक्त क्रमसे वारह प्रश्न कहे. इसीप्रकार तैतीसवें प्रश्नसे चौथे घरको लग्न ठहराय प्रश्न कहना. इसी क्रमसे बारहवें भावतक लग्न ठहराय कहनेसे १४४ भेद होते हैं अर्थात् एकसौ चवालीस प्रश्न कहे जा सकते हैं ।। १३८ ।। भद्रा, अर्धयाम, व्यतीपात, कुलिक, वैधृति, क्रांतिसाम्यसंक्रांति, ग्रहण इन दुर्योगोंमेंसे जिस दिन एक भी दुर्योग हो उस दिन प्रश्नसिद्धि नहीं होती ।। १३९ ।।

अन्यच्च–मतान्तरम्

प्रश्नो विलग्नात्प्रथमो द्वितीयो
निशाकराद्भास्करतस्तृतीयः ।
जीवाच्चतुर्थः कुटिलर्क्षगाच्च
तथा च शुक्रारबुधेषु सत्त्वात् ।। १४० ।।
सौम्यः शनेः पंचम उक्त एषः
षष्ठोऽर्कजेज्याधिकसत्त्वयोगात् ।
भायाद् द्वितीयादपि भावकेषु
तत्प्रश्नयोगं त्वथवाऽर्क १२ तुल्यात् ।। १४१ ।।

पहला प्रश्न लग्नसे, दूसरा चन्द्रमासे, तीसरा सूर्यसे, चौथा बृहस्पतिसे अथवा कुटिलर्क्षगत ग्रहसे अथवा शुक्र, मंगल, बुध इनमें जो अधिक वली हो उससे ।। १४० ।। पांचवां प्रश्न बुध व शनि इनमें जो अधिक वली हो उससे, छठा प्रश्न शनि व गुरु इनमें जो अधिक वली हो उससे, अथवा पहला प्रश्न लग्नसे, दूसरा प्रश्न दूसरे भावसे, तीसरा प्रश्न तीसरे भावसे, चौथा प्रश्न चौथे भावसे, इसी प्रकार बारह

प्रश्न बारहों भावोंसे फिर तेरहवां प्रश्न दूसरे भावसे, चौदहवां तीसरे भावसे. इसी प्रकार १४४ प्रश्न एकही लग्नसे कहने ।। १४० ।। पूर्वोक्त दोनों श्लोक जो मतांतर कहे हैं, उन्हींके अनुसार दो श्लोक आगे लिखते हैं ।। १४१ ।।

तथाच

लग्ने चन्द्रोऽस्ति यस्मिंस्तदधिदिनमणिर्यत्रतद्यत्र जीवस्तन्नोचोऽस्तंगतो वा न यदिसुरगुर्वक्रिल-श्चेत्तदाद्यम् । वित्काव्यक्ष्मागजानां भवति किल बली यस्त्रयाणां तदीयं दौर्बल्यं यत्र मन्दस्तदपि न च बली शिष्टयोर्यस्तदीयम् ।। १४२ ।। एवं षट् प्रश्नलग्नान्यथ च षडपराण्येवमेषां द्वितीया-न्येतेनैव क्रमेण स्फुटमिदमुदितं द्वादशप्रश्नलग्नम् । एतेषां द्वादशानामपि च धनपदैर्द्वादश द्वादशैवं तार्तीयीकैस्तथाऽन्यैरपि सकलमिदं पूर्णभब्ध्य-ब्धिचन्द्रैः ।। १४३ ।।

बहुप्रश्नसमयमें—पहला प्रश्न तात्कालिक लग्नसे कहे. दूसरा प्रश्न चन्द्र-राशिसे कहे अर्थात् चन्द्रमा जिस राशिपर हो उससे कहे. तीसरा प्रश्न सूर्य जिस राशिपर हो उस राशिको. प्रश्नलग्न कल्पनाकर कहे. चौथा प्रश्न जिस राशिपर बृहस्पति हो उस राशिको प्रश्नलग्न कल्पना कर कहे; परन्तु बृहस्पति नीच वा अस्तंगत न हो. यदि हो तो जिस राशिपर जो ग्रह वक्री हो उस राशिको प्रश्नलग्न-कल्पना करे. पांचवां प्रश्न कहनेमें बुध, शुक्र, मंगल इनमें जो बली हो वह जिस राशिपर स्थित हो उस राशिको प्रश्नलग्न कल्पना करे. छठा प्रश्न कहनेमें शनि जिस राशिपर बली होकर स्थित हो उस राशिको प्रश्नलग्न कल्पना करे परंतु यदि शनि बली न हो तो बुध, शुक्र, मंगल इनमें जो बली होगा उसकी स्थितराशिको प्रश्नलग्न कल्पना करे ऐसा करना होगा ।। १४२ ।। इस प्रकार एकही समय प्रश्नों के छः प्रश्नलग्न कहे, छेसे अधिक प्रश्न होने पर पूर्वोक्त छः प्रश्नोंकी राशियों से दूसरे स्थान क्रमकरके तत्काल लग्नकल्पना करे. इस प्रकार बारह प्रश्नलग्न प्रकट कहे. यदि इन बारह प्रश्नोंसे अधिक प्रश्न होवें तो क्रमसे इन बारह प्रश्न लग्न के दूसरे भावोंकरके बारह प्रश्नलग्न निश्चय करे, फिर तीसरे तीसरे भावोंका बारह

प्रश्नलग्न और निश्चय करे, फिर अन्य चतुर्थ-आदि भावोंकरके बारह बारह प्रश्न लग्न निश्चय करे. ऐसे १४४ प्रश्नोंकरके यह समस्त लग्न पूर्ण है अर्थात् एकही लग्नसे १४४ प्रश्न कहे जा सकते हैं ।। १४३ ।।

अथ मूकप्रश्ने नामधातुमूलजीवचिंताज्ञानम्

प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं सैकयुक वह्निभाजितम् ।
विषमांके जीवचिन्ता समे धातुः प्रकीर्तितः ।।
शून्ये मूलं विजानीयाच्छारदावचनं यथा ।। १४४ ।।

प्रश्नाक्षरसंख्याको दूना कर एक मिलाय तीन का भाग देवे. विषमअंक एक शेष रहे तो जीवचिन्ता दो शेष रहे तो धातुचिन्ता और शून्य शेष रहे तो मूलचिन्ता कहना. यह शारदा का वचन है ।। १४४ ।।

दृष्ट्युपरि चिन्ताज्ञानम्

व्योमदृष्टिर्भवेज्जीवो मूलं भूम्यवलोकनात् ।
समावलोकने धातुर्ज्ञेयं केवलदृष्टितः ।। १४५ ।।

प्रश्नकर्ता आकाशकी ओर दृष्टि करके प्रश्न करे तो जीवचिन्ता, पृथ्वीकी ओर दृष्टि हो तो मूलचिन्ता, सन्मुख दृष्टि होनेसे धातुचिन्ता जानिये. केवल दृष्टिसे यह जीवादिचिन्ता जानिये ।। १४५ ।।

अथ लग्नराश्युपरि चिंताज्ञानम्

द्विपादचिन्ता अजभे नराणां
चतुष्पदानां वृषभे च चिन्ता ।
स्याद्गर्भचिन्ता मिथुनाख्यराशौ
कर्के भवेच्च व्यवहारचिन्ता ।। १४६ ।।

मेषसे द्विपदचिन्ता, वृषभसे चतुष्पदचिन्ता, मिथुनसे गर्भचिन्ता, कर्कसे व्यवहारचिन्ता ।। १४६ ।।

स्याद्राजचिन्ता मृगराजराशौ
स्याद्बलुभार्या प्रमदाख्यराशौ ।
वाणिज्यचिंता तुलनाम्नि राशौ
स्याद्वृश्चिके दुष्टभयादिचिंता ।। १४७ ।।

सिंहसे राजचिन्ता, कन्यासे स्त्रीचिन्ता, तुलासे व्यापारचिन्ता, वृश्चिकसे दुष्टोंकरके भयचिन्ता ।। १४७ ।।

धनस्य चापे मकरे कलेश्च
स्यात्कर्मचिंता घटनाम्नि राशौ ।
स्थानस्य मीने सुधियाऽपि चिंत्या
यो राशिरंगे बलवाँश्च तस्मात् ।। १४८ ।।

धनसे धनकी चिन्ता, मकरसे कलहचिन्ता, कुंभसे कर्मकी चिन्ता, मीनसे स्थानकी चिन्ता होती है । प्रश्न लग्न अथवा प्रश्नसमय चन्द्रराशिमें जो बलवान् हो उसपरसे चिन्ता कहना ।। १४८ ।।

अथ धात्वादीनां निर्णयः ।

मृदंतहेमादिकमत्र धातुं
नृपूर्वसर्पातिमजीवमात्रम् ।
वृक्षादिकक्षांतिकमूलमात्र-
मेवं विभागः खलु धातुपूर्वैः ।। १४९ ।।

सोनेसे मिट्टीपर्यन्त धातु हैं, मनुष्यआदि सर्पपर्यन्त जीव हैं, वृक्षआदिसे तृणपर्यन्त मूल हैं. इस प्रकार धातुआदि पदार्थोंका विभाग है ।। १४९ ।।

अथाङ्गस्पर्शनोपरि चिन्ताज्ञानम्

ऊर्ध्वाङ्गमस्मिन् यदि संस्पृशन् ना
जीवस्य धातोर्निजमध्यभागम्
मूलस्य चाधोऽङ्गमृगाङ्गभाग
नाथौ तु लग्नादिगतौ तदीयाम् ।। १५० ।।

कंठसे शिखा (चोटी) तक ऊपरका भाग है. ऊपरका भाग स्पर्श करता हुआ प्रश्नकर्ता प्रश्न करे तो जीवसंबंधी चिंता जानना, और कंठसे कटिपर्यंत मध्य भाग है. प्रश्नकर्ता मध्यभाग स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो धातुसंबंधी चिन्ता जानना, और कटिसे नीचे अधोभाग है. प्रश्नकर्ता अधोभाग स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो मूलसंबंधी चिंता जानना. तहां किसके संबंधसे यह चिंता होगी सो कहते हैं कि-लग्न और दशमके नवांशस्वामी दोनों ग्रह प्रश्नलग्नसे जिस भावमें स्थित हों उस भावके संबंधसे जीवआदि चिंता कहना ।। १५० ।।

## अथ ग्रहराश्यानुसारेण चिंताज्ञानम्

ग्रहराश्यनुसारेण पशुमानवपादपान् ।
हेमरौप्यादिधातूनां चिन्तां ब्रूयात्स्वबुद्धितः ।। १५१ ।।

ग्रहराशिके अनुसार पशु-मनुष्यआदि जीव, वृक्षादि मूल और सोने-चांदी आदि धातुओंकी चिन्ता अपनी बुद्धिसे कथन करे ।। १५१ ।।

सूर्यास्फुजिद्भूमिजराहुमन्द-
चंद्रज्ञजीवाः पतयो दिशां स्युः ।
मेषो वृषः स्यान्मिथुनः कुलीरः
प्राच्यादिकस्त्रिः परिवर्तनेन ।। १५२ ।।

सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, चंद्र, बुध और गुरु ये क्रमसे पूर्व आदि दिशाओं के स्वामी हैं. जैसे सूर्य पूर्वदिशाका स्वामी. शुक्र आग्नेय दिशाका स्वामी, मंगल दक्षिणका स्वामी, राहु नैर्ऋतका, शनि पश्चिमका, चन्द्र वायव्यका. बुध उत्तरका और गुरु ईशान दिशाका स्वामी है, मेष वृष मिथुन कर्क ये पूर्वादि दिशाचारी राशियाँ तीन आवत्ति करके जानिये. जैसे मेष पूर्वमें, वृष दक्षिणमें, मिथुन पश्चिम में, कर्क उत्तरमें सिंह पूर्वमें, कन्या दक्षिणमें, तुला पश्चिममें, वृश्चिक उत्तरमें, धन पूर्वमें, मकर दक्षिणमें, कुंभ पश्चिममें मीन उत्तरमें जानना ।। १५२ ।।

पुंस्त्रीकृशानुक्षितिवायुनीर-
चरस्थिरद्व्यंगगृहाश्च मेषात् ।
वृषाजसिंहा मकरार्द्धमाद्यं
चापापरार्धं च चतुष्पदाः स्यु ।। १५३ ।।

प्रभूतपादौ बलिकर्कटौ स्तः
कुंभो झषः पादविवर्जितः स्यात् ।
तुले च कन्या मिथुनश्च कुंभो
नराश्च शेषा जलराशयः स्युः ।। १५४ ।।

पुरुष स्त्री और अग्नि पृथ्वी वायु जल और चरस्थिर द्विः-स्वभाव ये संज्ञा मेष आदि राशियोंकी क्रमसे जानना । जैसे मेष पुरुष, वृष स्त्री इत्यादि । मेष अग्नि-तत्त्व, वृष पृथ्वीतत्त्व, मिथुन वायुतत्त्व, कर्कजलतत्त्व इत्यादि । मेष चर, वृष स्थिर,

मिथुन द्विःस्वभाव इत्यादि. और वृष मेष सिंह और मकरका पूर्वार्ध, धनका परार्ध ये चतुष्पद हैं ।। १५३ ।। वृश्चिक कर्क बहुपद हैं, कुंभ मीन अपद राशि हैं, तुला कन्या मिथुन कुंभ नरराशि हैं, शेष जलराशियाँ हैं ।। १५४ ।।

पूर्वोक्त संज्ञासे प्रश्न देखनेकी रीति यह है कि, किसीने कन्यालग्नमें प्रश्न किया तो लग्नमें बुध है, सातवें मीनस्थ गुरु लग्नको पूर्व दृष्टिसे देखता है तो प्रश्न का फल यह है कि धातु और जीवकी चिन्ता है और उत्तरसे किसी स्त्रीनिमित्तसे रत्नसहित सुवर्णलाभकी चिन्ता है, दक्षिण दिशासे किसी शूद्र अथवा पक्षी के निमित्त से प्राप्ति होवेगी ।

शुक्रे हिमांशौ रजतं सुवर्णं
सौम्ये गुरौ रत्नयुतं हिरण्यम् ।
लोहं शनौ सीसकरांगमारे
ताम्रं च मुक्ताफलमुष्णरश्मौ ।। १५५ ।।
शुक्रे सुरेज्ये द्विपदस्य चिंता
चतुष्पदानां रविभौमयोश्च ।
सुपक्षिणां सूर्यसुतेन्दुसून्वोः
शशांकाह्वोश्च सरीसृपाणाम् ।। १५६ ।।

शुक्र–चन्द्र लग्नमें हों अथवा लग्नको पूर्ण दृष्टिसे देखते हों तो चांदी सोनेकी चिंता कहना, बुध गुरुसे रत्नयुक्त सुवर्णकी चिंता कहना शनिसे लोहेकी चिंता, मंगलसे सीसा और रांगेकी चिंता कहना, सूर्यसे तांबे और मोतीकी चिंता कहना. यह धातुचिंता ग्रहयोगसे कही गई ।। १५५ ।। आगे जीवचिन्ता कहते हैं–शुक्र गुरुसे द्विपदचिंता कहना, सूर्यमंगलसे चतुष्पद चिन्ता, शनि बुधसे उत्तम पक्षियोंकी चिन्ता, चन्द्र राहुसे कीटसंबन्धी अपदोंकी चिन्ता कहना ।। १५६ ।।

विप्रस्य चिंता भृगुजे सुरेज्ये
स्यात्क्षत्रियाणां तपने महीजे ।
शूद्रस्य सौम्ये वणिजां शशांके
राहौ निषादस्य शनौऽन्त्यजातेः ।। १५७ ।।

---

१–साधुरयं कवेरुच्छृङ्खलखत्वात् ।।

सूर्ये सुरेज्ये क्षितिजे च पुंसां
स्त्रीणां शशांके भृगुजे च चिन्ता।
नपुंसकानां बुधमन्दयोश्च
चिन्ता कुजे कांचनकारकस्य ।। १५८ ।।

शुक्र–गुरुसे ब्राह्मणसम्बन्धी चिंता कहना, सूर्य-मंगलसे क्षत्रियसम्बन्धी और बुधसे शूद्रसम्बन्धी, तथा चन्द्रसे वैश्यसम्बन्धी और राहुसे निषादसम्बन्धी चिन्ता कहना, शनिसे अन्त्यज (नीच जाति) सम्बन्धी चिंता कहना ।। १५७ ।।

सूर्य, गुरु, मंगल इनसे पुरुषसंबंधी चिंता और चन्द्र शुक्रसे स्त्रीसम्बन्धी चिन्ता, बुध शनिसे नपुंसक संबंधी चिन्ता, मंगलसे सुवर्णकार (सोनार) सम्बन्धी चिन्ता जानना ।। १५८ ।।

ग्रहाणां वर्णविचारः।

रक्तौ कुजार्कौ शशिजो हरित्स्यात्
श्वेतौ सितेन्दू गुरुरेव पीतः।
कृष्णस्तमश्चार्कसुतश्च नीलो
गौरो गुरुः पाटलवर्ण इन्दुः।। १५९ ।।

मंगल–सूर्य रक्तवर्ण, बुध हरित्वर्ण, शुक्र–चन्द्र श्वेतवर्ण, गुरु पीतवर्ण, राहु कृष्णवर्ण शनि नीलवर्ण, गुरु गौरवर्ण और चन्द्रमा रक्तवर्ण जानना।। १५९ ।।

अथ ग्रहोपरि चितायाः कार्यभेदाः।

स्वराशिगेऽर्के नृपराज्यचिन्ता
चन्द्रे च केदारनिखातकारी।
भौमाग्निराज्यारिभयस्य चिन्ता
ज्ञे क्षेत्रकृष्यादिखलायुधानाम् ।। १६० ।।
शुक्रे स्वगेहेऽखिलसौख्यचिन्ता
जीवे सुहृद्धर्मनरेश्वराणाम्।
शनैश्चरे स्वर्क्षगते नरस्य
चिन्ता भवेद्वेश्मर्महीपितॄणाम् ।। १६१ ।।

मूकप्रश्न में सूर्य अपनी राशि सिंहका हो तो राजाको राज्यकी चिन्ता हो,

चन्द्रमा अपनी राशि कर्कका हो तो केदार (धान्यक्षेत्र) अर्थात् खेत और निखात (वापीकूपादि) तथा स्त्रीकर्मकी चिन्ता कहना मंगल अपनी राशिमें मेष वा वृश्चिकका हो तो अग्नि राज्य और शत्रुसे भयकी चिन्ता हो, बुध अपनी राशि मिथुन वा कन्याका हो तो स्थान और खेती आदि तथा दुष्टोंके आयुधसे चिन्ता हो ॥ १६० ॥ शुक्र अपनी राशि वृष या तुलामें हो तो सुखकी चिन्ता हो गुरु, अपनी राशि धन मीनका हो तो मित्र धर्म और राजाकी चिन्ता हो, शनि अपनी राशि मकर कुंभका हो तो मनुष्यको घर, भूमि और पितृजनोंके धनकी चिन्ता हो अथवा पुरुषोंके घरभूमि पर कुछ विवाद हो उसकी चिन्ता हो. यहां प्रश्नलग्नमें अपनी राशिमें स्थित ग्रहके वशसे चिन्ता कहना, बहुत ग्रह अपनी राशिके हों तो जो ग्रह अधिक बली हो उससे मूकप्रश्न कहना. स्वगृही ग्रह बली बहुत हों तो मिश्रचिन्ता कहना ॥ १६१ ॥

## अथ ग्रहभाववशाच्चिंताज्ञानम्

पाखंडकूटानृतमत्र चिन्ता
लग्ने रवौ कार्यबलस्य वित्ते।
विवादचिन्ता सहजे चतुर्थे
सुते सुतानां मनुजस्य चिन्ता ॥ १६२ ॥
कार्यस्य मार्गस्य च षष्ठगेऽर्के
द्यूनेऽङ्गनाया निधने च नावम्।
धर्मेऽन्यदेशस्थनरस्य चिन्ता
मेषूरणे भूपतिकार्यचिन्ता ॥ १६३ ॥
लाभस्थितेऽर्के नृपतेर्धनाशां
चिन्ता व्यये मार्गरिपुप्रचिन्ता।

मूकप्रश्नसमयमें सूर्य लग्नमें हो तो पाखंड कूट और झूठकी चिन्ता हो, दूसरे सूर्य हो तो कार्यबलकी चिन्ता हो तीसरे सूर्य हो तो विवादचिन्ता हो, चौथे सूर्य हो तो भी विवादचिन्ता हो, पांचवे सूर्य हो तो मनुष्यको पुत्रोंकी चिन्ता हो ॥ १६२ ॥ छठे सूर्य हो तो कार्यकी और मार्गकी चिन्ता हो, सातवें सूर्य हो तो स्त्रीकी चिंता हो, आठवें सूर्य हो तो नावकी चिंता हो अथवा मृत्युकी चिंता हो, नवें सूर्य हो तो अन्य देशमें स्थित मनुष्यकी चिंता हो, दशवें सूर्य हो तो राजकार्यकी चिंता हो

॥ १६३ ॥ ग्यारहवें सूर्य हो तो राजासे धन प्राप्त होनेकी आशाकी चिंता हो, बारहवें सूर्य हो तो मार्ग और शत्रुकी चिन्ता हो अथवा खर्चकी चिन्ता और शत्रुके मार्गमें व्ययकी चिंता हो ॥

लग्ने विधौ क्षेत्रधनाशनस्य
वित्तस्थिते वित्तविवादचिन्ता ॥ १६४ ॥
स्याद्वृष्टिचिंता सहजे चतुर्थे
मातुर्गृहस्यात्मजभे सुतानाम् ।
षष्ठे गदार्तस्य मदे युवत्या-
श्चन्द्रेऽष्टमे भोजनवस्तुमृत्योः ॥ १६५ ॥
मार्गप्रयाणस्य तपस्थिते च
कर्मस्थिते क्षेत्रबलादिचिन्ता ।
लाभे शशांके शुचिवस्तुचिन्ता
व्यये स्थिते स्याद् हृतवस्तुलब्धेः ॥ १६६ ॥

मूलप्रश्न समय प्रश्नलग्नमें चन्द्र हो तो क्षेत्र, धन और भोजनकी चिंता कहना, दूसरे चन्द्र हो तो धनकी और विवादकी चिंता हो ॥ १६४ ॥ तीसरे चन्द्रमा हो तो वृष्टिचिंता हो और चौथे चन्द्रमा हो तो माताके घरकी चिन्ता हो, पांचवें चन्द्रमा हो तो पुत्रोंकी चिंता हो छठे चन्द्रमा हो तो रोगपीडाकी चिंता हो, सातवें चन्द्रमा हो तो स्त्रीकी चिंता हो आठवें चन्द्रमा हो तो मनुष्यको भोजनवस्तुकी चिन्ता हो ॥ १६५ ॥ नवें चन्द्रमा हो तो मार्ग चलनेकी चिंता हो दशवें चन्द्रमा हो तो क्षेत्र (स्थान) बलआदिकी चिंता हो, ग्यारहवें चन्द्रमा हो तो पवित्र वस्तु की चिन्ता हो, बारहवें चन्द्रमा हो तो नष्ट वस्तु प्राप्त होनेकी चिन्ता होवे ॥१६६ ॥

कुजे विलग्ने भयवादचिन्ता
धने प्रणाशस्य धनस्य लब्धेः ।
दुश्चिक्यगे भ्रातृसुहृत्कलेश्च
तुर्ये सुहृद्वैरपशुक्रयादेः ॥ १६७ ॥
संक्रुद्धमर्त्यानुनयस्य पुत्रे
षष्ठेऽग्निरूप्यायसकाञ्चनानाम् ।

विनष्टदासार्थहयादि चिन्ता
द्यूनेऽष्टमे मन्दिरमन्दरादेः ॥ १६८ ॥
धर्मेऽध्वचिंता क्षितिजे नभःस्थे
चिंता विवादप्रतिवादिनां च ।
विश्वासबुद्ध्यारिनिपातचिन्ता
लाभे व्ययस्थे रिपुसङ्गरस्य ॥ १६९ ॥

मूकप्रश्न समय लग्नमें मंगल हो तो भयवाद चिंता हो, दूसरे मंगल हो तो नष्टधनके प्राप्त होनेकी चिंता हो, तीसरे मंगल हो तो भाई और मित्रोंसे कलहकी चिंता हो, चौथे मंगल हो तो मित्रोंसे वैर और पशुके खरीदनेकी चिंता हो ॥ १६७ ॥ पांचवें मंगल हो तो क्रोधयुक्त मनुष्यको मनानेकी चिंता हो, छठे मंगल हो तो अग्नि–चांदी–लोहे–सोनेकी चिंता हो, सातवें मंगल हो तो नष्ट हुए दास, धन और घोड़ा आदिकी चिंता हो ॥ १६८ ॥ आठवें मंगल हो तो बडे मन्दिर आदिकी चिंता हो, नवें स्थानमें मंगल हो तो मार्गचिंता हो, दशवें मंगल हो तो प्रतिवादियोंके विवाहकी चिंता हो, ग्यारहवें मंगल हो तो विश्वासबुद्धिवाले शत्रुके निपातकी चिन्ता हो बारहवें मंगल हो तो शत्रुसे संग्रामकी चिंता हो ॥ १६९ ॥

लग्ने बुधे शास्त्रसुखादिचिन्ता
धनस्थिते वस्त्रधनात्मजानाम् ।
दुश्चिक्यसंस्थे स्वसहोदराणां
तुर्येऽम्बुवापीकृषिवाटिकानाम् ॥ १७० ॥
पुत्रस्थिते संततिकार्यचिन्ता
षष्ठेऽर्ककार्यस्य च गुप्तनार्याः ।
द्यूने विहङ्गस्य निजाङ्गनाया–
श्छिद्रे नृपाज्ञाहृतवस्तुनां च ॥ १७१ ॥
धर्मे विहङ्गस्य बुधेऽत्रचिन्ता
कर्मस्थिते शास्त्रकथासुखानाम् ।
लाभेऽर्ककार्यस्य च संशयानां
पाखंडविद्रोहसुखस्य चान्त्ये ॥ १७२ ॥

मूकप्रश्नसमय बुध लग्नमें हो तो शास्त्रसुखआदिकी चिन्ता हो, दूसरे हो तो वस्त्र, धन और पुत्रादिकी चिंता हो तीसरे हो तो अपने भाइयोंकी चिन्ता हो. चौथे बुध हो तो जल, बावडी, खेती और फुलवाडीकी चिन्ता हो ॥ १७० ॥ पांचवें बुध हो तो सन्तानके कार्यकी चिन्ता हो, छठे बुध हो तो धनलाभ और परस्त्रीसे संसर्ग की चिन्ता हो, सातवें बुध हो तो विहंग और अपनी स्त्रीकी चिन्ता हो आठवें बुध हो तो राजाकी आज्ञा और खोई हुई वस्तुकी चिन्ता कहना ॥ १७१ ॥ नवें बुध हो तो विहंगकी चिन्ता हो, दशवें बुध हो तो शास्त्र, कथा और सुखकी चिन्ता हो, ग्यारहवें बुध हो तो कार्यके संशयोंकी चिन्ता हो, बारहवें बुध हो तो पाखंड विद्रोह और सुखकी चिन्ता हो ॥ १७२ ॥

लग्ने गुरौ व्याकुलताप्रणाश-
सौख्यस्य चिन्ता हृदये नरस्य ।
धने धनक्षेमसुखार्थचिन्ता
दुश्चिक्यसंस्थे स्वजनस्वसॄणाम् ॥ १७३ ॥
तुर्ये कुले बंधुविवाहचिन्ता
पुत्रे सुतस्नेहविवाहचिन्ता ।
षष्ठे स्थिते स्त्रीवडवादिगर्भ-
चिन्ता स्मरस्थे ह्यदितार्थसिद्धेः ॥ १७४ ॥
रन्ध्रे स्थिते स्यात्कृपणस्य चिन्ता
धर्मेऽन्यदेशस्य धनाध्वगानाम् ।
खस्थे सुहृद्विग्रहसौख्यचिन्ता-
ऽऽयस्थेऽर्थसौख्यस्य यशो व्ययस्थे ॥ १७५ ॥

मूकप्रश्न समय लग्नमें गुरु हो तो व्याकुलताके प्रणाशकी चिन्ता हो और मनुष्यको सुखसे रहनेकी हृदयमें चिन्ता रहे, दूसरे गुरु हो तो धन, क्षेम, सुख और अर्थसिद्धिकी चिन्ता हो, तीसरे गुरु हो तो स्वजनोंके सम्बन्धियोंकी चिन्ता हो ॥ १७३ ॥ चौथे गुरु हो तो कुलमें बन्धुविवाहकी चिन्ता हो, पांचवें हो तो पुत्र स्नेह और विवाहकी चिन्ता हो, छठे गुरु हो तो स्त्री[1]वडवा आदिके गर्भकी

---

1 घोडी ब्राह्मणी ।

चिन्ता हो, सातवें गुरु हो तो होनेवाले कार्यकी सिद्धि हो ।। १७४ ।। आठवें गुरु हो तो कृपणकी चिन्ता हो, नवें गुरु हो तो अन्य देशसे धन आनेकी चिन्ता हो अथवा मार्गद्वारा धनके प्राप्त होनेकी चिन्ता हो, दशवें गुरु हो तो मित्रसे कलह होने और सुखकी चिन्ता हो, ग्यारहवें हो तो अर्थ-सुखकी चिन्ता हो, बारहवें गुरु हो तो यशकी चिन्ता जानना ।। १७५ ।।

लग्ने सितो नृत्यसुखेष्टगीत–
चिन्ता धने रत्नधनाम्बराणाम् ।
तृतीयसंस्थे निजदारगर्भ–
चिन्ताऽथवा स्व[1]सृसहोदराणाम् ।। १७६ ।।
तुर्ये विवाहस्य सुखस्य चिन्ता
पुत्रेसुहृद्भ्रातृसुतात्मजानाम् ।
षष्ठे च गुर्वीप्रसवस्य चिंता
स्त्रीसङ्गमं स्नेहसुखस्य चास्ते ।। १७७ ।।
शुक्रेऽष्टमस्थे परदारचिन्ता
धर्मे प्रसुप्तस्य सुकर्मणां खे ।
लाभे च नारीझकटस्य चिन्ता
व्ययस्थिते स्वागतवस्तुनां च ।। १७८ ।।

मूकप्रश्न समय लग्नमें शुक्र हो तो नृत्यसुख व इच्छानुसार गीतकी चिंता हो, दूसरे शुक्र हो तो रत्न, धन और वस्त्रकी चिंता हो, तीसरे शुक्र हो तो अपनी स्त्रीके गर्भकी चिंता हो, अथवा सासके भाइयोंकी चिंता हो ।। १७६ ।। चौथे शुक्र हो तो विवाहकी और सुखकी चिंता हो, पांचवें शुक्र हो तो मित्र भाई पुत्रके पुत्रोंकी चिंता हो, छठे शुक्र हो तो गर्भिणी स्त्रीके प्रसवकी चिंता हो, सातवें शुक्र हो तो स्त्रीसंगम और स्नेहसुखकी चिंता हो, ।। १७७ ।। आठवें शुक्र हो तो परस्त्रीकी चिंता हो, नवे शुक्र हो तो प्रसुप्तकी चिंता हो, दशवें शुक्र हो तो सुकर्मकी चिंता हो ग्यारहवें शुक्र हो तो स्त्रीकी विशेष चिंता हो, बारहवें शुक्र हो तो आगत वस्तुओं की चिंता हो ।। १७८ ।।

सौरे विलग्ने गददारचिन्ता
धनस्थिते स्वात्मजपाठनादेः ।

१ 'स्वस्य' 'श्वश्रु' इति च पाठांतरम् ।।

दुश्चिक्यगे भ्रातृविनाशचिन्ता
तुर्ये स्त्रियः स्तन्यविवृद्धिचिन्ता ॥ १७९ ॥
पुत्रे च मर्त्यद्वयकार्यचिन्ता
षष्ठे स्थिते प्राक्तनजारिकायाः ॥
द्यूने च नार्या झकटे च रन्ध्रे
नष्टार्थदासीमृतवस्तुनां च ॥ १८० ॥
धर्मे स्थिते निन्दितदुर्मतीनां
चिन्ता नभःस्थे झकटस्य भीतेः ।
लाभस्थिते कुत्सितकार्यचिन्ता
व्ययस्थिते सूर्यसुतो रिपूणाम् ॥ १८१ ॥

मूकप्रश्न समय लग्नमें शनि हो तो स्त्रीरोगकी चिंता हो, दूसरे शनि हो तो पुत्रोंके पढानेकी चिंता कहना, तीसरे शनि हो तो भाईके विनाशकी चिंता हो, चौथे शनि हो तो स्त्रीके स्तनवृद्धिकी चिंता हो ॥ १७९ ॥ पांचवें शनि हो तो दो मनुष्योंके कार्यकी चिन्ता हो, छठे शनि हो तो पु[1]रानी जारिणी स्त्रीकी चिन्ता हो सातवें शनि हो तो शीघ्र स्त्री प्राप्त होनेकी चिन्ता हो, आठवें शनि हो तो नष्ट धन, दासी और नष्टवस्तुओंकी चिन्ता हो ॥ १८० ॥ नवें शनि हो तो निन्दित दुष्ट बुद्धिवालोंकी चिंता हो, दशवें शनि हो तो शीघ्र भय होनेकी चिंता हो, ग्यारहवें, शनि हो तो कुत्सित कार्यकी चिन्ता हो, बारहवें शनि हो तो शत्रुओंकी चिन्ता जानना ॥ १८१ ॥

शुक्रेत्थशाले च बुधेत्थशाले-
जीवेत्थशाले हिमगौ प्रकुर्यात् ।
सूर्येत्थशाले मदने विशेषात्
स्त्रीणां विवाहस्य भवेत्प्रचिन्ता ॥ १८२ ॥

मूकप्रश्नमें चंद्रमासे शुक्र वा बुध वा गुरुसे इत्थशाल हो अथवा सूर्यसे चंद्रमा का इत्थशाल हो तो जिस भावमें चन्द्रमा हो उस भावकी चिंता जानना. सातवें, घरमें चन्द्रमा हो तो विशेषकरके स्त्रीकी और विवाहकी चिंता कहना ॥ १८२ ॥

---

१ पहलेकी मुंहलगी जारिणी स्त्री.

## अथ द्रेष्काणोपरिचिताज्ञानम्

युग्मे राशौ जीवमूले च धातु-
द्रेष्काणे स्यादोजराशौ विलोमम् ।
ज्ञात्वैवं चेद्द्वित्रियोगा बलाढ्या-
श्चिन्तां ब्रूयाद्द्वित्रिजां योगवीर्यात् ।। १८३ ।।

मूकप्रश्नमें प्रश्नलग्न समराशि हो और पहला द्रेष्काण हो तो जीवचिंता कहना, दूसरा द्रेष्काण हो तो मूलचिंता कहना, तीसरा द्रेष्काण हो तो धातुचिंता कहना और विषम राशि लग्न हो तो इससे विलोममें कहना अर्थात् पहले द्रेष्काणसे धातु, दूसरेसे मूल, तीसरेसे जीवचिंता कहना. इस प्रकार जानकर द्रेष्काणनवांश ग्रह भावयोगवशसे विविधचिंताज्ञान कहा, इनमें बलवान् योगके वशसे चिंता कहे. सब योग बलवान् हों तो सब चिंता कहे ।। १८३ ।।

## अथ केवललग्नोपरि चिंताज्ञानम्

धातुचिन्ता चरे लग्ने मूलचिन्ता स्थिरे भवेत् ।
द्विःस्वभावे जीवचिन्ता एवं चिन्तां विनिर्दिशेत् ।। १८४ ।।

मूकप्रश्न समय चरलग्न हो तो धातुचिंता, स्थिरलग्न हो तो मूलचिंता, द्विःस्वभावलग्न हो तो जीवचिंता इस प्रकार चिंता कहे ।। १८४ ।।

## अथ मुष्टिचिंताज्ञानम्

मेषवृषकुंभमीना ह्रस्वा मिथुनकर्कधनमकराः ।
मध्या युवतितुलालिलेया लग्नगाः स्मृता दीर्घाः ।। १८५ ।।

मुष्टिप्रश्नसमय यदि मेष, वृष, कुंभ, मीन इनमेंका लग्न हो. तो ह्रस्व (छोटी) वस्तु कहिये. और मिथुन, कर्क, धन, मकर इनमेंका लग्न हो तो मध्यम अर्थात् न छोटी, न बडी, अथवा न हलकी, न भारी वस्तु कहिये, तथा कन्या, तुला, वृश्चिक, सिंह इनमेंका लग्न हो तो बडी वस्तु कहिये ।। १८५ ।।

बलिनौ केन्द्रगतौ रविभौमौ धातुकरौ प्रश्ने ।
बुधसौरी मूलकरौ शशिगुरुशुक्राः स्मृता जीवाः ।। १८६ ।।

मुष्टिप्रश्नसमय केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें सूर्य भौम बलवान् हों तो धातु कहिये, बुध शनि बली हों तो मूल और चन्द्र गुरु शुक्र बली हों तो जीव कहिये ।। १८६ ।।

### अथ ग्रहोपरि वर्णकथनम्

रक्तौ सूर्यावनिजौ श्वेतौ शशिभार्गवौ विनिर्दिष्टौ।
हरितः सौम्यो जीवः पीतः कृष्णस्तथा सौरिः ॥ १८७ ॥

लग्नस्थ सूर्यमंगलसे रक्तवर्ण, चन्द्र शुक्र होनेसे श्वेतवर्ण, बुध हो तो हरित वर्ण, गुरु हो तो पीतवर्ण, तथा शनि हो तो कृष्णवर्ण कहना ॥ १८७ ॥ यदि लग्नमें ग्रह न हो तो लग्नपरसे वर्ण कहना ॥

मेषे रक्तं वृषे श्वेतं मिथुने नीलवर्णकम् ।
कर्कटे पांडुरं ज्ञेयं सिंहे धूम्रं प्रकीर्तितम् ॥ १८८ ॥
कपोतवदंगनायां नानावर्णाकृतिस्तुले ।
वृश्चिके पीतवर्णःस्याद्धनलग्ने तथैव च ॥ १८९ ॥
कृष्णश्च मकरे कुंभे मीने लोहितवर्णकः ।

मेष लग्न हो तो रक्तवर्ण, वृष हो तो श्वेतवर्ग, मिथुन हो तो नीलवर्ण, कर्क हो तो पांडुरवर्ण, सिंह हो तो धूम्रवर्ण ॥ १८८ ॥ कन्या हो तो कबूतरके रंगके समान, तुला हो तो अनेक रंग, वृश्चिक हो तो पीतवर्ण, तैसेही धनलग्न हो तो पीत-वर्ण ॥ १८९ ॥ मकर कुंभ हो तो कृष्णवर्ण, मीन हो तो लोहितवर्ण कहना ।

### अथाकारकथनम्

वर्तुलं चन्द्रभौमाभ्यां जीवे दीर्घं प्रकीर्तितम् ॥ १९० ॥
चतुरस्रं बुधे भानौ शुक्रेणावर्तमादिशेत् ।
त्रिकोणं शनिराहुभ्यां वस्तु वाच्यं हि यत्नतः ॥ १९१ ॥

लग्नग्रहवशादाकारं कथयेत् । लग्नग्रहो नास्ति तदा लग्नोपरि बलीग्रह-दृष्टिवशात् ।

चन्द्रमंगलसे वर्तुलाकार वस्तु मुट्ठीमें कहना, गुरुसे दीर्घवस्तु कहना ॥ १९० ॥ बुध सूर्यसे चौकोन, शुक्रसे आवर्त (घुमाव) वाली वस्तु कहना, शनि राहुसे त्रिकोण आकार वस्तु यत्नपूर्वक कहना. प्रश्नलग्नमें जो ग्रह हो उससे आकार कहे. लग्नमें ग्रह न हो तो लग्नपर बलवान् ग्रहकी दृष्टिवशसे मुष्टिवस्तुका आकार कहना ॥ १९१ ॥

तिथिप्रहरसंयुक्तं तारकान्वमिश्रितम् ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषांके वर्णमादिशेत् ॥ १९२ ॥

१ ताम्रो २ मुक्तासदृशः ३ श्वेतरक्तः ४ दूर्वासदृशः
५ मुक्तासदृशः ६ श्यामवर्णम् ७ आरक्तः ८ नीलश्वेतौ
९ नीलरक्तवर्णौ ज्ञात्वा विबुधो वदेद्वर्णम् ।।

मुष्टिप्रश्नसमय तिथि प्रहर नक्षत्र मिलाय नव मिला देवे, नवका भाग देवे; शेष अंकसे मुष्टिगत वर्ण कहना ।। १९२ ।। एक शेषसे ताम्रवर्ण कहना. दो शेष रहे तो मोतीके सदृश, तीन शेष रहे तो श्वेतरक्तवर्ण, चार शेषसे दूर्वाके सदृश वर्ण कहना, पांच शेषसे मोतीके समान रंग, छै शेषसे श्यामवर्ण, सात शेषसे रक्तवर्ण आठ शेषसे नीलश्वेतवर्ण, नव शेपसे नीलरक्तवर्ण जानकर पंडित मुष्टिगत वस्तु का रंग कहे ।। १९३ ।।

अथ सर्वप्रश्नसिद्धेरवधिज्ञानम्

शीघ्रं चरस्थे स्थिरभे स्थिरत्वं
द्व्यंगे चरात् स्पष्टतनौ च चन्द्रे ।
कार्यस्य सिद्ध्यै रिपुरोगनाशे
गमागमाद्ये परचक्रभीते ।। १९४ ।।

प्रश्न समय चरलग्न हो तो कार्यसिद्धि शीघ्र जानना, स्थिर वा द्विःस्वभाव-लग्न हो तो स्थिरतासे कार्यसिद्धि जानना; चरलग्नमें चन्द्रमा हो तो कार्यसिद्धि शत्रु और रोगका नाश, आना-जाना, शत्रुसेनासे भयका नाश शीघ्र होवेगा ।।१९४।।

यस्मिन्नहन्युदयमेष्यति कार्यनाथो
दृक्षत्यथोदयपतिर्युगपच्च कार्यम् ।
कार्येश्वरोदयपयोश्च यदेत्थशालस्त-
स्मिन्दिने खलु भविष्यति कार्यसिद्धिः ।। १९५ ।।

कार्यपतिका जिस दिन उदय हो उस दिन कार्यसिद्धि जानना, अथवा लग्न-पतिका जिस दिन उदय हो उस दिनतक अथवा लग्नपति कार्यपति इन दोनोंका जिस दिन इत्थशाल हो उस दिन कार्यसिद्धि जानिये ।। १९५ ।।

अन्यच्च

लग्नकार्येशमध्यांशास्तन्मितैर्वर्षमासकैः ।
दिनैर्दंडैर्यथायोग्यं योज्यं कार्यस्य सिद्धये ।। १९६ ।।

लग्नपति और कार्येशको स्पष्ट करके उनके मध्यांशप्रमाणसे वर्ष मास दिन घटी प्रमाण कार्यानुसार अवधि बतलाना कि, इतने समयमें कार्यसिद्धि होवेगी ॥ १९६ ॥

तथा च

अयनक्षण दिवसऋतुर्मासं पक्षं समाऽर्कतो ज्ञेयः।
लग्ननवांशपतुल्यकालो लग्नोदितांशसमसंख्यः ॥ १९७ ॥

प्रश्नसमय लग्ननवांश स्वामीके कालप्रमाणसे कार्यसिद्धिकी अवधि कहना, लग्ननवांशेश सूर्य हो तो एक अयन अर्थात् छै मासमें अथवा वर्तमान अयन (दक्षिणा. यन अथवा उत्तरायण) जबतक हो, चंद्र हो तो एकक्षणमें, मंगल हो तो दिन संख्या, बुध हो तो ऋतुसंख्या, गुरु हो तो माससंख्या, शुक्र हो तो पक्षसंख्या, शनि हो तो वर्षसंख्या कार्य सिद्धिकी अवधि कहे. अथवा प्रश्नलग्नके जितने अंश हों इतनी संख्याके अनुसार कार्यका अनुमान समझकर अवधि कहना ॥ १९७ ॥

गणितागत अवधिज्ञानकी अनेक रीतियां हैं, परंतु यहां ग्रन्थ बढ जानेके कारण लिखना उचित नहीं समझा. गणित रीतिसे आये हुए फलको प्राय: लोग अधिक प्रमाण मानते हैं, इस कारण इस ग्रन्थके द्वितीय भागमें विशेष रीतिसे अवधि-ज्ञान लिखेंगे।

इस ग्रन्थमें सबही [1]प्रश्नोंके कहनेकी रीति ग्रह और भावोंके द्वारा दर्शायी है, तो भी इसके द्वितीयभागमें सब प्रश्नोंको नाम सहित विशेष रीतिसे लिखकर प्रकाशित करेंगे।

अथ पुत्रप्राप्तिप्रश्ने

शुक्रो वा चन्द्रमा वाऽपि नेक्षते यदि पंचमम्।
तदा पुत्रस्य पृच्छायां पुत्रो नास्तीति कथ्यते ॥ १९८ ॥

शुक्र वा चन्द्रमा यदि पांचवें स्थानको न देखे तो पुत्रप्रश्नमें पुत्र नहीं होगा, ऐसा कहना ॥ १९८ ॥

लग्नपः पुत्रपश्चापि पुत्रे स्यातासुभौ यदि।
स्थितौ द्रेष्काण एकस्मिन्पुत्रप्राप्तिस्तदा भवेत् ॥ १९९ ॥

---

१–जैसे किसीने लाभ होनेको पूछा तो लाभभावका स्वामी शुभग्रह हो, लाभभावको देखता हो तो लाभ होगा और पापग्रहसे युक्त हो अनिष्ट स्थानमें स्थित हो तो लाभ न हो, इसी प्रकार अन्य प्रश्न कहना।

यदि लग्नेश और पंचमभावेश पुत्रस्थानमें दोनों हों और एकही द्रेष्काणमें हों तो पुत्रकी प्राप्ति होती है ।। १९९ ।।

भृगुचन्द्रौ पंचमस्थौ कन्यकाकारकौ मतौ ।
पश्यन्तौपंचमस्थानं तौ च पुत्रप्रदौ मतौ ।। २०० ।।

शुक्र चन्द्र दोनों पांचवें स्थानमें हों तो कन्या उत्पन्न करनेवाले जानिये और पांचवें स्थानको देखते हों तो पुत्रकारक जानना ।। २०० ।।

लाभस्थाने भार्गवेन्दू पुत्रजन्मप्रदायकौ ।
नीचौ चास्तमितौ तौ च न वै पुत्रप्रदौ मतौ ।। २०१ ।।

ग्यारहवें स्थानमें शुक्र चन्द्र हों तो पुत्रजन्मप्रदायक जानिये, और नीच राशि के अथवा अस्तंगत हों तो पुत्रप्रदायक नहीं जानना ।। २०१ ।।

पुत्रप्रश्ने सूर्यनाडी वहमाना यदा भवेत् ।
तदा च जायते पुत्रः सोमनाड्यां च कन्यका ।। २०२ ।।

पुत्रप्रश्नसमयमें यदि सूर्यनाडी अर्थात् दाहिनी श्वास वह रही हो तो पुत्र होवे और सोमनाडी अर्थात् वाम श्वासका प्रवाह सुखपूर्वक हो तो कन्याका जन्म कहना ।। २०२ ।।

अथास्मिन्वर्षे पुत्रप्राप्तिर्भविष्यति न वेति प्रश्ने

अस्मिन्वर्षेऽपत्यं मम भविता लग्नपंचमाधीशौ ।
भजतो यदीत्थशालं तत्रैवाब्दे भवेन्नूनम् ।। २०३ ।।

इस वर्षमें हमारे सन्तान होगी वा नहीं ? तो लग्न स्वामी और पंचमस्वामी इन दोनोंका इत्थशाल हो तो उस वर्षमें निश्चय सन्तान होगी ऐसा कहना ।। २०३ ।।

यदि वा मिथो गृहगतौ स्यातामेतौ च संततिस्तदपि ।
वाच्या तस्मिन्वर्षे शुभयोगादन्यथा न पुनः ।। २०४ ।।

अथवा लग्नपंचमाधिप दोनों परस्पर एक दूसरेकी राशिमें हों तो भी सन्ततिदायक जानने, उसी वर्षमें संततियोग कहना. शुभग्रहके योगसे अन्यथा अर्थात् इससे विपरीत हो तो सन्तानयोग नहीं जानना ।। २०४ ।।

लग्नस्वामी सुतस्थाने लग्ने च सुतनायकः ।
सुतोद्भवस्य प्रश्नश्च तस्मिन्वर्षे सुतोद्भवः ।। २०५ ।।

लग्नका स्वामी पांचवें घरमें हो और पांचवें स्थानका स्वामी लग्नमें हो तो पुत्रोत्पत्तिप्रश्न होनेसे उस वर्षमें पुत्र उत्पन्न हो, ऐसा कहना ॥ २०५ ॥

चन्द्रो वा भार्गवो वापि सुते लाभे च संस्थितः ।
अपत्यं जायते तस्मिन्वर्षे व्रतजपादिभिः ॥ २०६ ॥

चन्द्र वा शुक्र पांचवें और ग्यारहवें स्थानमें स्थित हों तो उस वर्षमें व्रत-जप आदिसे संतान होवे ॥ २०६ ॥

लाभस्थाने पंचमे च चन्द्रशुक्रौ व्यवस्थितौ ।
परस्परेक्षणौ तस्मिन् वर्षेऽपत्यं प्रजायते ॥ २०७ ॥

ग्यारहवें और पांचवें स्थानमें चन्द्रमा और शुक्र हों और परस्पर एक दूसरे को देखते हों तो उस वर्षमें सन्तान होवे ॥ २०७ ॥

अथ गर्भवत्याः पुत्रो भविष्यति वेति प्रश्ने

द्विशरीरे च विलग्ने शुभयुते पुत्रे द्व्यपत्यगर्भोऽस्याः ।
यदि लग्नपपुत्रपती पुंराशौ तत्सुतो गर्भे ॥ २०८ ॥

'इस गर्भवती स्त्रीके पुत्र होगा वा कन्या ?' इस प्रश्नमें यदि लग्न द्विःस्वभाव हो और शुभग्रहसे युक्त हो तो गर्भमें दो बालक कहिये । यदि लग्नस्वामी और पुत्र भावस्वामी पुरुष राशिमें हो तो गर्भमें पुत्र कहना ॥ २०८ ॥

पूर्वाह्णकाले सवितुः पुरस्थे
चन्द्रस्तदा गर्भगतः सुतः स्यात् ।
चन्द्रेऽपराह्णे रविपृष्ठसंस्थे
कन्या भवेद्गर्भगतांगनायाः ॥ २०९ ॥

पूर्वाह्णकालमें यदि प्रश्न हो और सूर्यराशिसे आगेकी राशिमें चन्द्रमा हो तो गर्भमें पुत्र होता है और यदि अपराह्णमें प्रश्न हो और सूर्य पीछे चन्द्रमा हो तो गर्भवतीके गर्भमें कन्या है ऐसा कहना ॥ २०९ ॥

सुतप्रश्ने सुतस्वामी लग्नस्वामी च संस्थितः ।
चरराशौ तदा पुत्रः स्त्रीराशौ कन्यकोच्यते ॥ २१० ॥
समे लग्ने समांशे वा शनिः कन्याकरो भवेत् ।
विषमे विषमांशे वा लग्ने पुत्रप्रदो सतः ॥ २११ ॥

पुत्र प्रश्नमें पुत्रभावस्वामी और लग्नस्वामी चरराशिमें स्थित हो तो पुत्र और समराशिमें हो तो कन्याका जन्म कहना ॥ २१० ॥ समलग्न और समनवांशमें शनि हो तो कन्याका जन्म हो और विषमलग्न विषम नवांशमें हो तो पुत्र हो ऐसा कहना ॥ २११ ॥

विषमे जीवसूर्यौ च पुत्रजन्मकरौ मतौ ।
समे राशौ स्त्रियं कुर्युः शुक्रचन्द्रधरासुताः ॥ २१२ ॥

जो गुरु–सूर्य विषम राशिमें हो तो पुत्रका जन्म हो सम राशिमें शुक्र–चन्द्र-मंगल हो तो कन्याका जन्म कहना ॥ २१२ ॥

### अथ गर्भस्य गतभोग्यमासज्ञानप्रश्ने

लग्नस्य विगतांशेन गता मासा निरूपिताः ।
भोग्यांशैर्भोग्यमासाश्च गर्भस्य कललादिकम् ॥ २१३ ॥

प्रश्नसमय लग्नके जितने नवांश व्यतीत हुए हो उतनेही महीनेका गर्भ कहना और जितने नवांश भोगनेको शेष रहे हो उतनेही महीना गर्भ पूरा होनेके जानना और गर्भमें प्रथम कलल (मांसपिंड) बनता है अनन्तर महीने महीने क्रमसे गर्भस्थ बालकके सब अंग पूरे होते हैं. सो लग्नके जितने नवांश भोगने हों उतनेही अंग बनानेको शेष रहे हैं ऐसा जानना ॥ २१३ ॥

मासज्ञानस्य पृच्छायां गर्भिण्या भृगुनन्दनः ।
लग्नस्याद्यतमे स्थाने मासानाख्याति तावतः ॥ २१४ ॥

गर्भके मासज्ञानके प्रश्नमें शुक्र प्रश्नलग्नसे जितनी संख्यावाले स्थानमें हो उतने महीने गर्भ स्थित रहे और यदि शुक्र प्रश्नलग्नसे दशवें या बारहवें स्थानमें हो तो पंचमभावसे गणना करे और माससंख्या बतलावे । यथा–

"लग्नात्पुत्राद्भृगुर्यत्र तावन्मासान् गतान् वदेत् ।
यद्वा भुक्तांशका लग्ने गता मासाश्च तत्समाः ॥" २१४ ॥

गर्भस्य जीवनप्रश्ने द्वादशेशः शुभेक्षितः ।
केन्द्रगो वा शुभैर्युक्तः सुखी जीवति जातकः ॥ २१५ ॥

गर्भके जीवनप्रश्नमें बारहवें भावका स्वामी शुभग्रहोंकी दृष्टिसे युक्त हो वा केन्द्रमें हो और शुभग्रहोंसे युक्त हो तो बालक जीता है ॥ २१५ ॥

## अथ प्रसवकालज्ञानम्

द्विषट्कभागे शशभृद्धि यस्मिन्
तस्मिन् प्रसूतिः पुरतो मृगाङ्के ।
उदेति यावान्द्युनवांशकस्य
तावद्गते जन्म दिनोषसोः स्यात् ॥ २१६ ॥

गर्भाधानकालमें चन्द्रमा जिस द्वादशांशमें स्थित हो उस द्वादशांशसे उतनी राशिमें स्थित चन्द्रमामें वालकका जन्म कहना. गर्भाधानलग्नसे जितनी लग्न व्यतीत हुई हों उतने दिन और नवांशके अनुसार महीना जानकर व्यतीत होने पर जन्म होवे ऐसा कहना. आधानलग्नसे समयका निश्चय करना ॥ २१६ ॥

## अ प्रसूतिर्गर्भमोक्षो वा कदा भविष्यतीति प्रश्ने

यस्मिन् गृहे शीतकरे निविष्टे तस्मात् स्वसुच्चे यदि वा स्वमित्रे ।
तथा स्वगेहे च तदा निवेद्यश्चायाति चन्द्रः खलु गर्भमोक्षः ॥२१७॥

प्रश्नलग्नसे जिस राशिमें चन्द्रमा स्थित हो, उस राशिके निकट जो चंद्रमा अपनी उच्चराशि अथवा अपने मित्रकी राशि तथा अपने घरमें जितने दिनोंमें आवे उतनेही दिन गर्भमोक्षके जानिये ॥ २१७ ॥

यस्मिन् विलग्नाधिपपुत्रनाथ- योगो यथा मासि तदैव गर्भः ।
सुतस्य भावे यदि तौ विशेषात् क्रूरेन्दुसंयुक्तविलोकिते वा॥२१८॥

लग्न और पांचवें स्थानका स्वामी जिस महीनेमें जिस दिन एक राशिमें स्थित हों उसी महीनेमें उसी दिन गर्भका मोक्ष होगा अर्थात् उसी दिन गर्भस्थ वालकका जन्म कहना । अथवा यदि दोनों पांचवें घरमें क्रूर चन्द्रमा संयुक्त वा दृष्ट हों तो उस दिन जन्म कहना ॥ २१८ ॥

यावत्संख्ये द्वादशांशे शीतरश्मिर्व्यवस्थितः ।
तत्संख्यो यस्तस्य राशिर्जन्मेन्दौ तद्गतं वदेत् ॥ २१९ ॥

जितनी द्वादशांशसंख्यामें चन्द्रमा स्थित हो उतनी संख्यावाली राशिमें स्थित चन्द्रमा जब हो तब गर्भस्थ वालकका जन्म जानना ॥ २१९ ॥

जातकग्रन्थोंमें कोई योग एक वर्ष वा तीन वर्ष पर्यन्त गर्भस्थित रहकर जन्म होना कथन किया है. ऐसे योग गर्भमें व्यतिक्रम हो जानेको सूचित करते हैं ।

### अथ जन्मनि जाते दिवारात्रिज्ञानप्रश्ने

उदये दिनराशिश्च लग्नस्वामी दिवाग्रहः ।
जन्मप्रश्ने च बालस्य दिवा जन्म विनिर्दिशेत् ।। २२० ।।
दिनलग्ने भवेल्लग्नं लग्नेशो लग्नराशिषु ।
तदा वाच्यं दिने जन्म व्यत्यये व्यत्ययं वदेत् ।। २२१ ।।

गर्भस्थ बालकका जन्म दिनमें होगा वा रात्रिमें होगा ? सो कहते हैं कि; प्रश्नसमय दिनसंज्ञावाली लग्न हो अर्थात् सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ मीन इनमेंसे कोई लग्न हो और लग्नस्वामी दिनसंज्ञक ग्रह (सू. मं. बृ.) हो तो बालकका दिनमें जन्म कहना ।। २२० ।। तथा प्रश्नलग्न दिनसंज्ञावाली हो. लग्नका स्वामी दिनसंज्ञावाली राशिपर स्थित हो तो बालकका दिनमें जन्म कहना और इससे अन्य राशिमें हो अर्थात् रात्रिसंज्ञावाली राशिमें हो तो रात्रिमें बालकका जन्म कहना ।। २२१ ।।

### अथ कतिसंख्यासंततिप्रश्ने

पुत्रप्रश्ने च पुत्रेशो लग्नेशेन समन्वितः ।
यावन्मात्रैर्ग्रहैस्सार्द्धं तावन्तस्तनया मताः ।। २२२ ।।

यदि कोई प्रश्न करे कि–"हमारे कितने संतान होंगे ?" तो पांचवें स्थानका स्वामी लग्नस्वामीके जितने ग्रहोंके साथ हो उतनेही सन्तान होंगे ऐसा कहना ।। २२२ ।।

पुंस्त्रीग्रहाः पुत्रगृहं प्रपश्येल्लग्नाच्च यावन्त इह प्रकर्षात् ।
तत्संख्यकाः स्युस्तनयाश्च कन्याः शुभे सुतस्थे सुतभावतुल्याः।।२२३।।

प्रश्नलग्नसे अथवा जन्मलग्नसे पांचवें स्थानको जितने पुरुषग्रह देखते हों उतने पुत्र और जितने स्त्रीग्रह देखते हों उतनी कन्या उत्पन्न हों ऐसा कहना तथा यदि शुभग्रह पांचवें स्थानमें हो तो पुत्रभावके अंकके तुल्य संतान कहना ।। २२३ ।।

एकः पुत्रो रवेः पुत्रे त्रयः पुत्राश्च मङ्गले ।
बुधे कन्याश्चतस्रश्च सोमे कन्याद्वयं मतम् ।। २२४ ।।
पंच पुत्रा गुरौ वाच्याः षट् कन्याश्चापि भार्गवे ।
सप्त कन्याः शनौ वाच्या ग्रहदृष्टिं विचारयेत् ।। २२५ ।।

जन्मलग्नसे अथवा प्रश्नलग्नसे पांचवें स्थानमें सूर्य हो तो एक पुत्र, मंगल हो तो तीन पुत्र, बुध हो तो चार कन्यायें, चन्द्रमा हो तो दो कन्यामें, गुरु हो पांच पुत्र, शुक्र हो तो छै कन्यायें, शनि हो तो सात कन्यायें कहना. अथवा पांचवें स्थानमें ग्रहोंकी दृष्टि हो तो भी उपरोक्त संख्या कहना ॥ २२४ ॥ २२५ ॥

यदि कोई पृच्छक परीक्षार्थ प्रश्न करे कि–"हमारे कितने पुत्र-कन्या हैं?" तो उसकी सरल रीति आगे लिखते हैं।

दंपत्योः पुत्रसंयुक्तो द्विगुणो रूपसंयुतः ।
पंचघ्नं कन्यकायुक्तं पंचविंशति शोधयेत् ॥
वामे पुत्रं विजानीयाद्दक्षिणे कन्यका स्मृता ॥ २२६ ॥

स्त्रीपुरुष संख्या दो में पुत्रसंख्या जोडकर दूना करे, फिर एक मिलाय पांच गुणा करके कन्यासंख्याको जोडकर पचीस घटावे. जो अंश शेष हो तो बायें अंकसे पुत्रसंख्या और दाहिने अंकसे कन्यासंख्या बतलावै ॥ २२६ ॥

उदाहरण–दो में पुत्रसंख्या ३ मिलाकर ५ को दूना किया तो हुये १०, एक और मिलाया तो ११ हुए. इनको पांच गुणा किया तो ५५ हुए. इनमें कन्यासंख्या २ को मिलानेसे हुए ५७; इनमें २५ घटानेसे रहे ३२. तो बायें ३ दाहिने २ अंक हैं. तो ३ पुत्र २ कन्या कहना. पृच्छकसे सब हिसाब लगवाकर पीछेसे पूंछना कि –"कितने अंक रहे?" तो जितने अंक पृच्छक बतलावै उन अंकोंमें बायें पुत्रसंख्या दाहिने कन्या. संख्या जानिये. इसी प्रकार एक तत्कालमूकप्रश्न पुस्तक छपी है, उसमेंभी ऐसेही क्रमसे पृच्छकके द्वारा पूंछकर मूकप्रश्न बतलाया जा सकता है, परंतु इस प्रकार बतलानेमें धूर्तता है. हास्यके मिष एक उदाहरण यहां हमने लिख दिया है. विदेशी धूर्त लोग भोलेभाले लोगोंको अपने साधकद्वारा इसी रीतिसे भुलावा देते हुए अपना उदरपालन करते हुए विचर रहे हैं; उनसे बुद्धिमान् जनोंको साव-धान रहना चाहिये. एक हिंदी मसल है–"अपने गांवका जोगिया आन गाँवका सिद्ध।" अपने गांवमें चाहे सिद्धही रहता हो, परंतु उसको जोगीके समान जानते हैं और दूसरे गांवका चाहे जोगीही हो परंतु उसको प्रायः जन सिद्ध मानकर अपना पैसा व्यर्थ गंवाते हैं. ग्रन्थोंके अनुसार जो प्रश्नफल कहा जाता है वह सत्य होता है, परन्तु ग्रन्थोंमें परिश्रम करनेकी आवश्यकता है. आजकल हमारे भ्रातृगण (पंडित लोग) ज्योतिष शास्त्रमें परिश्रम न करके विदेशी धूर्तोंकी धूर्ततापर मोहित होकर उनकी सेवा करने लग जाते हैं, विचार करनेकी बात है कि, वराहमिहरजी अपनी

विद्याके बलसे अद्यापि प्रसिद्ध नामवाले आचार्य कहे जाते हैं, जिन्होंने भूत-भविष्यत्-वर्तमान कालकी बातोंको प्रत्यक्ष दर्शाकर बडे बडे महान् महाराजाओंमें प्रतिष्ठा पाई. उनके निर्माण किये हुए बृहज्जातक, बृहत्संहिता आदि ग्रन्थोंको पढकर क्या भूत–भविष्यत्–वर्तमानकालकी बात नहीं कही जा सकती है ? अवश्य कही जा सकती है. परंतु खेद यह है कि, पंडित लोग उन ग्रन्थोंमें परिश्रम और अभ्यास नहीं करते ! हम देखते हैं कि जिस किसीने केवल दो–एक बात बतलानेमें अभ्यास कर लिया तो तुरन्त अपना झोरा झंडा उठाकर विदेशको चल दिया और भोले लोगोंको ठगने लग गया. शोचना चाहिये कि जो विद्वान् होता है वह विद्याके बलसे घरमेंही आनन्द करता है, विदेश जानेकी क्या आवश्यकता है ? यह बात प्रसिद्ध है कि–"गुण दूसरे स्थानमेंही अधिक प्रसिद्ध होता है." परन्तु वे गुणीजन अपने गुणोंमें प्रसिद्ध होकर सर्वत्र ख्यातिके भागी होते हैं और धनिकोंके द्वारा बुलाये जाते हैं, अपना गुण प्रकाश करते हैं. उन गुणियोंको हम भी धन्यवादके साथ प्रणाम करते हैं. परन्तु धूर्तजनोंके जालमें फँसकर अपना धन और समय व्यर्थ नष्ट करनेके अतिरिक्त क्या स्वार्थ सिद्ध हो सकता है ? प्रायः लोग कहने लगते हैं कि–"हमारे पंडितजी कुछ भी नहीं बतला सकते" इसका उत्तर देते हैं कि–'विदेशियोंको तो आप धन देते हैं और अपने पंडितजीको कुछ न देकर अपना स्वार्थ निकालना चाहते हैं.' तो एक तो विना कुछ दिये आप कुछ न पूछा करें और आप प्रतिज्ञा कर लेवें कि–'जो ग्रन्थोंमें परिश्रम कर भूत-भविष्यत्-वर्तमान कालकी बात बतलानेमें शक्तिवाला होगा उसीको हम अपना पंडित और पुरोहित नियत करेंगे.' तो आपकी इस प्रतिज्ञासे बहुत कुछ सुधार हो सकता है और विदेशी धूर्तोंके ठगनेसे बच सकते हैं. इस विषयमें अब हम अधिक लिखना योग्य नहीं समझते. क्योंकि, इस छोटेसे ग्रन्थ में व्याख्यान देनेकी आवश्यकता नहीं ।

हमारे इस लेखसे सज्जन पंडितलोग प्रसन्न होंगे और धूर्त लोग अप्रसन्न होंगे; उनकी अप्रसन्नतासे हमारी कुछ हानि नहीं. क्योंकि, वे अपनी प्रशंसा और दूसरोंकी निन्दा न करें तो परदेशमें उनको क्या लाभ हो ?

जायास्थानस्य भावा न भृगुसुतसृते नो शनि
धर्मभावा नो सूर्य कर्मभावा न बुधहिमकरौ
लाभभावा भवन्ति । विद्यास्थानस्य भावा न

गुरुभवनिजं तातनिस्थानभावा नेन्दुं मृत्युनं
सर्वैर्न च तनयपदं भार्गवं श्वेतरश्मिः ॥ २२७ ॥

जायास्थानका भाव शुक्रके विना नहीं होता है, शनिके विना धर्मभाव नहीं होता है, एवं सूर्यके विना कर्मभाव नहीं होता है, बुध और चन्द्रमाके विना लाभ भाव नहीं होता है, बृहस्पतिके विना विद्यास्थानका भाव नहीं होता है; मंगलके विना पितृस्थानका भाव नहीं होता है, चन्द्रमाके विना सम्पूर्ण भावों सहित मृत्यु-भाव नहीं होता है. भाव यह कि–जो ग्रह जिस स्थानका कहा है, वह ग्रह उस स्थान-को देखता हो अथवा उस स्थानमें हो तो उस भावकी वृद्धि होती है और युक्त दृष्ट न हो तो उस भावकी वृद्धि नहीं होती है ॥ २२७ ॥

## अथ रोगार्तस्य शुभमशुभं नवेति प्रश्ने

लग्नं वैद्यो द्युनं रोगो मध्यं रोगी खमौषधम् ।
तद्बलाबलमादेश्यं सौम्यक्रूरयुतेऽन्यथा ॥ २२८ ॥

प्रश्नलग्नको वैद्य जानना, यदि लग्न बलवान् शुभग्रहोंकी दृष्टिसे युक्त हो, शुभग्रह स्थित हो वा लग्नेशका शुभग्रहसे इत्थशाल हो तो वैद्य रोगीको शुभकारक जानना, सातवां स्थान रोगको जानना. रोगका साध्यासाध्य सातवें स्थानसे विचा-रना. दशमस्थान रोगी और औषधको जानना अर्थात् दशवें घरसे रोगी और औषधी का विचार करना, जो स्थान बलवान् हो शुभयुक्त–दृष्ट हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ जानना ॥ २२८ ॥

दूतस्य प्रश्नाक्षरयोगसंख्या त्रिघ्नाष्टभक्ता प्रवदंति शेषे ।
समे च मृत्युर्विषमे च नैव विलोक्य वैद्यः खलु प्रश्नकाले॥२२९॥

प्रश्नसमयमें दूतके प्रश्नाक्षरोंके योगकी संख्याको त्रिगुणाकर आठका भाग देवे सम सम अंक २ । ४ । ६ । ८ शेष रहनेमें रोगीकी मृत्यु कहना और विषम अंक १ । ३ । ५ । ७ शेष रहनेसे मृत्यु नहीं कहना. इस प्रकार विचार कर वैद्यजन रोगीकी चिकित्सा करे ॥ २२९ ॥

## अथ नष्टवस्तुप्राप्तिर्न वेति प्रश्ने

अन्धकं मन्दनेत्रं च मध्यं चक्षुः सुलोचनम् ।
गणयेद्रोहिणीपूर्वं सप्तावृत्त्या पुनः पुनः ॥ २३० ॥

अन्धर्क्षे नष्टलाभः स्याद्यत्नतो मन्दलोचने ।
श्रवणं मध्यनेत्रे च नैव लभ्यं सुलोचने ।। २३१ ।।
अंधे प्राच्यां गतं वस्तु मध्यनेत्रे तु दक्षिणे ।
पश्चिमे मध्यनेत्रे स्यादथोदीच्यां सुलोचने ।। २३२ ।।

अंधा, मंदनेत्र, मध्यनेत्र, सुलोचन, क्रमसे रोहिणी आदि सात आवृत्ति करके वारवार गणना करे अर्थात् रोहिणी अंधलोचन, मृगशिरा मंदलोचन, आर्दा मध्यलोचन, पुनर्वसु सुलोचन, फिर पुष्य अंधलोचन, श्लेषा मंदलोचन, इत्यादि क्रमसे जाने ।। २३० ।। अन्धनक्षत्रमें नष्ट वस्तु प्राप्त होती है, मन्दनेत्रके खोई वस्तु उपायसे प्राप्त होती है, मध्यनेत्रमें वस्तु खोजानेसे सुननेमें आती है, सुलोचनमें नष्टवस्तुकी प्राप्ति नहीं होती है ।। २३१ ।। अंधमें गतवस्तु पूर्वदिशामें जानना, मन्दलोचनमें दक्षिण, मध्यलोचनमें पश्चिम और सुलोचनमें उत्तरमें नष्ट वस्तु जानना ।। २३२ ।।

## अथ नष्टवस्तु गृहेऽस्ति बहिर्गतं वा ?

स्थितं च तत्र स्थिरभे चरे तथा बहिर्गृहादेव विनिर्गतं तदा ।
द्विदेहराश्याह्वयलग्नगे वा निशांतबाह्येन विनिर्दिशेत्स्वम् ।।२३३।।

स्थिरलग्न हो तो वहीं स्थित है, चरलग्न हो तो घरसे बाहर निकल गयी है, द्विःस्वभावराशिप्रश्न लग्नमें हो तो रातभर घरमें नष्ट वस्तु रही; अब बाहर गई है ।। २३३ ।।

## अथ सभायां चौरज्ञानम्

इष्टो दशघ्नोऽर्कयुतः शरघ्नो बाणेन्दुयुक्तः शरपक्षभक्तः ।
लब्धं त्रिगुण्यं [1]दलितश्च सार्धं सभासु चौरं प्रवदन्ति शीघ्रम्।।२३४।।

इष्टको दशगुणा करे, फिर उसमें १२ जोडे, फिर पांचसे गुणे और १५ जोड देवे. २५ से भाग देवे. जो लब्धांक हों उनको तिगुना कर आधा कर उसका आधायुक्त करे. जो संख्या हो उसके अनुसार सभामें चोरकी संख्या जानना अर्थात् अंक के अनुसार गिनकर सभामें चोरको पकड लेवे. यहां इष्टकाल घटी लेना अथवा

---

१ दलितस्वसार्धम्, इत्यपि पाठः । यह श्लोक पुराना है एक पर्चेपर लिखा मिला था ।

जितने मनुष्य उस सभामें बैठे हों उस समूहकी भी इष्टसंज्ञा है. लब्धांकोंको तिगुना कर आधा कर ड्योढा करे अथवा अपनेसहित यह अर्थ भी हो सकता है. गिननेके निमित्त "उर्ध्वतस्तु सिते पक्षे अधस्तात्तु सितेतरे। शुक्लपक्षमें अपने ऊपरसे अर्थात् दाहिनेसे गिने और कृष्णपक्षमें अपनेसे नीचे अर्थात् बायें ओरसे गिने. मनुष्योंको गोलाकार बिठाकर विचार करके सावधानतापूर्वक सभामें चोरको पकडे ॥ २३४॥ इस श्लोकके अनुसार अभ्यास करे हमारे किये अर्थमें जो सत्य प्रतीत हो उसको प्रकाशित करे, क्योंकि प्राचीन पर्चेमें लिखे अनुसार हमने यथाबुद्धि लिखकर अर्थ लिखा है. हमको इसमें अभ्यास करनेका सावकाश नहीं मिला।

### अथेयं पत्रिका मृतस्य जीवितस्य वेति ज्ञानम्

जन्माङ्करन्ध्रस्थ भप्रश्न लग्नं युतिश्च गुण्याऽष्टमनाथकेन ।
लग्नेशसंस्थर्क्षविभक्तशेषे ह्योजे भवेज्जीवितजन्मपत्री ॥२३५॥

"यह जन्मपत्री मरेकी है वा जीतेकी ?" इसके जाननेकी रीति यह है कि जन्मलग्न, अष्टमस्थान राशि, और प्रश्न लग्न इन तीनोंकी संख्याको जोडकर अष्टम भावके स्वामीकी राशिसंख्यासे गुण देना. अर्थात् जन्मकालीन आठवें भाव का स्वामी जिस राशिमें स्थित हो उस राशिसंख्यासे गुणे और लग्नस्वामी राशिपर हो उस राशिसंख्यासे गुणे और लग्नस्वामी जिस राशिसंख्यासे भाग लेनेसे शेष अंक विषम (१।३।५।७।९।११) हो तो जीवितकी और शेष अंक सम। २।४। ६।८।१०।१२) हो तो मृतकी पत्रिका कहना ॥ २३५॥

### अथेयं पत्रिका स्त्रियः पुरुषस्य वेति ज्ञानम्

सूर्यागुस्थितराश्यङ्कलग्नाङ्केन च योजयेत् ।
त्रिभिर्भक्तावशेषे च खैके नार्याः समे पुमान् ॥ ३३६ ॥

सूर्य व राहु जिस राशिपर हो उस राशिकी अंकसंख्या और लग्नांकसंख्या को मिलावे. तीनका भाग देवे. शेष शून्य वा एक रहे तो स्त्रीकी और सम अंक दो शेषसे पुरुषकी पत्रिका कहना ॥ २३६ ॥

तथा च–विहाय लग्नं विषमर्क्षसंस्थं
सौरोऽपि पुंजन्मकरो विलग्नात् ॥
प्रोक्तग्रहाणामवलोक्य वीर्यं
वाच्या प्रसूतिः पुरुषोऽङ्गना वा ॥ २३७ ॥

जन्मसमय जन्मलग्नको छोड विषमस्थान में शनि स्थित हो और पुरुषग्रह बलवान् हो तो पुरुषकी कुंडली है; इससे विपरीत हो तो स्त्रीकी कुंडली कहना. प्रायः परीक्षार्थ पूछनेपर जन्म समय लग्नसे विचारकर पुत्र वा कन्याका जन्म बतलाना ।। २३७ ।।

### अथ पुंस्त्रीमध्ये प्रथमं कस्य मृत्युरिति ज्ञानम्

दाम्पत्यवर्णं त्रिगुणीकृतं च
मात्राचतुर्गुण्य हृतं च रामम् ।
एके च शून्ये पुरुषो मृतिश्च
द्विशेषके स्त्रीमृतिराहुरार्याः ।। २३८ ।।
पुंस्त्रीनामराश्यैक्यं त्रिभिर्भक्तावशेषकम् ।
शून्यैकेन पुपुम्मृत्युर्द्विशेषे स्त्रीमृतिर्वदेत् ।। २३९ ।।

स्त्रीपुरुषके नामाक्षरसंख्याको तिगुना करे (कोई यहां द्विगुणा करना कहते हैं (और मात्रासंख्याको चौगुना कर तीनका भाग देवे. शेष एक वा शून्य रहे तो पुरुष और दो शेषसे स्त्रीकी मृत्यु होवे ।। २३८ ।। पुरुष-स्त्रीकी जन्मराशिसंख्या को जोडकर तीनका भाग देनेसे शेष शून्य और एक रहे तो पुरुष और दो शेषसे स्त्रीकी मृत्यु प्रथम कहना ।। २३९ ।।

### अथ जन्मसमयाद्विवाहवर्षज्ञानम्

शुक्राच्चन्द्रात्सप्तमे यद्ग्रहं तत्
संख्यातुल्ये वत्सरेऽर्के युते वा ।
स्याद्वुद्वाहो वत्सरे तद्दशान्ते
वंशो रूपं तत्पतेश्चिन्तनीयम् ।। २४० ।।

शुक्रसे वा चन्द्रमासे सातवें जो राशि हो उसकी संख्याके तुल्य वर्षमें अथवा बारह मिलाय उस वर्षसंख्यामें विवाह कहना, उसकी दशाके अन्तमें वंश कहिये; रूप उसके स्वामीके अनुसार विचार करना. अथवा शुक्रसे चन्द्रसे सातवें जो ग्रह हो उसकी संख्याके वर्षमें बारह मिलाय उस संख्यासे विवाह कहना, उस ग्रहकी दशाके अन्तमें वंश कहना, रूप उसकी राशिसे स्वामीसे विचारना ।। २४० ।।

## अथ कस्मिन्वयसि भाग्योदय इति ज्ञानम्

भाग्याधिपश्चेद्यदि केन्द्रसंस्थ-
श्चाद्ये वयस्येवसुखोदयः स्यात् ।
त्रिकोणगः स्वोच्चगतोऽथवा चेत्
मध्ये वयस्येव फलप्रदः स्यात् ॥
भाग्याधिनाथः स्वगृहेंऽशमित्र-
गृहेऽथवा स्याद्वयसोऽन्त्यभागे ॥ २४१ ॥

नवमस्थानका स्वामी यदि केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें स्थित हो तो पहली अवस्थामें भाग्य-सुखका उदय हो और त्रिकोण (५।९) स्थानमें अथवा अपनी; उच्चराशिका हो तो मध्य अवस्थामें भाग्यका उदय हो और जो भाग्य-नाथ अपने घरमें अथवा मित्रके घरमें स्थित हो तो, अन्तिम अवस्थामें भाग्योदय होवे ऐसा कहना ॥ २४१ ॥

## अथ जन्माद्‌गर्भज्ञानम्

तिथौ त्रयं कृतं मासे जन्मर्क्षे दिक्समन्विते ।
लग्ने पञ्चगुणं वारे जन्माद्‌गर्भः समीरितः ॥ २४२ ॥

अब जन्मसे गर्भका ज्ञान कहते हैं ? -जन्मसमयकी तिथिमें तीन, मासमें चार, जन्मनक्षत्रमें दश, लग्नमें पांच, वारमें तीन, संयुक्त करे तो गर्भकी तिथि और मास, नक्षत्र, लग्न, वार निकल आता है; परन्तु यह मान स्थूल है ॥ २४२ ॥

## अथ संक्रांत्या नूतनसंक्रांत्यानयनम्

वारे रूपं तिथौ रुद्रा नाड्यः पञ्चदशैव तु ।
जीर्णपत्रप्रमाणेन संक्रान्तेर्नूतनं भवेत् ॥ २४३ ॥

प्राचीन तिथिपत्रमें संक्रांतिके वारमें १, तिथिमें ११, घडियोंमें १५ युक्त कर देनेसे नूतन संक्रांतिका वार तिथि घटी स्पष्ट जानना, इसी प्रकार सूर्यांश मान करके पुराने पंचांगसे नवीन पंचांगमें तिथि वार नक्षत्र आदि जाना जा सकता है. नक्षत्रमें भी १०, पलोंमें ३१, विपलों ३० जोड देनेसे नक्षत्रादि जानना ॥ २४३ ॥

## अथ जन्माङ्गोपरि शुभाशुभफलज्ञानम्

जन्मलग्नं समारभ्य गतवर्षाणि योजयेत् ।
द्वादशेन हरेद्भागं शेषलग्नाच्छुभाशुभम् ।। २४४ ।।

अब जन्माङ्गपरसे ग्रहोंका भावजनित शुभाशुभ फल लिखते हैं :—जन्मलग्नसे लेकर गतवर्ष युक्त करके स्थापित करे. उसमें १२ का भाग देके शेषको लग्न मानकर भावोंका ग्रहोंके अनुसार शुभ वा अशुभ फल कहना. इस प्रकार प्रतिवर्ष का शुभाशुभ फल कथन करे ।। २४४ ।।

## अथ जन्माङ्गोपरि संवत्सरादिज्ञानम्

जन्मलग्नादिभावैकं युक्त्या सम्प्रच्छयेद्बुधः ।
सूर्यचन्द्रादिकं ज्ञात्वा तस्माद्वर्षादिकं वदेत् ।। २४५ ।।

जिसकी जन्मकुंडली खो गई हो उसकी जन्मपत्री बनानेके अर्थ संवत्सर आदिक ज्ञान जन्माङ्गपरसे कहते हैं—पृच्छकसे युक्तिपूर्वक जन्मलग्न आदि बारहों भावोंमेंसे एक भावभी पूछ लेवे, तो भी जन्मपत्री बन सकती है. अथवा सूर्य-चन्द्र आदि ग्रहोंमेंसे एक ग्रहभी जान लेवे तो जन्मपत्रीके संवत्सर आदिका ज्ञान हो सकता है, उसकी रीति आगे लिखते हैं ।। २४५ ।।

## अथ वर्षज्ञानम्

यस्मिन् राशौ भवेत्सौरिस्तस्मात्सार्द्धे च द्वे समाः ।
शनिर्यावद्वदेद्वर्षं तथेज्याश्रितराशितः ।। २४६ ।।

पृच्छकसे शनिकी राशि युक्तिपूर्वक जाने तो जन्मसमय शनि जिस राशिपर हो उसतक वर्तमान शनि राशिसे दो वर्ष छै मास प्रतिराशि गिने वयोनुमान वर्ष संख्या जाने, तथा बृहस्पतिकी राशिसे एक एक वर्ष बढाकर वयोनुमान जन्म समय गुरुराशितक गिनने पर वर्षसंख्या जाने ।। २४६ ।।

विशेष क्रम इस प्रकार है —

## अथ शनिराशितः संवत्सरज्ञानम्

जन्माङ्गचक्रस्थितमन्दराशेः
सञ्जातसंवत्सरमन्दरातिम् ।

गणेच्च सार्द्धद्वयवर्षभिश्च
गुण्यात्तदंकं गतवत्सरं स्यात् ॥ २४७ ॥

जन्माङ्गचक्रमें शनि जिस राशिका हो, उस राशिके आगेकी राशिसे वर्तमान-संवतकी राशिपर्यन्त गिने, और ढाई वर्षतक शनि एक राशिपर रहता है, इस कारण गणना किये हुये अंकोंको ढाईसे गुणाकर देवे, तो गतवर्षसंख्या होती है. फिर गत वर्षोंको वर्तमानसंवत्में घटानेसे जन्मका संवत् निकल आता है. परंतु यहां अवस्था का अनुमान कर लेवे ठीक तीस वर्ष उपरान्त शनि फिर उसी राशिपर लौट आता है. यदि तीस वर्षोंसे अधिक आयु पृच्छककी हो तो शनिकी द्वितीय आवृत्ति जानना. आई हुई संख्यामें तीस संयुक्त करे. तथा साठिसे अधिक आयु हो तो साठि युक्त करे ॥ २४७ ॥

## अथ गुरुराशिवशात्संवत्सरपरिज्ञानम्

जन्माङ्गजीवस्य तथा भचक्रं
गण्याच्च संवत्सरजीवराशिम् ।
एकैकमासप्रतिवर्षयुक्ते
स्फुटानि वर्षाणि वदेज्जनानाम् ॥ २४८ ॥

अब बृहस्पतिकी राशिसे संवत्सरका ज्ञान होना लिखते हैं. जन्मकुंडली चक्रमें बृहस्पति जिस राशिका हो, उस राशिके आगेकी राशिसे वर्तमान संवत्सर की गुरुराशितक गिने. जो बृहस्पतिके थोडे अंक व्यतीत हुए हों तो जितने वर्ष हों उतनेही महीने जोडे अर्थात् एक एक महीना एक एक वर्ष प्रति युक्त करे और बहुत अंश बीते हों तो कुछ नहीं जोड़े. यदि एक एक वर्ष प्रति एक एक मासके अंक युक्त किये हो तो जोडनेसे जितने अंक हो उनकी गतवर्ष संज्ञा है. उनको वर्तमान संवत् में घटा देवे, घटानेसे जो संवत् हो वही जन्मसंवत् जाने. यहां एक बात स्मरण रहे कि–जो पृच्छककी आयु १२ वर्षसे अधिक हो तो बारह और मिलावे, २४ से अधिक हो तो २४ मिलावे, ३६ से अधिक हो तो ३६ मिलावे इत्यादि रीतिसे मिलावे क्योंकि, १२ वर्ष उपरान्त बृहस्पति फिर उसी राशिपर लौट आता है. १ वर्ष एक राशिपर रहता है और २॥ अंश एक महीनेमें बृहस्पति भोगता है ॥ २४८ ॥

## अथ राहुराशिवशात्संवत्सरपरिज्ञानम्

जन्माङ्गराहोर्गणयेत्तथैव
सञ्जातवर्षस्थभचक्रराहुम् ।
सार्धैकवर्षेण च वर्षसंख्यां
गुण्यात्पुनर्वै दृढवत्सरं स्यात् ॥ २४९ ॥

अब राहुकी राशिसे जन्मसंवत्सरका ज्ञान लिखते हैं; जैसे–शनि व बृहस्पतिकी राशिसे संवत्सरका निकालना कहा गया, वैसेही राहुसे भी निकालना उसकी रीति यह है कि–जन्माङ्गचक्रमें राहु जिस राशिपर हो उस राशिके आगेकी राशिसे वर्तमान संवत्की राशिपर्यन्त उलटे गिने. क्योंकि, राहु सदा उलटा चलता है. गिननेपर जो राशिअंक हो अंकोंको डेढसे गुणाकर देवे. क्योंकि, राहु एक राशि पर डेढ वर्षपर्यन्त रहता है, गुणा करनेपर जो अंक हों उनकी गतवर्षसंज्ञा जानना उन गतवर्षोंको वर्तमान संवत्में घटा देवे तो जन्मसंवत् निकल आता है. यदि अठारह वर्षसे अधिक आयु हो तो अठारह और घटा देना, छत्तीससे अधिक हो तो ३६ घटाना इत्यादि ॥ २४९ ॥

## अथ विक्रमसंवत्सराच्छकादिपरिज्ञानम्

श्रीमद्विक्रमवत्सरेषु च बुधः संशोधयेद्वै यदा
शीघ्रं बाणगुणेन्दु १३५ वर्षनिलयं शाको भवेद्वै
तदा । शाकांकेषु च योजयेद्वसुमुनी ७८ स्याद्वै
सनो ईसवी तद्वै शोधितबाणचन्द्र ५१५ इषुभि-
फस्ली भवेद्वै सनः ॥ २५० ॥

अब विक्रमसंवत्सरसे शाके आदिका ज्ञान लिखते हैं–विक्रमसंवत् में १३५ घटानेसे शालिवाहनके शाकेकी संख्या निकल आती है और शाकेकी संख्याके ७८ जोडनेसे ईसवी सन् निकल आता है, तथा शाकेमें ५१५ घटानेसे फसली सन् निकल आता है ॥ २५० ॥

## अथ मासपरिज्ञानम्

वैशाखे स्थाप्यते मेषो यावद्भानुश्च गण्यते ।
तावन्मासे भवेज्जन्म गर्गस्य वचनं यथा ॥ २५१ ॥

वैशाखमें मेपका सूर्य स्थापित करे और आगे तबतक गिने कि जबतक जन्म का मास होवे, यह यथोचित गर्गाचार्यजीका वचन है । जैसे मेपका सूर्य वैशाखमें, वृषका ज्येष्ठमें, मिथुनका आषाढमें इत्यादि ॥ २५१ ॥

### अथ पक्षज्ञानम्

यस्मिन् राशौ भवेत्सूर्यस्तस्मात्सप्तगृहान्तरे ।
चन्द्रे शुक्लो भवेत्पक्षश्चान्यथा कृष्णपक्षकः ॥ २५२ ॥

जिस राशिका सूर्य हो उस राशिसे सात राशियोंके अंतरमें चन्द्रमा हो तो शुक्लपक्ष न हो तो कृष्णपक्ष जानना ॥ २५२ ॥

### अथ तिथिज्ञानम्

यत्र भानुः स्थितस्तत्र सार्द्धे द्वे गण्यते तिथिः ।
चन्द्रो यावत्समाख्यातं तिथिज्ञानं मनीशिभिः ॥ २५३ ॥

जिस राशिका सूर्य हो उस राशिसे चन्द्रस्थितराशिपर्यन्त गिनकर ढाई गुणा कर देवे तो तिथि निकल आती है ॥ २५३ ॥

मासभाच्चन्द्रभं यावत् गणयेत्तावदेव तु ।
यावन्ति गणनाद्भानि तावंत्यस्तिथयः क्रमात् ॥ २५४ ॥

नक्षत्रज्ञान हो चुका हो तो मासनक्षत्रसे चन्द्रर्क्ष (जन्मनक्षत्र) पर्यन्त गिने जो संख्या हो, पूर्णिमासे गिनकर वही तिथि जानना. मासनक्षत्र यह कि जैसे चैत्रका चित्रा, वैशाखका विशाखा, ज्येष्ठका ज्येष्ठा इत्यादि ॥ २५४ ॥

### अथ वारज्ञानम्

सार्द्धैकघ्नं मधोर्मासं गतपक्षदिनैर्युतम् ।
मुनिभिस्तु हरेद्भागं शेषं वारं नृपाद्भवेत् ॥ २५५ ॥

चैत्रशुक्ल प्रतिपदासे यहां मासकी गणना है. चैत्रआदि गत माससंख्याको डेउढे करे, उसमें शुक्लप्रतिपदासे गततिथिसंख्याको जोड देवे, फिर सातका भाग देवे, जो शेप बचे वही वार राजा (१०) से गणना करनेपर होता है. चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको जो वार होता है वही संवत्सरका राजा होता है ॥ २५५ ॥

मधोस्सितात्सङ्गणितं च मासकं
साद्धैकगुण्यं गतवासरान्वितम् ।
भजेन्नगैश्चापि गणेच्च शेषकं
वर्षेशवारात्स्फुटवासरं भवेत् ॥ २५६ ॥

चैत्रसे जन्ममासपर्यन्त गिने उस संख्याको डेढसे गुणा करे और जन्मवारको मिलावे सातका भाग देवे जो शेष रहे वही वार राजासे गणना करनेपर स्पष्ट होता है ॥ २५६ ॥

## अथ नक्षत्रपरिज्ञानम्

द्विनिघ्नमासस्तिथियुक् विधूनो
भशेषतः स्यादुडुशेषसंख्या ।
मासस्तु शुक्लादित एव बोध्या
नक्षत्रज्ञानं मुनिभिः प्रदिष्टम् ॥ २५७ ॥

अब नक्षत्रज्ञान लिखते हैं—चैत्रशुक्लसे माससंख्याको दूना करे और तिथि मिलाय उसमें १ घटावे और २७ का भाग देवे. शेष संख्याको अश्विनी आदिसे गिन कर नक्षत्र जाने मास तथा तिथिकी गणना शुक्लप्रतिपदासे करे. यह नक्षत्रज्ञान मुनियोंने कहा है ॥ २५७ ॥

कार्तिकाद्द्विगुणं मासं कृत्वा च तिथिसंयुतम् ।
सप्तविंशतिभिः शेषं नक्षत्रं प्रवदेद् बुधः ॥ २५८ ॥

कार्तिक आदिसे वर्तमानमासपर्यन्त गिनकर जो संख्या हो उसको दूना करे और तिथिसंख्या मिलाय सत्ताईसका भाग देवे. शेष अंक प्रमाण अश्विनीसे गणना करके नक्षत्र जाने. यहां तिथिकी गणना सावन मासके अनुसार है ॥ २५८ ॥

## अथ योगपरिज्ञानम्

पुष्यभादर्कनक्षत्रं श्रवणाच्चान्द्रमेव च ।
गणयेत्तद्युतिं कुर्याद्योगः स्यादृक्षशेषतः ॥ २५९ ॥

पुष्यनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रतक गिने, श्रवणनक्षत्रसे चन्द्रनक्षत्रतक गिने. दोनों संख्याओंको मिलाय सत्ताईससे भाग देवे. शेष अंक हो उसके अनुसार विष्कंभ आदिसे गिनकर योग जानना ॥ २५९ ॥

## अथ दिवारात्रिजन्मज्ञानम्

सूर्याक्रान्तस्य भवनाल्लग्नं सप्तगृहान्तरे ।
दिने जन्म वदेत्प्राज्ञ अन्यथा निशिजं भवेत् ॥ २६० ॥

सूर्यात्तनु चेन्ननु षट् गृहान्तरे
भवेत्तदा जन्म दिवा वदेद् बुधः ।
स्यात्सप्तमे यस्य च तस्य सायं
तदन्यथा चेज्जननं निशायाम् ॥ २६१ ॥

अब जन्म दिनमें हुआ वा रात्रिमें ? सो कहते हैं–सूर्यकी राशिसे सात राशि के अन्तर्गत जन्मलग्न हो तो बुद्धिमान् दिनमें जन्म कहे और जो सात राशिसे ऊपर हो तो रात्रिमें जन्म कहे. भावार्थ यह कि–प्रातःसमय जिस राशिका सूर्य होता उससे सातवीं राशिपर अस्त होता है, इसीसे सात राशिके अन्तर्गत जन्म होनेसे दिनमें जन्म होना लिखा है ॥ २६० ॥ तथा–सूर्यकी राशिसे यदि जन्मलग्न छै घरके अन्तर्गत हो तो दिनमें जन्म कहना, सातवें घरमें हो तो संध्यासमय जन्म कहना और सातवीं राशिसे बारहवीं राशितक हो तो रात्रिका जन्म कहना, तात्पर्य यह कि–छै राशिका भोग दिनमें और छै राशिका भोग रात्रिमें मिलाकर बारह राशियों का भोग दिनरात्रिमें होता है अर्थात् जन्मलग्नमें सूर्य हो तो सबेरेका जन्म कहना और जन्म सूर्यसे चौथी लग्नपर हो अथवा जन्मलग्नसे सूर्य दशवें हो तो दोपहरका जन्म कहना. तथा जो सूर्यसे जन्मलग्न दशवें घरमें हो अथवा सूर्य जन्मलग्नसे चौथे हों तो आधीरातका जन्म कहना ॥ २६१ ॥

## अथेष्टघटीज्ञानम्

सूर्यस्याक्रांतभवनात्पंच पंच हि गण्यते ।
लग्नं यावत्समाख्यातं घटीज्ञानं मनीषिभिः ॥ २६२ ॥

अब जन्मसमयकी घटी जाननेका प्रकार लिखते हैं–सूर्य जिस राशिपर स्थित हो, वहांसे जन्मलग्नपर्यन्त पांच पांच घटी प्रमाणसे गणना करना, तो इष्ट घटीमान निकल आता है, ऐसा पंडितोंने कहा है भावार्थ यह कि–बारह राशिमें पांच पांच घटीके प्रमाणसे साठिओंका भोग हो जाता है. परन्तु यह स्थूलमान है, सूर्यके अंशसे लग्नांशपर्यन्त गणना करनेपर कुछ कुछ ठीक आ जाता है, परन्तु ठीक रीति यह है कि जिस राशिपर सूर्य जितने अंशका हो उस राशिके प्रमाणसे भोग्य-

घटी ग्रहण कर जन्मलग्नपर्यंन्त राशियोंके प्रमाणको युक्त करना फिर जितने अंश जन्मलग्नके हों उसके अनुसार घटी निकालकर युक्त करनेसे ठीक ठीक इष्टघटी निकल आती है॥ २६२ ॥

## अथ नष्टकुंडलीनिर्माणविधिः

एक प्राचीन पत्रेपर नीचे लिखा हुआ श्लोक नष्टकुंडली निर्माण विधि का जैसा कुछ उसमें लिखा था उसी अनुसार यहां हम लिखते हैं; यथा–

श्रेणी प्रश्नाक्षराणां तदुदंति* गुणिता नामवर्णैन्न युक्ता दंता ३२ ष्टौ ८ लोकपाला १० रवि १२ धृति १२ मुनिभि ७ विंशति २० मूर्च्छना २१ भिः । संवत्मासाश्च पक्षौ तिथिदिनभयुति-र्लग्नराशीन् क्रमेण लभ्यन्ते पूर्वपूर्वे क्रमपरि-गुणितं जातके नष्टसंज्ञे ॥ २६३ ॥

प्रश्नाक्षराणां श्रेणी पंक्तिः तदुदति गुणिता तदुदतितयो प्रश्नपंत्त्युक्तवर्ण-स्वरयो उदति एकैकसंख्यागुणिता परस्परं गुणनीया इत्यर्थः । तत्संख्याया पिंड इति संज्ञा । ततः नामवर्णेन युक्ताः प्रश्नसंत्त्युक्ता ये वर्णास्तेषां यावत् अक्षरसंख्या तया युक्ता कार्याः पिंडे भवति ततःसंवत्सराद्यानयनम् ॥ २६३ ॥

## अथ सूर्यादीनां ध्रुवांकानाह

रवेस्त्रिशत् ३० शशिनो नृपाः १६ एकविंशः २१ कुजे । सौम्ये दंता ३२ जीवे त्रयोविंशतिः २३ ॥ चतुर्विंशति २४ भृगौ शनौ तत्त्व २५ सुदाहृतम् । राहौ रसाग्नि ३६ संख्या च क्षेपकान् प्रवदाम्यहम् ॥ २६४ ॥ शतं त्रियुक्तं १०३ तरणेः कुजेऽम्बराः ३३ । बुधे खवेदाः ४० सूरपूजिते षट् ६ । भृगौ त्रिपंचा ५३ कंसुतेऽग्नि ३ चैव राहौ नगाद्री ७७ कथिताः क्रमेण ॥ २६५ ॥ ध्रुवांकक्षेपांकयुतेऽत्र पिंडे भक्ताऽर्कभिः शेषमितोऽत्र

* 'तदुदधि' इत्यपि पाठः । उदधिः ४ तत्र श्रेणी प्रश्नाक्षराणि चतुर्भिर्गुण्यानि ।

राशिः ॥ अकारादिस्वरांकाश्च नृप १६ संख्या प्रकीर्तिताः ।
ककारादिचवर्णांका वर्णांकाश्च परिस्फुटाः ॥ ६६ ॥

### अथ संवत्सरादिक्षेपकांकाः

क्षेपश्चाष्टोत्तरशतं १०८ रसबाण ५६ खषट् ६० क्रमात् ।
त्रिसप्त ७३ खवसु ८० षड्युग ४६—मष्ट पंच ५८ मुनीषवः
५७ ॥ संवत्सरादिषु ज्ञेया कथिता मुनिपुंगवैः ॥ २६७ ॥

### अथ स्वर्णांकचक्रम्

| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ऋ | ॠ | ऌ | ॡ | ए | ऐ | ओ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |
| औ | अं | अः | क | ख | ग | घ | ङ | च | छ | ज | झ | ञ |
| १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | ० |
| ट | ठ | ड | ढ | ण | त | थ | द | ध | न | प | फ | ब |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | ० | १ | २ | ३ |
| भ | म | य | र | ल | व | श | ष | स | ह | ० | ० | ० |
| ४ | ५ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ० | ० | ० |

प्रश्नकर्ता पूंछे कि—"हमारी नष्टकुंडली बनाओ." तब पहलेही सावधान हो पृच्छकके मुखसे निकले हुए अक्षरोंको लिख लेवै वही, स्वरवर्गोंकी पंक्तिकी एकैक संख्याको रख परस्पर गुणा करके उसमें नामके वर्ण मिलाय पिंड बनावे. उसमें ३२।८।१०।१२।१८।७।२०।२१ ध्रुवा मिला कर क्षेपकांक जोड भाग लेवे तो संवत्, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, लग्न, राशि ये सब क्रमसे निकल आते हैं।

## अस्योदाहरणम्

जन्मपत्रं क्रियते—अत्र प्रश्नवर्णांकः संख्या ७। ज ८ न० म ५ प १ त ६ र २ क १ र २ य १ त ६ वर्णाः तदैक्यम् ३२। मात्रांकाः अ १ अ १ अ १ अ १ इ ३ अ १ ए ११ तदैक्यम् १९ तदुदतिवर्णमात्राङ्कयोः परस्परं गुणितं जातम्। ६०८ पिंडं भवति। संवत्सरे ध्रुवांकदंता ३२ पिंडे युक्ताः ६४० पुनरष्टोत्तरशतं १०८ क्षेपकांकाः युक्तं ७४८ षष्ट्या ६० भक्तं शेषं २८ प्रभवादिसंवत्सरो ज्ञेयः। मासार्थे ६०८ उत्तर वर्गांक ५३ युक्तं ६६१ ध्रुवांक ८ युक्तं जातं ६६९ पुनः प्रश्नाक्षरे यो वर्गांक योगः स उत्तरवर्गांकः। क्षेपकांक ५६ क्षिपेत् जातं पिंडं ७२५ द्वादशभि १२ भंक्तं शेषं ५ मार्गमासादिगमनया चैत्रो मासः। तत्र मात्रासमें शुक्लपक्षं विषमे कृष्ण-पक्षम्। जन्मतिथ्यर्थे पिंडं ६७८ प्रश्नाक्षरांकाः ७ युक्तं जातं ६६८ लोकपाल १० ध्रुवांकयुक्तं जातं ६७८ क्षेपकांक ६० युक्तं ७३८ पंचदशभिर्भक्तं शेषं ३ प्रतिप-दादिगणनया तृतीया तिथिर्भवति। वारार्थे पिंडं ६६१ प्रश्नाक्षर ७ युक्तं ६६८ पुनर्वर्गांक ५३ युक्तं जातं ७२१ ध्रुवांक ७ युक्तं जातं ७२८ क्षेपकांक ५८ युक्तं जातं ७८६ पिंडं सप्तभिर्भक्ते शेषं २ चन्द्रवासरम्। नक्षत्रार्थे पिंडं ७२१ ध्रुवांक ७ युक्तं जातं ७२८ क्षेपकांक ७३ युतं जातं पिंडं ८०१ सप्तविंशतिभिर्भक्तं शेषं १८ कृत्तिकादितो गणनया जातं पूर्वाषाढभम्। योगार्थे पिंडं ६६१ प्रश्नाक्षर युक्तं ६६८ वर्गांक ५३ योगे ७२१ ध्रुवांक २० युक्तं ७४१ क्षेपकांक ५८ युक्तं ७९९ सप्तविंशतिभिर्भक्तं शेषं १६ सिद्धियोगः। लग्नार्थे पिंडं ६६१ प्रश्नाक्षर ७ युक्तं ६६८ वर्गांक ५३ युक्तं जातं ७२१ ध्रुवांक २१ युक्तं ७४२ क्षेपकांक ५७ युक्तं जातं ७९९ द्वादशभिर्भक्तं शेषं ७ तुलालग्नम्।

## अथ सूर्यादिग्रहानयनम्

अत्र पिंड ६६१ प्रश्नाक्षरं ७ युक्तं जातं ६६८ ध्रुवांक ३० योगे जातं ७९८ क्षेपकांक १० योगे जातं ७०८ द्वादशभिर्भक्तं शेषं १२ मीनराशौ सूर्यः। एवं भौमा-दीनां ध्रुवांकक्षेपकांकयोगे पिंडे द्वादशभिर्भक्ताद्यच्छेषं तत् भौमादीनां राशयः स्थानानि ज्ञातव्यानीति शम्।

आधानजन्मापरिबोधकाले

संपृच्छतो जन्म वदेद्विलग्नात्।

पूर्वापरार्द्धाद्भुवनस्य विद्याद्
भावावुदक् दक्षिणगे प्रसूतिम् ।। २६८ ।।

जिसका गर्भाधानसमय और जन्मसमय ज्ञात न हों तो प्रश्नसमयकी लग्नसे जन्मसमय कहना. सो इस प्रकार कि—यदि प्रश्नलग्नका पूर्वार्द्ध हो अर्थात् प्रश्नलग्न १५ अंशके अन्तर्गत हो तो उत्तरायण सूर्यमें (मकरसंक्रांतिसे मिथुनसंक्रांति पर्यन्त) जन्म कहना और यदि (प्रश्नलग्नका उत्तरार्द्ध हो अर्थात् १५ अंशके उपरान्त ३० अंशतकमें हो तो दक्षिणायन सूर्यमें (कर्कसंक्रांतिसे धनसंक्रांतिपर्यन्तसमय) जन्म कहना ।। २६८ ।।

लग्नत्रिकोणेषु गुरुस्त्रिभागै-
र्विकल्प्य वर्षाणि वयोऽनुमानात् ।
ग्रीष्मोऽर्कलग्ने कथितास्तु शेषै-
रन्यायनर्तावृतुरर्कचारात् ।। २६९ ।।

यदि प्रश्नलग्नका पहला द्रेष्काण हो तो जो लग्न है उसी राशिके बृहस्पतिमें जन्म कहना. और जो दूसरा द्रेष्काण हो तो प्रश्नलग्नसे पांचवीं राशिके बृहस्पतिमें जन्म कहना. और जो तीसरा द्रेष्काण हो तो प्रश्नलग्नसे नवीं राशिके बृहस्पतिमें जन्म कहना. परन्तु यहां अनुमानसे आयुका निश्चय कर लेना. बारह वर्षपर्यन्त बृहस्पति १२ राशियोंको भोग करे हैं सो समझकर गुरुराशिवशसे संवत् निकाल लेवे. कोई पंडित द्वादशांश राशिसे गुरु राशिका निश्चय करते हैं. अब ऋतुज्ञान कहते हैं कि—प्रश्नलग्नमें सूर्य हो तो ग्रीष्मऋतुका जन्म कहना, शेष ऋतुओंका ज्ञान अन्य चन्द्रमादि ग्रहोंद्वारा जानना. सो इस प्रकार कि, शनि लग्नमें हो तो शिशिर ऋतुका जन्म कहना, शुक्र हो तो वसन्तऋतु, मंगल हो तो ग्रीष्मऋतु, चन्द्रमा हो तो वर्षा ऋतु, बुध हो तो शरद्ऋतु, बृहस्पति हो तो हेमन्तऋतु, यदि प्रश्नलग्नमें बहुत ग्रह हों तो बलवान् ग्रहके अनुसार जन्मऋतु कहना. यदि कोई भी ग्रह प्रश्न लग्नमें न हो तो लग्नमें जिसका द्रेष्काण हो उसकी ऋतुमें जन्म कहना. यहां अयन और ऋतुके ज्ञानमें यदि प्रश्नलग्न पूर्वार्द्ध होनेसे उत्तरायणमें जन्म पाया तो और लग्नमें गुरु होनेसे हेमन्तऋतुका जन्म होना संभव नहीं ऐसा विक्षेप जहां आ पडे वहां सौरमानसे ऋतुज्ञान आगे लिखते हैं ।। २६९ ।।

चन्द्रज्ञजीवाः परिवर्तनीयाः
शुक्रारमन्दैरयने विलोमे ।
द्रेष्काणभागे प्रथमे तु पूर्वो
मासोऽनुपाताच्च तिथिर्विकल्प्या ॥ २७० ॥

जहां अयन और ऋतुका भेद हो तो चंद्रमाकी ऋतुमें शुक्रकी ऋतु जानना. बुधकी ऋतुमें मंगलकी ऋतु जानना, गुरुकी ऋतुमें शनिकी ऋतु जानना. यह उत्तरायणकी ऋतु कही. दक्षिणायनमें इस क्रमसे उलटा क्रम जानना. मास जाननेकी रीति यह है कि प्रश्नलग्नका पहला द्रेष्काण हो तो पहला महीना, दूसरा द्रेष्काण हो तो दूसरा महीना, तीसरा द्रेष्काण हो तो उस द्रेष्काणके दो विभाग कर पहले भागसे पहला महीना, दूसरे भागसे दूसरा महीना जानना. सौरमानसे महीना लेना. आगे तिथि निकालनेके अर्थ अनुपात त्रैराशिककी रीति यह है कि १० अंशका १ द्रेष्काण है तो ६०० कला अंशोंकी हुई. इतनी कलाओंमें ३० तिथि होती हैं तो तत्काल द्रेष्काण कलाको ३० से गुणाकर ६०० कलाओंसे भाग लेने पर जन्मतिथि निकल आती है. तिथिके स्थानमें सूर्यका अंश जानना और चन्द्रमान तिथि आगे लिखते हैं ॥ २७० ॥

अत्रापि होरापटवो द्विजेन्द्राः
सूर्यांशतुल्यां तिथिमुद्दिशन्ति ।
रात्रिद्युसंज्ञेषु विलोमजन्म
भागैश्च वेला क्रमशो विकल्प्याः ॥ २७१ ॥

यहां भी होराशास्त्रके जाननेवाले मुनिवर, सूर्यके अंश समान शुक्लादिसे तिथि कहते हैं. दिन वा रात्रिज्ञानके अर्थ तात्कालिक प्रश्नलग्न जो दिनमें बली हो तो विलोमभावसे रात्रिमें जन्म कहना, यदि रात्रि बलीलग्न हो तो दिनमें जन्म कहना. सूर्य स्पष्ट हो तो दिनमान रात्रिमानभी निकल आता है. दिनमें जन्म हो तो दिनमानसे, रात्रिमें जन्म हो तो रात्रिमानसे लग्नके भुक्त पलोंको गुण देवे; अनन्तर अपने देशके लग्नखंडपलोंसे भाग लेनेपर जो लब्ध हो वही जन्मसमय घट्यादि जानना ॥ २७१ ॥

केचिच्छशांकाध्युषितान्नवांशा-
च्छुक्लान्तसंज्ञं कथयन्ति मासम् ।
लग्नत्रिकोणोत्तमवीर्ययुक्तं
संप्रोच्यतेऽङ्गालभनादिभिर्वा ॥ २७२ ॥

कोई आचार्य कहते हैं कि, चन्द्रमाके नवांशसे मास कहना अर्थात् चन्द्रमा जिस नवांशमें हो उसका जो नक्षत्र हो उसमें पूर्णचन्द्रमा जिस मासमें हो उस मास को जन्ममास कहना. जैसे मेषके आठवें नवांशके उपरान्त वृषके सात नवांशके भीतर चन्द्रमा हो तो कार्तिक मासमें जन्म कहना और वृसके सात नवांशके उपरान्त मिथुनके छे नवांशके भीतर मार्गमास तथा मिथुनके छे नवांश उपरान्त कर्कके पाँच नवांशतक पौषमास, कर्कके पांच नवांश उपरान्त सिंहके चार नवांशतक माघ मास, एवं सिंहके चार नवांश उपरान्त कन्याके सात नवांशतक फाल्गुनमास, तथा कन्याके सात नवांश उपरान्त तुलाके छे नवांशतक चैत्रमास, एवं तुलाके छे नवांश उपरान्त वृश्चिकके पांच नवांशके भीतर चन्द्रमा होनेसे वैशाखमास और वृश्चिक के पांच नवांशके उपरान्त धनको चार नवांशतक ज्येष्टमास, एवं धनके चार नवांश के उपरात मकरके तीन नवाशतक आषाढमास, तथा मकरके तीन नवांश उपरान्त कुंभके दो नवांशतक श्रावणमास, एवं कुंभके दो नवांश उपरान्त मीनके पांचनवांश तक भाद्रपदमास, तथा मीनके पांच नवांश उपरान्त मेषके छे नवांशके भीतर चन्द्रमा हो तो आश्विनमास कहना; परंतु यह युक्ति उस (उक्त) नक्षत्रमें पूर्णचन्द्रमाके होनेकी है. जैसे—कृत्तिका रोहिणीका चन्द्रमा नवांशसे हों तो कार्तिकमास और मृगशिरा आर्द्रा हो तो मार्गशिर, पुनर्वसु पुष्य हो तो पौष, श्लेषा मघा हो तो माघ, पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी और हस्त हो तो फाल्गुन, चित्रा स्वाती हों तो चैत्र, विशाखा अनुराधा हो तो वैशाख, ज्येष्ठा और मूल हो तो ज्येष्ठ, तथा पूर्वाषाढा उत्तराषाढा हो तो आषाढ एवं श्रवण धनिष्ठा हो तो श्रावण, तथा शतभिषा पूर्वा-भाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा हो तो भाद्रपदमास, रेवती अश्विनी भरणी हो तो आश्विन मास कहना. इसको शुक्लान्तमास कहते हैं, जैसे—कृत्तिकामें पूर्णिमा होनेसे कार्तिक, मृगशिरामें पूर्णिमा होनेसे मार्गशिर, इत्यादि । प्रश्नसमयमें पंचम नवम भावमें जो राशि वली हो वही चन्द्रराशि जन्मकी कहना, अथवा प्रश्न समय पृच्छकका हाथ जिस अंगमें लगा हो ।

"शीर्षमुखबाहुहृदयोदराणि कटिबस्तिगुह्यसंज्ञानि ।
ऊरू जानू जंघे चरणाविति राशयोऽजाद्याः ॥ १ ॥

इत्यादि रीतिसे जो राशि प्राप्त हो उस राशिके चंद्रमामें जन्म कहना. आदि शब्द से तत्काल, जीवदर्शनसे भी जन्म कहा जाता है. जैसे—भेड बकरीके दर्शनसे मेष, बैल गायके दर्शनसे वृष इत्यादि रीतिसे जातकग्रन्थोक्तलक्षणानुसार जन्म राशिका निश्चय करना ॥ २७२ ॥

यावान् गतः शीतकरो विलग्ना-
चन्द्राद्भवेत्तावति जन्मराशिः ।
मीनोदये मीनयुगं प्रदिष्टं
लक्ष्याहृताकाररुतैश्च चिन्त्यम् ॥ २७३ ॥

प्रश्नलग्नसे चंद्रमा जितने स्थानमें हो उससे उतनेही संख्यावाले स्थानमें जो राशि है उस राशिके चंद्रमामें जन्म कहना. जैसे—मेष लग्नमें प्रश्न है तो मेषसे पंचम राशि; सिंहपर चंद्रमा है तो सिंहसे पंचम धनराशिके चंद्रमामें जन्म कहना, प्रश्न समय मीन लग्न हो तो मीनके चंद्रमामें जन्म कहना, यहां नक्षत्रज्ञानकी अनेक विधियोंमेंसे दो तीन विधि एक हों वही निश्चय करना. जहां विक्षेप पडता हो वहां लक्षण व शकुनसे निश्चय करके कहना. जैसे—बिल्ली आदिके दर्शनसे सिंह. अथवा बिल्ली आदिके शब्द व तदाकार चिह्न देखनेसे सिंहराशि, एवं भेड बकरीसे मेष, ऊंट व घोडीसे धन इत्यादि, जातकग्रंथोंमें राशियोंके स्वरूप आदि लक्षण कहे हैं उसके अनुसार रूपलक्षण मिलनेपर उसकी वही राशि जानना ॥ २७३ ॥

होरानवांशप्रतिमं विलग्नं
लग्नाद्रविर्यावति च दृकाणे ।
तस्माद्भवेत्तावति वा विलग्नं
प्रष्टुः प्रसूताविति शास्त्रमाह ॥ २७४ ॥

प्रश्नसमय लग्नमें जिसका नवांश हो उतनीही संख्यावाली राशि प्रश्नलग्नसे गिनकर जन्मलग्न बतलाना. जैसें–सिंह लग्नके १० अंश २२ कला बीते तो चौंथा नवांश हुआ तो सिंह चौंथा नवांश कर्कका होता है तो कर्क से चौथी राशि तुला जन्म लग्न हुई, तथा प्रश्नलग्नमें वर्तमान द्रेष्काणसे सूर्यका द्रेष्काण जितनी संख्यावाला हो उससे भी उतनीही संख्यावाली राशि जन्म लग्न कहना. जैसें–सिंह प्रश्नलग्न अंश १० कला २२ बीतेपर दूसरा धनका द्रेष्काण है, सूर्य स्पष्ट ८।१८।५०।१० धनका दूसरा द्रेष्काण मेषका हुआ तो प्रश्नलग्न द्रेष्काण धनसे मेषतक पांच संख्या हुई; तो पांचवीं संख्यावाली राशि धनसे गिनने पर मेष हुई तो मेषलग्नमें जन्म कहना ॥ २७४ ॥

ग्रन्थसमाप्तिकालः

द्विसप्तनन्दचन्द्रेऽब्दे माधवस्यासितेतरे ।
नवम्यां गुरुवारे च ग्रन्थोऽयं पूर्णतां गतः ॥ २७५ ॥

श्रीमन्महराजा विक्रमादित्यजीके संवत् १९७२ वैशाख कृष्ण नवमी गुरुवार के दिन यह चमत्कारज्योतिषमें तात्कालिकप्रश्नग्रन्थ पूर्णताको प्राप्त हुआ ॥ २७५ ॥

इतिश्रीमदयोध्यामंडलांतर्वर्तिलक्ष्मीपुरनिवासिज्योतिर्वित् पंडित नारायणप्रसादमिश्रविलिखते चमत्कारज्योतिषग्रन्थे तत्कालिकः प्रश्नः समाप्तः ॥ शुभमस्तुतराम् ॥

---

पुस्तक मिलने का ठिकाना –

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–प्रेस,
कल्याण–बम्बई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–प्रेस,
खेतवाड़ी–बम्बई

लगभग एक शताब्दि से सद्ग्रन्थों का प्रकाशन करते हुए सत्साहित्य प्रसार के कार्य में संलग्न हैं। हमारे यहाँ से वेद, वेदान्त, न्याय, योग, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, व्याकरण, छन्द, कोश, पुराण, काव्य, नाटक, अलंकार, वैद्यक, ज्योतिष मन्त्र, स्तोत्रादि संस्कृत व हिन्दी भाषा के सहस्रों ग्रन्थों का प्रकाशन होता है। शुद्धता स्वच्छता कागजकी उत्तमता, तथा जिल्द की बँधाई सुविख्यात है। विशेष जानकारी के लिये पचीस नये पैसे का टिकट भेजकर वृहत् सूचीपत्र मँगा देखिये।